नं: ११५-घ

प्रक्रिया कौमुदी

उत्तरार्धम्

पत्राणि ८३

नं: ११५-घ
प्रक्रियाकौमुदी
उत्तरार्थम्
पत्राणि ८३
११५

वैदिकप्रक्रिया १८००

गुणायना

[illegible] अस्वेनि बथ्शमा। लिंकिः ति। वेनि नहद्विथम स्थ थ। कुिये। निम्नोचादि स्थपते। मृज्जन्ति। म र्जनि।
। र्क्तिं। मृ ा न। मा स्तुं। मृस ा। मृह्य। म। म जन्तु। मार्जन्तु। मृड्हि। अमार्हे। अमार्डि। मदानिमि [illegible]
[illegible] निघ्न [illegible] । या। त्वा। अमार्जीत्। अमार्जीत। रुविरम्या [illegible] पुपा। गदन्तु [illegible]
[illegible] । मम मार्जै। ववपा। माजणा। वक्ति। [illegible] मा। वा [illegible] । विस्वपा। तिना। वी। वक्त। अवक्तान। व [illegible] । वक्ति।
वद का। ववग। यमति। वक्ती। न्य [illegible] । ववउम।। ववोंगम्या मा। मागम। श्स्यात्। [illegible] । स्व वार्वत। उवा। दा। तुवन्तु। श।

३० उवविघाउवन्का। उनि वा। वन्का। उप्यात॥ तुदिनस्तुविमोयने॥ ॥तुदादिभ्यश्नार्धबांनुके। तुदास्वपुक्त
सम्बन। पन्का। [illegible] नस्य त्लादेश्मार्धवानु कस्पे [illegible] त। नोदिनि। तुदितश्। तुघात नादिनुतुदिनाबा
उदिहिनोदावनि [illegible] म॥ ॥तुदस्वपंचम्यश॥ तुदादेनपृक्तस्य [illegible] स्पइडागमश्स्यात। [illegible] र्धबानुके
[illegible] तीत॥ ॥अडगार्ग्यगालवयो॥ तुदादेपृक्त [illegible] यस्याडागमश्स्यात। गार्ग्यगालवयोर्मतेन। ३
[illegible] न। अनोदात। अतुदिताम। अतुदन। अनोदाश। अनोदश। अतुदिम। इति [illegible] अतुदन। [illegible]
[illegible] पयाये। स्वपिनि। स्वपितश। स्वप्यात। [illegible] पितु। अस्वपात। अस्वपत। अस्वाप्यात। [illegible] ॥३०॥
[illegible] नितमाश। [illegible] श्नुप्याहेश्वश्यात। [illegible] सप्रसारणश्चापिस्तुपिनिन्युयने। [illegible] गा

मिकायमहिन्वइलिहृनेपन्मो। हिलो। विषुषुपतुः॥ दुःषुषुपतुः॥ सुषेप्न्ता। वान्नणः॥ विसुष्वाप। कृतमी
घसावणत्वान्मोध्वेतिके... विषुष्वाप। सुषुप्यात सुषुपा। निकिम। निस्वप्ना। स्वस प्राणने। स्वसिति।
स्वसितः॥ स्वस्यात। स्वसितु। न्यस्वसन। न्यस्वसन... स्वसितम्। अस्वसीत। निश्वास। स्यसिता। स्वसि
घापान॥ अनिते॥ उपसर्गस्थान्निमित्तात्परस्यानितेर्णः स्यात्। प्राणिति। विनानुदृन्नेवेति केविन
घानिति। ...जक्षस नयोः॥ जक्षिति। जक्षितः॥ अदभ्यस्तात्॥ अभ्यस्तात्परस्य झस्य अत्स्यात्। स
ञापवादः॥ जक्षति। जक्षितु। जक्षिता। ह्य। जक्षितामह। जक्षतु। मिजभ्यस्तविदिभ्यश्च। जक्षुः॥ अजक्षः॥ जा
गनिद्राक्षये। जागर्त्ति। जागृतः॥ जाग्रति। जाग्रयाना जागर्त्तु। गुणः॥ हल्ङ्याब्भ्यो दिस्लोपः॥ विसर्गः॥ अजा

गठाचमागतामाञमपस्त्वाम्नुस। जुमिव। जुमिवपनेइकोगुलश्स्पान। चमागतुश। जागयुठ। श्टणुयुनिल्पाद्दो
पासुदोडिन्वान्नगुलश। इद्दो प्रा ज्ञायाम। जायोःविविणलडिल्मु। जागर्नैगुलशस्पाकर्वैच नवुविविणलोड़
मुा चमागनान। उस्वविदेत्याम्वा। जागनामास। ऊजागार। मायोविविणिनियुलठ। ऊजागनतुश। ऊजागनिय
३१ 31 ऊजागनिव। जागनिना। जागयोव॥ दनिझाडुगनो॥ दनिझानि। इद्दनिझस्पा। दनिझानेरानइकानश्स्पान। साबै ३१
पातुकेक्रिनिहलि। दनिडिन्ठ। म्नाम्पस्त्रयोनानठ। म्ब नयोनानोलोपश्स्पान॥ क्रुानिसाबैपानुके। द
निझनि। दनिझियान। दनिझानु। दनिझिनाद्दा। चदनिडुठ। दनिझानेनार्दैवानुकेम्वालोपोवाम्पठ। लुडिवा। म
निण्वुलिल्मुटेवन। म्वदनिझान। चदनिझासान। च नकावम्वाम्पक्वयठ। दनिझामास। दनिझानेनाम्वानिके

निकेविनाददनिद्रौ।दनिद्रिता।दनिद्राता।च्छिदनिद्रासीन्नौ।वका।म्रदाप्नौ।वकास्त्रि।वकास्त्र४।वकामनि।वका
स्मि।दोर्द्विव्लम।सम्पजा।शूनद४।वकाद्वि।मा।प्यकानमतेन।विवेतिमलोप४।वकावि।नियना।म्न४।पद
नेक्षमस्यद४स्यानू।तिपिपने।नत्वम्रे४।म्रवकान।म्रवकाद्॥ ॥सिपिचानोनुर्बी॥पदान्वस्यचानो४मस्य
नु४स्या।धा।सिपि।यन्केद४।म्रवका४।म्रवकान।म्रवकासीन।नकासामास।शासुम्रनुगिसौ।शास्त्रि।शासइ
इदड.हलो४।शा।मउपचायाइकानू४स्यानू।म्रङि.हलादौ।वक्रिलि।शासिवसा।निज४।शिस४।शाहनि।
शास्मि।शिष्यान।शाहो।शास्त्रे।र्हीपने।शाद४।शा४स्यान।शा।मावस्पा।मिद्वचोद्वो।द्वि४।शाद्वि।शासानि।शा
सा।द।म्रशान।म्राशिसा।मा।म्रयासु४म्रशा४म्रशान।म्राशिसौ।सार्न्नौ।शाषीन्पऽ।म्राशिघन।म्रशिघनाम्र

यसौस।शासिता॥ वञ्जिऽव्यक्तायांवाचि॥ इकानउवानणार्थे४स्कोऽस्मियोगेनिकलोकश४वष्ठे।वक्तानि।वक्त
ने।वङ्क्ते।वक्तान।वक्षी।म्रिवक्ष॥ ॥वञ्जिऽःख्याम्॥ वाञ्जिऽन्याईवातुकेख्याऽञ्जोदेशश४स्यान्।ञ्जिल्लादुनपप
दम्।अख्यत।अख्यत।ख्यासपीसश४ख्यासान्सख्यास्व।वर्ज्जेनेनिबेधश४समवाञ्जिस॥ ॥वालिटि॥व
ञ्जिऽःख्यामख्यात्रौवास्य४।लिटिवख्यौ।वख्यो।वक्सौ।चक्लो।ववक्लो।इउख्वुतौ।इदे॥ इड्डुनोर्धेव।ख्यान्या
३२ पतख्यतस्यञ्जस्यवसार्धघातुकस्यइडागमश४स्यात।इडिबो।इडिद्वे।इड्डुहा।इश एरवयी।इहसे॥ ॥इषः ३२
से।इशक्षस्यसा।घेबातुकस्यइस्यात।इशिबो।इड्डुनोर्धेवइस्यइशो।श्यतुकर्जश४।इशिघे।इशिध्व।एषी
सा।यासउपवेशने॥ आस्ते।आस्से।आद्धे।अद्ध्व।इयायेत्याम्।आसा।वक्रो।वसच्च।आछादने।वस्ते।वसिता॥णि

शिवुम्बने। प्रतींस्त्रे। घनिंष्ट्रे। जूसघ्राणिगमीविमोवने। मूसुवे। स्विङ्। ततिनयुणः। स्तुवे। स्तुवावहे। स्तुवामहे
स्वनातिसूनानिवदा। असविद्म। असोस्म॥ ॥शीङ् स्वप्ने। शीङः सार्वधातुके गुणः॥ शीङो गुणः स्यात् सार्वधातु
का। क्ङिति चेत्यस्यापवादः। शेते। शयाते॥ शीङो रुट्॥ शीङ आदेशस्यातो रुट् स्यात्। शेरते। शेषे। शयिध्वे
॥इङ् अध्ययने। अधीते। अधीयाते। अधीयते। अधीषे। अधीयै। अध्यैत॥ ॥विभाषा लुङ्लृङोः॥ इङो
गादेशो वा स्यात्। लुङ्लृङोः परयोः॥ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्॥ गाङादेशात् कुटादिभ्यश्च परेऽञ्णितो ङितः
स्युः। घुमास्थागापाजहातिसां हलि। एषामात ईत् स्यात् हलादौ क्ङिति। अध्यगीष्ट। अ
ध्यैष्ट॥ गाङ्लिटि॥ इङो गाङ् स्याल्लिटि परे। अधिजगे। अध्येता। अध्येष्यते। अध्यगीष्यत। अध्यैष्यत।

दयाऽ दा। द्विदेवनयोः४। दीवोति। व्रतणोकावद्इतियण्। दाच्याते। पावणीयोः दीवीविव्योः४। दाचीविव्योरनक्रस्पलो
प४स्पान। पकाति इवर्णीविपरे। दीवीन। दीवाविवा टा। मिति नगुण४। दाव्यै। व्रदावाता। व्रदाविसा। दाव्यीवके
१ववविवाऽवेतीं नात्रुल्पे॥ द्विपञ्चपातो॥ द्विद्वि। व्रदेदृ। द्विपरव। द्विपोलङोकेर्गुसवास्पानृ। व्यादिपुष्प
३३ द्विपन। व्यादिसा। व्यद्धिक्नन। व्यादिजन। दुहप्रपूरणे॥ दादवैद। दाम्बि। वाक्ति। दुम्बि। चुन्द्र। घुम्बौ। दोहे। व्यघोक ३३
व्यष्टुनन। व्यष्टुक्नन। जुम्बा। डुहे। नेकसस्पवा। जुका। व्यदुग्व। कसस्पावि। व्यचुक्नानाम। चुक्नी। सा। पवेडुहडपव
३४ पाचाति। दाम्बि। मविक्नन। लिहवाखादने। ढन्वघन्वा। दिलिढि। म्पादि। दुहदन। डुर्णुमव्याकादने। डुर्णोतावि
नापा। डुर्णोतेवो। हृढि। स्पान। हालिपिति। सावि। वातुके। डुर्णोनि। डुर्णोति। डुर्णुनश। गुणोऽपक्वो। डुर्णोतेनय

केपितिहासिसार्धधातुकेगुणश्स्यात्। हृद्धेनपवादश्। अर्णोति। अर्णोः॥ ऊर्णोतेर्विभाषा। ऊर्णोतेः सिविपरेऊ
र्णोतेर्वाह्निश्स्यात्। पनस्मैपदेषु। अर्णाविन। और्णवीत्। विभाषोर्णोः॥ ऊर्णोतेर्ङिद्वा ह्रिषन्यपोवाङित्स्यात्। ऊर्णु
वान। और्णाविष्ट। अर्णुविष्ट। ऊर्णोतेना म्निवैषेषोव न्कप्य॥ स्वगादेर्द्विनायस्य॥ स्वगादेर्हानोर्द्वितायावयवस्ये
कावोद्देषश्॥ न नद्राश्संयोगादयश्। द्वितायस्यैकावोध्वयवाश्संयोगादयोन द्विनाद्विर्नी व्यन्वे। ऊर्णुनाव। ऊर्णु
नुविष। ऊर्णुनविवंष। ऊर्णुविना। ऊर्णीविना। ष्णुमस्नुनो॥ नुनुमुरान्यम्श्सार्धधातुकेवी। प्रस्नश्पिनोहल्॥
सार्धधातुकस्यइडागमश्स्यात्। वा। स्नवीति। स्नौति। स्नमिसौति। न्पस्नावान। न्पस्नावान। स्नस्नोस्न। नुनाथ। नु
मुव। स्नोपास। ऊनुशद्दे। जविना। नुशद्दे। नौति। नवीति। षनावीन। नविना। इद्देन्येके। णुस्नुनो॥ णुनुक्विति पाव

सवर्णादि द्वावेति कावेत्त। नौनि। नवीति। नाविन। एकापमनेवेट॥ बूञ व्यक्तायांवाचि॥ ब्रुवंइट। ब्रुवश्पञ्चस्याति
नोहलश्सार्द्धधातुकेस्यउ आगमश्स्यान्॥ ब्रवीति। ब्रुवश्पिवानामादितञ्त्रहो ब्रुवश्॥ ब्रुवोलडादिपिवानाम्। पञ्च
स्मे परानीनलादिनौपिवादेशावास्तुश्॥ ब्रुवश्राहा देशश्चवाञ्चा हो। ञ्चाहतुश्भ्वा दुश्॥ आल्यश्। आदोहस्य धश्चर्य
वा। हलिविर्लम। ब्रुवइडिनि आपिञ्चहो ब्रुवश्वन्ना। चा। न्थ। आहस्तुश्। पञ्जेखुगमम॥ ब्रुवोवचिश्। ब्रुवोवच्यादेशश्स्या
३॥ न्। आर्द्धधातुके। इकारहत। अवोचत। अवोचत। उवाच। ऊचे॥ ५॥ ॥इत्यदादिप्रक्रिया॥ ५॥ ॥हुदानादनयोश्॥ जु ३६
होत्यादिभ्यश्लुश्॥ जुहोत्यादिभ्यपरस्यशपश्लुश्स्यात्। लुकोऽपवादश्॥ श्लौ॥ श्लौमन्त्यनन्त्यासम्भवान्त्यवयवस्य
कावोद्धस्वश्॥ जुहोति। जुहुतश्घ्यदम्यस्ता श्। हुश्नुवोर्सार्वधातुके यणादि। जुह्वति। जुहुधि। जुहवाव। जुह्वन्नेति गुणश्। अ

गुरुवुठ्यत्वे सेजीत्वा। लीकाम्टुवीरलुवत्व। पप्योलि घामवास्यान। ज्ञानिरला। विवकार्यत्व। गुरुवामास। गुरु
वाठवरुः। गुरुवनुठ। जिमानये। विमेनि। मियाः। ज्ञतरस्याम। मियइकानोन्नादेशो वास्पान। सार्द्धयानुके
क्रितिहालि। विमितठ। विमीतठ। विम्यतिति। विनायान। विमियान। त्ववि। नयुठ। विनमामूास। विनाय। झी
ऊजायामा। जिक्केति। जिक्रियति। जिकुपामास। जिज्ञाय॥ पूपालनपूरणयोः॥ यात्रिपिपर्त्तीख। चन
योनन्यासस्य इहवादेशः स्यान। रलो। पिपर्त्ति॥ ॥उदोष्ठ्यपूर्वस्य॥ उष्ठ्यपूर्वस्य क्रतउरुस्यान क्रिति
नपरत्वम। दीर्घः। पिपूर्त्तः। पिपुरति। पिपूर्षान। त्वपिपर्ठ। पिपतुठ। ज्ञकन्नाम। पपनुठ। गुरु
त्वात्रेत्वम। पनिना। पनीना। क्रस्वोः पिपिपार्त्तिनस्ति। पिपनठ। पिप्राति। पिपयान। पिप्रौनुठ। पन्नौ॥ उक्तो

कन्यागे। महानि॥ ॥उदानेश्च। उहानेना तइक्स्याद्वा। सार्वधातुके क्ङिति हलि। उहिनः॥ ॥इहल्पघोः॥ आ
भ्यस्त्रयोनानइक्स्यान्। सार्वधातुके क्ङिति हलि। नवुबुसेऽस्या उह्नातः। श्ना भ्यस्त्रयोरिस्यातो लोपः। उहति॥
लोपोयि। उहानेनातो लोपः स्यात्सार्वधातुके ये परे। उहीन स्यावहे। उहानेर्हौ परे स्याकानोऽत्वादेशः स्यात्
३५ वा। परऔडः। इव उहा हि। उहिहि। उहीहि। दैयानः। अगनो। म्वन्निपिपन्थाः। तिनीन्दी। भ्यस्यासस्यासवर्णे। इया
इयनः। इयाति। इयव ४।१५। यानः। इयनाणि। पियःपियनाम्। पियत्तः पियदनमाम्नोपीनाम्नानः। णिनि ३५
नयो वपो सणयोः॥ णिजां त्रयाणां गुणः॥ स्त्रौ। णिज विज विषाम भ्यासस्य गुणः स्यात्। श्लौ। नेनाक्ति
नेनिक्तः। नेनिग्धि॥ नाभ्यस्तस्याविपिति सार्वधातुके॥ लघूपधाभ्यस्तस्य गुणो न स्यात्। सार्वधातुके विपि

त्रि। नेनिजावा। अ नेनेक्ता। अ नेनेग्धा। अ नेनिजुष्ठा। अ नेनिज्म। एवं विजिर् पृथग्भावे। विवेक्ष्या। विवेक्तो। वेवेष्टि
टादिन्वादङ्। वेविक्ते विवेक्ता। अविवेक्त। अविविजन्। जनन मनने। उज्जनि। जनमनखनासिनफलो। ष। एवामाको
नोश्चादियश्ठस्यात्। फलादेशाद्विनिक्तिं विज्ञा। जज्ञा। नथगमहनेत्युपघालोपश्चजज्ञानि। इङ्कुनोश्चसवेवे
नीदृ। जज्ञानि। विजज्ञन्मि। जजन्वश। येविभाषा। जजन्याद्। अजायानि। डुदाञ् दाने। घाणि ददानि। श्नाभ्यस्तयो
श्चालोपश्चद्वयश। ददनि। ददश। दत्ते। घुसानित्येत्वाभ्यासलोपो। देहि। अ ददानि। अददान। स्यादोनित्। अदि
नाश्चदिषानामाद्द्यान्। ॥ डुधाञ् धारणपोषणयोः। श्चदधानि। अदधानि। धाणि दधानि। दधश्चो
श्च। दित्वे कसतु पतस्य धात्मो वयो। मषश्चस्यादान वयो। उसदोश्चपतनश। ववनसामर्थ्याद्दालोपस्य न

स्मानि वन्ना। वन्त्रः। वन्यः। चन्त्रा। यक्ष्मा। वह्वा। वेद्धि। अविना। बेयाव॥ दुम्न अथारणपोषणयोः। अम्नामिन्न। मृअम
इ उ हा ङ प घा मम्यामस्पइव्यात्। स्लो। विमार्ग्नि। विमृतः। विघ्नाति। विमद्वे। अविमथः। अविमनुथः। अमार्षीत्।
अमृत। विमना। मासा। वमान। वमर्धि। वमूव। मन्वौ। माङ्। मानेश हूव। इत्वं। प्रणिमिमीने। अविघ्रा। लोपः। मिमा
२६ ने। मिमते। अमास्त्र। एवं कुहाङ् गतौ॥ ३॥ ॥ इति घ्वादि धा क्रिया॥ दिवु क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति स्तुति
26 कान्ति गति षु॥ दिवादि भ्यः श्य न। दिवादि भ्यः श्य न परस्मै पदे स्यान्। कर्त्तरि भावे च यानुके। श्यपोः पवादः। अग २६
ना विनो। दलिवत्ति दीर्घः। दीव्यति॥ जिवु नन्तु संताने। निजीव्यति। न्यजेवीत्। न्यसेवीत्। ननीगाव विनृत्
नृत्यति। डित्वात् गुणः॥ मेधसिविककुनवनकृदनदनतः। एम्यः परस्मकाना देना। धीयानुकस्यमि धार्मिन

नस्येङ्कास्यात्॥नर्ह्लिब्याति।नक्षीति।मिविनुम्त्र नत्रीत।चसोउद्वेगे।वात्रामेनिश्चपन्वा।त्रस्पति।त्रसाति।नत्रास
वान्हृत्म्विन्पल्वेवा।नत्रसतुश्त्रेसतुश।हृशुवयोर्हानौ॥स्हृतश्च्ह्वानोश।जीर्यति।हृन्नीन्चिन्पञ्ज्ञ।यजत्न।यजा
त्।ऊजरतुश।जेरतुश।ऊराता।जरिता।शोतनूकरणे॥उतश्यति।श्यति।पनेरुकारस्यलोपश्स्यात्।श्यानि
तिमा।षा।ब्रा।षोऽन्तिमिवोवात्नुक।यशात्।यशासीत्।शायात्।एवंकोच्छेदने।षोऽन्तकर्मणि।प्रणिष्यति।न्य
षात्।न्यषासीत्।सेयात्।दोयवखंडने।प्रणपदात्।देयात्।नाचसंमिद्धौ।नाध्याति।त्रनात्।सीत्।नावोहिंस
यामा।हिंसायसिस्पना।घेनेत्वाम्यासलोपोस्तश।किलिदिसोदिथालिवयने।विकल्पोरन्यनिकेविनू।नघवुश
नाघतुश।घेनेघिथ।ननाघिथ।हिंसायां।किमा।व्यानना।घतुश।वघनाऽजनो।ग्रहिघोनिसिघसानपा।विष्यति।

विव्याध। विविध्य तुष्टः पुपोष पुप्लोष। पुषादीत्यङ्। अपुषत्। श्लिष आलिंगने। पुषाद्यङ्। अश्लिषत्। श्लिष आलिं-
गने। श्लिजश्चेत्थक्सस्थाने स्यालिंगनेऽर्थे। आश्लिक्षत्। नघ हिंसायां वा नघ्यति। पुषादित्वादङ्। नघिनने
निनिनुम। लोपश्च। अनघन अनघत् ननेघ। ननेघतुः नघादिभ्यश्च। नघा नशा नृपा दृपा द्रुहा मुहा ष्णुहा ष्णिह इति प-
३० ञ्चो वल्लोहन्ताद्वा नुकस्य इड्वा स्यात्। नेनघेलिटि। लिड्क्ङिडिति चेन्नुम्ननस्यात्। नघिता नद्धा। अलिटि किं
मा नृनीविवनिषा चवपनन्ताहिंस्रा। केविनकादिनियमा। निल्यमा। रुधा तृप प्रीणने। तृप्यति। अतृपत् अ ३०
तर्प्पीत् अत्राप्सीत् अतार्प्सीत्। अतृपत्। नपद्दोनं तिह्रु पाठश्च अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्। विकल्पार्थश्च त्रप्ता तप्र्यो-
तर्प्पिता। एवं दृप हर्षमोहनयोः। मुह वैचित्ये। अमुहत्। वा द्रुहमुहेति निष्ठान्त इत्वे। मोग्धा। मोढा। मोहिता। णश

अदर्शने। प्रणश्यति। णशेन नपत्वमड्विदा। अनेशत्। अनेशन्। नानेशतुः॥ ॥नशेष्ठवान्तस्य॥ वान्तस्य नशेर्णि
र्वैनस्यात्॥ ॥मस्जिनशोर्झलि॥ अनयोर्नुमागमः स्यान्झलि। प्रनंष्टा। नेशोर्वैति कुत्स्य पिवा कुत्वमा।
र्वैष्टुनेति कोविन। प्रनंष्टा। प्रणंशिता। मृत पृष्टा नस्या। पिणल्वैन। प्रनेक्ष्यति। नशिष्यति। शमष्टपथमे॥ श
मामष्टानां दीर्घः श्यनि। शम। दम। श्रम। तम। भ्रम। क्षम। क्लम। मद। एषां दीर्घः स्यात् श्यनि। शाम्यति। श्रा
म्यति। क्रमु ग्लानौ। क्लाम्यति। क्लामति। जीवादिकस्य तु। क्लमति। असु क्षेपणे। अस्यति। निरस्यति। वक्ष्यी
प्यड्। अस्यतेस्थुक्। अस्यतेरङि परे थुगागमः स्यात्। आस्थत्। पर्यास्थत्। यसोऽनुपसर्गाद्वा। अनुपसर्गा
द्यसो वा श्यन् स्यात्। कर्तरि सार्वधातुके। यस्यति। यसति। अनुपसर्गात् किम्। प्रयस्यति। संयसश्च। संपू

पूर्व्वा घस स्थमन्वा। सीयस्याति। सीयसति। लुम गा र्व्वे। नाष्णुम हेति वेटा। लोम्बा। लोनिता। शिमिदाम्नेहने। मिदेदी
ताष्ठ। मिदे ष्ठशितिपरे गुणष्ठस्यात्। मे घति। नूम घाणि घ्रम वाम्बस विष्ठा। म्बसोसा। दाऊ ऊम्ये। मिना। शिमि
नोति दाऊ ल्यापिवा। एजामात्वैस्याल्लपि। वकानादशि त्यवनिमित्ताम्बदास्ता। दाऊ घुउ विक्लिति। दाऊ
२८ परस्याज्जादेशकितष्ठ घुउ आगमः स्यात्। दिदीये। दाता॥ ऊनी घाडु नीवे॥ शाऊ नोज्जी। म्बनयो शी। देशः स्या २८
38 नशिति। जायते। दीपजने नि वा विणा। नानि वध्योस्वाम्बन यो तु पघा पा हृद्धिर्न स्यात्। विणिम्लितिक्लानिव।
म्बशानि। म्बशानि सा शडो। दीपा दा घो। म्बदापि। म्बदा विष्ठा। एवं पूर्वा म्बा प्याय ते। पदगतौ पद्यते। विन्नपदष्ठ
पदष्ठ्वाम्बविधा एवक्व वने नश हैं। घन्नपादि। म्बप सानाम। बुधम्बवगमने। म्बवाधि। लि। सिवाविति। किन्वी। म्बबु

अस्त्रमुत्सातामानहृर्वेचने ॥ नहोवक्ष्यन्नात्रीतृअन्नद्ध ॥ व ॥ इति दिवादिप्रक्रिया ॥ व ॥ षुञ् अभिषवे ॥
स्वादिभ्यश्नुः ॥ स्वादेश्नुप्रत्ययः स्यात्कर्त्तरि । सार्वधातुके । यपोः प्वादेः । अभिषुणोति । सुनुतः । सुन्वन्ति ।
सुन्वः । सुनुवः । सुनुवहे । सुन्वहे । प्रमवाना । असोसा । सुषुविव ॥ सुनोतेः स्यसनोः । स्यसोर्धनि परे सुनः ष
त्वं न स्यात् । विसोष्यति । विसोष्यते । यननेदेर्नुवेट् । डुमिञ् प्रक्षेपणे । मिनाति । मिनोति । मीनातीत्यात्वं वा । अमास
त । अमास्त । ममौ । मिम्यतुः । विञ् चयने ॥ । विनाजावेः । अभ्यासात्परस्य विञः कुत्वं वा स्यात् । सनि
लिटि च । चिकाय । चिचाय । चिक्ये । चिच्ये । स्तृञ् आच्छादने । अतश्च संयोगादेः । संयोगादेश्चामीयोगा
देश्चपरयोः ऋलेङः सिचो वा दीर्घः स्यात् । नाऽडि । अस्तृत । अस्तरिष्ट । अस्तरीष्ट । वृञ् आवरणे ॥ ॥

वानीन॥ लिङ्गिवानाम्नेपदेषु। हन्तेरन्तःतस्य घपरयोर्लिङ्गिवोऽसिद्धास्यान्तङि। हृनोवनिवा दार्घेऽस्ववनि
सा। अववनीसा। अहन। सेक्षचान्थलीटावववानिथा। कान्हित्वान्नेटा। वन्हव॥ नलिङि। वनिषीसा। हृषीस।
पूर्वकम्पने। अववावानी। अववाविसा। अघोषा। हियनौ हृद्धौव॥ हिनुमीना। उपसर्गस्थान्निमित्तान्यप
स्य हिनुमीना। पन योर्न्नस्य णः स्यात्। प्रहिणोति। अहेणान्॥ हनङि। अभ्यासान्यस्य हिनोतेर्हस्यकु
३९ त्वेस्यात्। ननु वङि। जिघांय॥ क्रविजिसौ घीसा याम। इदिन्वा चुम॥ चिन्वि कृण्वोर च। आम्यामु घन्य ३९
31 यश्स्यात्। अकारोऽन्त्यादेशः। अव कर्तृविसा ह्वेयानुको। उपन्मपस्यागिन्वादनोलोपश्च। अल्लोपस्य स्या
न्निचालोपवागुणाश्च। कृणोति। चकृण्वीन। वकृण्व। कृण्वन॥ कृण्वाना॥ विविप्रीणाने॥ चिणोति। स

धिम्वान। दम्भुरंनने। दम्नोति। श्नान्धिपयोधिर्दनिम्पटपनो। लिङ्पिकिद्वकव्य ८। अमिद्धवदन्नेतिन्लोपस्यासिद्ध
त्वादेचाधाग्ने। किनिलिटि दम्न एत्वे वक्तव्यो। दम्नतुथ। दद्देमिथ। केचीविन्मते। दद्म्भतुथ दद्देनुथ। यन्नवियन्थ
दमा। यलिन्लोपोत्त्वे वतिकेवित्। देमिथ। दम्मान। श्नश्नुव्यार्थे। श्नश्नुते। संयोगपूर्वत्वाडुल्लोपो न। अश्नुवहे। श्नो
शिसो। श्नास। श्नास्नो। नाम। अनव्यादेश। घश्नोतेश्व। दार्बाद। म्यामामावणान्परस्या श्नोतेर्नुडागमश्च। अस्मान्लिटि। श्नो
नशो।। ६।। ।। इति स्वादिप्रक्रिया।। तुद व्यथने।। तुदादिभ्यः शः ८। तुदादेः शप्रत्ययश्च स्यात्। कर्त्तरि सार्वधातुके
यापोः पवादः ८। ङिन्वान्न गुण ८। तुदति। तुदते। भ्रस्ज पाके। ग्रहिज्यावयि स्मेश्च भ्रस्नानाणी। सस्य जस्त्वे नर ८। वृश्चती। भ्रज्जति
वृश्चति पचन्ती। संयोगादिलोपः ८। अभ्राक्षीत् अभ्रष्ट।। भ्रज्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्। भ्रस्जेरेफस्य उपधायाः

सकारस्यवस्थानेनमागमोनास्मादार्द्धधातुके॥मिद्वोऽन्त्यात्परश्चेनोपधायाः॥स्थानेविहितत्वात्तयोर्नि
वृत्तिः॥अमार्जीत्॥अमर्क्षीत्॥क्लिनत्तिसंघ्मानणीवाघके॥अम्यामृष्यमेघमानणमाउरत्नावमज्जे॥वव्रज्ज॥संयोगान्यकस्य
लिट्यकित्॥ह्नुसाहेनसंघ्मानणी॥ववृञ्जे॥वुठवव्रज्ज॥तुठवनाञ्जिम॥वव्रञ्जिध॥ववृञ्ज॥वव्रज्ज॥ववृञ्जे॥तत्रक्षे॥मक्षी
४० क्षा॥मुचुमोऽजणो॥शमुवादीनाम्॥मुच॥लुप॥विद॥लिप॥सिच॥कृत॥पिश॥खिद॥एषांनुमागमः स्थाने॥शो
40 पने॥मुंचति॥हरित्वाद्ड॥अमुचत्॥अमुक्त॥लिपउपदेहे॥लिम्पति॥लिपिसिचिह्वश्च॥अलिपत्॥अला ४०
नेपदेष्वन्यतरस्याम्॥अलिपत॥अलिपेताम्॥अलिप्त॥अलिप्साताम्॥जिविरजरणो॥निजिंदनि॥न्यवि
वन॥न्याबिवन॥न्यजिन्क॥निविचेव॥कृन्ताछरेने॥कृन्तति॥अकर्त्तीत्॥सेऽसिचिकृतेनिवृत्॥कर्तिष्यति॥क

स्येति॥ पूपेरणे॥ विष्णुवति। क्ष्मायीत॥ व्रश्च्छेदने॥ प्रहिषा॥ वृश्चति॥ अवृश्चात्॥ अवृश्चीत्॥ अभ्यासेनेकस्य तु व्यवा।
उनत॥ अल्वस्पस्थानि दन्वा॥ असीपसानणी॥ इति वस्मउर्त्वना॥ वव्रश्च॥ वव्रश्चतुः॥ अच्छगतौ॥ द्वियपवलपमूर्त्रिमा॥ वेभु॥ छेवतितुक
मच्छति॥ अन्नृच्छद्रमुकेर्नाम॥ तस्मात्नुडितितुद॥ आनछ॥ अच्छन्ताम॥ आनर्छ्र्तुः॥ नुकयोगान्नोपधागुणः॥ सच्छिता॥ कृ
विक्षेपे॥ कृत इद्धातो॥ किरति॥ चकार॥ तुः॥ किसिना॥ कसीना॥ किरतौ लवणे॥ उपात्परस्य कितेः सुडागमः स्यात् छेदे ऽर्थे
उपस्किरति॥ अडभ्यासव्यवायेऽपि॥ अट्व्यवाये अभ्यासव्यवायेऽपि सुट् स्यात्॥ पूर्वे एव स्यात्॥ उपास्किरत॥ उप
चस्कार॥ हिंसायां प्रतेश्च॥ उपात्प्रतेश्च किरतेः सुट् स्याद्धिंसायाम्॥ उपस्किरति॥ प्रतिस्किरति॥ गॄ निगरणे
चविविभाषा॥ गॄ इत्यस्य लो लत्वं वा स्यात्॥ गिरति। गिलति॥ गिरति॥ गृ पृ॥ अने निदिता॥ मि निल्लोपश्चान्त्य

निा॰न्द्पेता॰न्पचु॰न्त्पनुन्पन्न्फ॰हन्फ॰उन्मशुन्मशिवा॰नुमर्वंश्चैब्यथ॰नुस्विधिसामर्थ्याल्लोपो न॰न्दृम्पति॰ स्पशसीस्
रीनि॰स्म्या॰म्राता॰स्पा॰मीन॰म्प्त्न्नन॥ तृतीयूर्थे हिंसायां च॥मेःसिवा॰नि वे ट्॰ वान्निव्य नि॰वर्न्स्ये नि॰ षच्छ्म्रा
स्नायाम्॰ यहिघेनिसिषसानपी॰पच्छनि॰स्वपाछीन॰पपच्छनुथ॰मृज विसर्गे॰स्तृजिदृशोर्फलात्सम॰स्रष्टा॰म्रा
न॰सृष्टा॰स्राम्॥ विभाषा सृजिदृशोः॰थससर्जिथ॰सस्रष्ठ॥ टुमस्जो शुद्धौ॰मज्जति॰ मस्जिनशो नि॰ति नुम्॰मम्लेनर्भ्र्ं
४० पूर्वे नुममिच्छन्ति॰संयोगादिलोपश्च॰वोश्कुश्च॰मग्नः॰ममज्जिथ॰ममन्थ॥ विच्छगतौ॰गुपूधू पन्पायश्च॰नु ४०
४१ य्योगान्नगुणश्च॥विच्छायति॰विच्छेतायोदनि के विना॰विच्छति॰अविच्छायीत॰अविच्छीत॰मृश आमर्शने॰म्रष्टा
मीन॰म्रमा॰मीन॰यम्रक्षत॰ इषु इच्छायाम्॰इषुगमियमां छः॰इच्छति॰इषेण॰नीषुसहेति वेट्॰एषिता॰एष्टा॰

कुट कौटिल्ये। गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्। न गुणः। अचुकुटीत्। आञ्चितकिम्। चुकोट। चुकुटिथ। कुटिता। व्यच व्याजीकर
णे। ग्रहिज्या। विचति। वचः कुटादित्वमनसि इति वक्तव्यम्। अविचीत्। विव्याच। विविचतुः। विचिता। अम्ब्रल्पपेतुउतु
व्यवाथ। त्रुट छेदने। बाधासेतिश्यन्वा। त्रुट्यति त्रुटति। अत्रुटीत्। स्फुर स्फुरणे॥ स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निर्विभ्यः। निस
निविभ्यःपरयोरनयोःसस्य षो वा स्यात्। निस्फुरति। निःष्फुरति। अस्फुरीत्। पुस्फोर। एवं स्फुलमेव पेव। णूस्त
वने। नुवति। अनुवीत्। नुनाव। मृङ् प्राणत्यागे। म्रियते जुह्विङोरव॥ म्रियतेः शिदन्त्वाल्लुङ्लिङोश्चात्मनेपदं स्यान्
नान्यत्र। रिङियङादेशौ। म्रियते। अमृत। ममार। मृषीष्ट। मरिष्यति। ओविजी भयचलनयोः। विजते। विज इट्।
विजेःपरो। ग्योऽङ्कुडादिप्रत्ययो ङिद्वत्स्यात्। अविजिष्ट। विजिता॥ ॥ इति तुदादिप्रक्रिया॥ ॥ तुविरन्नावन

नधो॥ रुधादिभ्यश्श्नम्। रुधादिभ्यः श्नम्प्रत्ययस्स्यात्कर्त्रर्थे सार्वधातुके। नशप्। मित्वादन्त्यादचः परः। रुणद्धि। श्नसोर
ल्लोपश्च धत्वं। झरो झरि सवर्णे। परसवर्णस्यासिद्धत्वान्न णत्वम्। अनुस्वारपरसवर्णौ। धनिखरस्याल्लोपो नस्यानिवृ।
रुन्धः रुन्धन्ति। रुन्ध्यात्। अरुणत्। दश्चेति वा। अरुणः अरुणत्। अरुणः अरुधत्। अरौत्सीत्। उच्छृदिर्दीप्तिदेवनयोः। छृणत्ति। सेऽसि
42 चीति वेट्। छर्दिष्यति। छर्त्स्यति॥ एवं उतृदिर् हिंसानादरयोः। तृणत्ति। अतृणत्। उर्दिश्चयस्य ऊस्त्वेऽ। शृणुन्धि। तृणोक्ष्मानि 42
ऽलोपश्च। अनुस्वारपरसवर्णौ। शिनष्टि। शिशिनष्टि। तृह हिंसायाम्। तृणह इम्। तृहः श्नमि कृते इमागमः स्याद्धलि। पि
ति हलि सार्वधातुके। तृणेढि। तृण्ढः। तृंहन्ति। तृणेक्षि। अतृणेट्। अतृणेढ्। हिसि हिंसायाम्। इदित्वान्नुम्। श्नान्नलोपश्च। हिनस्ति। अप
स्यैनस्य लोपः स्यात्। हिन्धि। अहिनत्। अहिनः। अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु। अनक्ति। अङ्क्तः। अञ्जन्ति॥ अङ्क्ते सि विः।

ग्रहे सिद्धे । नित्यमिट्स्यात् । अग्रहीत । अग्रहीष्ट । ग्राहिता । ग्रहीता । ञिइन्धी दीप्तौ । इन्द्धे । इन्धांचक्रे ॥ व ॥
॥ इति रुधादिप्रक्रिया ॥ व ॥ तनु विस्तारे ॥ तनादिकृञ्भ्य उः ॥ तनोति । तनुतः । तन्वः तनुवः । अतानीत् । अत-
तनीत् ॥ तनादिभ्यस्तथासोः ॥ तनादेः सिचो वा लुक् स्यात् तथासोः परतः । अनुदात्तोपदेशेत्यनुनासि-
कलोपः ॥ अतत । अतनिष्ट । अतथाः । अतनिष्ठाः ॥ षणु दाने ॥ सनोति । जनसनखनां सञ्झलोः । तुलोपश्च स-
ता । असात । असनिष्ट । असाथाः । असनिष्ठाः ॥ ये विभाषा ॥ सायात् । सन्यात् ॥ क्षणु हिंसायाम् । क्षणोति । ह्म्यन्तक्षण-
श्वसजागृणिश्व्येदिताम् । अक्षत । अक्षणिष्ट । क्षिणु हिंसायाम् ॥ उप्रत्ययेन नादेर्लघूपधागुणः ॥ उपधायाः गुणः
तु वा । क्षिणोति । क्षेणोति । अक्षित । अक्षेणिष्ट ॥ ऋणु गतौ । ऋणोति । अर्णोति । आर्त । आर्णिष्ट । आर्थाः । आर्णिष्ठाः ॥ तृणु अदने । क

नाति। य्वन उक्त्वार्थे यातुके कृत्तु तः। यणादेशः ननु कुरु कुनामिति न दीर्घः। कुर्वन्ति। नित्यं करोतेः॥ करोतेः प्रत्य
यो कारस्य नित्यं लोपः स्यात् म्वोः परयोः। कुर्वः। कुर्मः। यथेव। कुरु उः लोपः स्यात् पादौ प्रत्यये। कुर्यात्। कृञ
घनादित्वेः प्रति वो वा लुनाय कृता। सिपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे॥ एभ्यः करोतेः सुडागमः स्यात्। भूषणार्थे
संस्करोति। अडभ्यासव्यवायेऽपि। सुट् उपदेशाद्विकल्पात्। अतश्च संयोगादेरिति निजि श्रिवोर्न्नेद्। समस्कृषा
४२ नाम। संस्कारा ऋतश्च संयोगादेर्गुण इत्यत्र संयोगोपधग्रहणं कर्तव्यम्। कृञर्थमिति गुणः। संचस्करतुः ४२
४३ हृग्र हन्म सूत्रे ऋतो नाम ह्लाजेति सूत्रेव कृञः स्युट इति नियमान्नां प्रमुक स्पेट्। संचस्करिथ। संचस्करिव
सुटा बहिरंगत्वात् ऋगुणो ऋसंयोगाद्योरिति गुणो न। संस्क्रियात्। संस्कृषीष्ट। परिनिविभ्य इति षः। परिष्कृ

रोति। निवादानीवोतिजर्त्वेवा॥ पर्यस्काषीत्। पर्यष्काषीत्। उपस्करोति। समवायेव॥ सेपर्युपेभ्यः८ करः भूषणे
संघेऽर्थे। उपात्प्रतियत्नविकृतवाक्याध्याहारेषु च। उपात्कृञः८ सुट् स्यात्। गुणाधानेविकारेवाक्याध्याहारेऽर्थे
उपस्कुरुते॥ वा॥ इतितनादिप्रक्रिया॥ वा॥ डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये॥ क्र्यादिभ्यः श्ना। क्र्यादेः श्नाप्रत्ययः
स्यात्। कर्तरिसार्वधातुके। ईपोः१ पदादृशः८ क्रीणाति। ईहल्यघोः८। क्रीणीतः८॥ श्नाभ्यस्तयोरातः८। क्रीणन्ति। क्रीणी
ते॥ स्कुञ् आप्लवने॥ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः१२ श्नुश्च॥ एभ्यः८ श्नुप्रत्ययः स्यात्श्नाच। कर्तरिसार्वधातुके। स्कुनोति
स्कुनाति। स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भु रोधने। पनेसौत्राः८ ग्रनिर्दिष्टानामितिन्कोपधः। विष्टभ्नोति। अवष्टभ्नोति। स्तभ्नी
।स्विन्यस्त्वा। व्यष्टम्भत्। व्यष्टीमात्। स्तवनष्टम्भ। स्तुभ्नोति। स्तुभ्नाति॥ विस्कभ्नातेर्निन्यमः। वेः परस्य स्कभ्नातेः षत्वं स्य

पक्ष्माणि न्विन्धी। विष्कम्नाति। स्कम्नाति। नि न्विंगुक्षे स्कन्ने नेत्त्री। विस्कन्नाति। स्कुन्नाति। स्कुम्नाति।। मीञ् हिंसायाम्।। हिनु
मीनाति। प्रमीणाति। मिनाति। मिनोति। त्या। न्वो। च मासीनि। ञ् मास्त्राम् मो। मिम्पनु४।। पूञ् पवने। पादादीनां ह्रस्वः।।
पादादीनां द्वाविंशति क्रियाणां स्याना। यिनि यते। पादादीनां ह्रस्वो वेति को वेन। पुनाति। पुनीते। त्र पा वा न। ह्रूञ् हिंसायां
।। यकनि पा। त्र कना ल। इङ्मा वा। त्र का सी कनि पी ल। धूञ् कंपने। त्र धा वी न। त्र धो वा हि त्य पि के वि त। नासो नि त्या नि ह्रि
४४ नावाया लिनि त्य मिट। दुष विधा। त्र हङ पादादीनां त्र हि घा। गह्नाति। ह्रल श्व्नः शानज्झौ।। हलश्च पश्यश्य नश्शानच् त्रा ४४
44 देशश्च स्यान। होपन ग्रहाणा। त्र य हान। वा न त्वा न त्र द्वि दा। त्र य सं दा ला मा। च त्र ला ला जग हनुः। ज्य दि थाय हो
लिपि दीर्घश्च यह निटो दीर्घः श्च्याप। नवु लिटि य हाना। त्र हिंसायाम् माणाणाति।। श्च ह वी ह्रस्वो वा।। इवी ह्रस्वा

वास्यान्किति।लिटि।शशरतुः।शश्रतुः।दृवृहृवि दारणे॥पृपालने।वावपोहानो।पहिपा।हजः।श्रीगावय
वाद्यलःपनैपर्सेवसानणीतः इन्त्रस्पोगस्पदीर्घःस्यात्।इतिदीर्घेत्वे।वादानीकस्वः।जिनाति।जिघो।जिघ
तुः।बीवरणे।ब्रीणाति।व्रिणाति॥ज्ञावबोधने।ज्ञाजनोर्जा।जानाति।स्नन्धयन्थसंदर्भे।ग्रन्थाति।ग्रथ्नाति।ग्र
न्थियन्थ्योःकिति।लिटिसेटि।थलिचएत्वेवक्तव्यम्।वनिकेति।ग्रेथतुः।ग्रन्थतुः।ग्रेथिथ।ग्रन्थिथ
पर्वेपन्थ्या।कुन्थानिःकर्षे।कुन्थाति।कुथाण।निरःकुषः।निरःपनानकुन्धोवला देनादेर्चातुकस्पइ्ट्वास्म
रात्।निरकुकत्।निरःकिम।कोषिता॥अशभोजने॥अश्नाति।अशान।आशिता।अशिष्यति।द्वःसंपर्को।व्रव
रिषः।यवकीया।सवनावहृषे।वनिपीसा।हृपीया॥ ५॥ इतित्र्यादिविक्रिया॥ ५॥ चुरस्तेये॥ स्वसन्यापपाद

तूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्। पत्यश्चुरादिभ्यश्च स्वार्थे णिच् प्रत्ययः स्यात्। उप
धागुणः। धातुसंज्ञायाम्। शप्प्रतिवादि। गुणायादेशौ। चोरयति॥ णिचश्च॥ णिजन्तादात्मनेपदं स्यात्। कर्तृगामि
नि क्रियाफले। चोरयते। णिश्रीति चङ्। द्वित्वे उपधाह्रस्वः। अभ्यासदीर्घः। णिलोपश्च। अचूचुरत। चोरयामास
४५ 45 चोरयिता। चोर्यात्। चुरादेर्णिज्वर्तते। केचित्। पक्षे चोरति। नास्यादि॥ कृतसंशब्दे॥ उपधायाश्च॥ धातोरुपधाया ऋ
कारस्य इत्वादेशः स्यात्। प्रत्यये परे। कीर्तयति। अचिकीर्तत्॥ अथ यत्र दन्त्यास्तथा। गणसंख्याने॥ अतो लोपः। अनस्य ४५
स्यान्निचि। नोपधावृद्धिः। गणयति॥ इत्वगणः। अगणय नेत्यामास्पवादः स्यात्। चङ् परे णौ। अजीगणत्। अग्ला
पिवात्तसन्वद्भावश्च अजगणत्॥ कथवाक्यप्रबन्धे॥ कथयति। कथेरभ्यासस्येत्वं वा निके। अचीकथत्। अच

वकथनं।ष्ट्रिकपदे लक्षणे वा।स्त्रं कयति।वडि तु।ऽः पुयमा स्यपरइति ह्रापकारद्वित्वनिमित्तैः।दिणोक्त
मन्यासस्यस्थानिवद्भवति।विशायमाने न।ल्लोपस्यस्थानिवत्वात् हकारवत ८ ककारस्य द्वित्वं।
अश्वग्लोपित्वान्नमन्वज्ञाव ८।च्यो वकन।किविदेवमा।कुथऽ ८ पुयणः पुवर्णा निर्द्दिष्टा।वणोक्तनउव
लोदेश ८ अकारस्यावादेशः स्वाम्यासस्यस्थानिवन्स्यात्।नान्यइतिनियमाद्यादित्वेन समानि क्वस्य
वककारस्य द्वित्वं।च्चीविकन।नवास्मिन्यतेच्च दत्रत्वं व्यर्थम्।यनर।क्रेग्लोपित्वं स्थानिवत्वं वाद्त्र
च्वग्रयोऽनम्।पवन्त्वेतेनविधेने।नत्रा ल्लोपविकल्पनेच्च दत्रत्वसार्थक्यापपात्र ल्लोपइन्यर्थ ८।च्व
कयति।च्चिल्लोपाभावपक्षेच्चवास्मिन्नातिद्धिराकार ८।।च्वार्त्रिक्षाज्ञानीकूयीस्मायाप्यावत्वाप्रुगणो।

यर्त्यादेरादन्तानीव पुगागमः स्यात्णौ परे। स्वेकापयति। अर्थे उपयाञ्ज्ञापयाम। अर्थं यते। अर्पाप
पते। आर्वेयतः। आन्तिथत इत्यादि॥ ४॥ ॥ इति णिजादिप्रक्रिया॥ ॥ हेतुमति च॥ हेतुः प्रयोजकः
न व्यापारः प्रेषणादिः हेतुमान्। तस्मिन्वाच्ये धातोर्णिच् स्यात्। कुर्वन्तं प्रेरयति कारयति। अववी
कतत्। णिजन्ताणिच्। वारयन्तं प्रेरयति वारयति॥ नाग्लोपिशास्वृदिताम्॥ अग्लोपिनः शासश्च ४६
४५ दितश्चोपधाया ह्रस्वो न स्यात् चङ्परे णौ। इति ह्रस्वाभावे धातोर्णिचि नाग्लोपित्वमिति ह्रस्वादिविधु
बुरत्। णिलोपे अग्लोपित्वमिति केचित्। स्विन्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम्। एषामभ्यासस्यात इत्
46 वोऽन्त्यादेशः स्यात् चङ्परे णौ। इत्वापवादः ॥ असस्मरत्। अददरत्। नपरत्वसामर्थ्यादत्र प्रोक्ते

श्वुवोरन। यशशास्त। स्मदित ४ स्वङुढौकत॥ णौ वमस्थवङो ४ मन्यनेवद्यरेवणोस्वयते ४ संप्रसारणंवा
स्यात्। संप्रसारणेनदास्यरेवकार्यवत्स्ववदितिववनात्। हा हो संप्रसारणी। हयावाहशो। हिन्वी। यावाहयस्यं
थासेस्यानिवत्वाडुकानष्टदीर्घ ४ अयूशवन्। सन्वद्भावट। अलघुयान्नदीर्घ ४ अशिश्वयन्। शिश्वियुसिवुसहीव
ङि। एषोचेनस्यानवाङि। उपसर्गादितिवाच्यम्। एकाम्रुपसर्गानिमित्तरञोनेष्यते। नाम्यासहलत्न्यर्थ ४ अव
तस्वीननत्। पर्यस्राविवन्। म्यसीषहत्। स्कुथानोवनेकावरश्वसन्वद्भावोवेतिकेचित्। अववकासन्। अवीवकास
त्। नन्द्राश्वीयोगेति। नस्राणीनद्विवम्। आन्द्रिदत्। स्वाडिडत्। स्वाद्विवत्। वकारस्यापिनद्विर्वी आजिजत्। अ
जादेपिन्येवा। नेह। अवाद्विपत्। नमेरशाल्किलेलोप ४ नेत्नुमस्यादवि। नतुयो भ्रुलेप ४ लघुनी तुक्केर्नसन्वत्। अररैमत्।

लभेरवा। लभेतुम स्यादवि। ननु शब्दितो ऽथ चलर्लभनः। स्ववशीभुक्केर्न कुत्वे। अगाहयत। नोनयति घनयमेजयति
प्यथ। एध्यथ स्थरस्पर्श्ले रव स्यात्। छन्दसि। अनयात्। अघ्नयात्। वेलयात्। आर्द्रयात्। जो केतु अनिनन्त्
दिवनन। पोलिलन। आर्द्रिदन्। दयमपि लोकइति कोविद॥ ॥ नस्मृदृच रपथप्रदस्त्रुस्पशाम॥ एजाम स्याम
स्पचकमो ऽस्त्वादेशः स्यात्। वद्धनेणो॥ इत्याप वादृथ अमस्मरत्। अदद्रत्। नपनत्वसाम पर्यो ऽस्वलघैत्रिदार्दयत्वनत्व
४० रत। अपपथत। अमम्रदत्। अतत्वरत्। अपस्पशत॥ ॥ विभाजो वेष्टिवेष्टोः॥ अनयोर्नामस्य अत्वं वा स्यात् वध ४०
रेणो। अववेष्टत॥ एवं ह्रस्वादेशो। अविवेष्टत्। अविवेष्टत्। अववेष्टत्॥ भाजभासभाषदीपजीवमीलपीडाम
न्यतरस्याम॥ एषामुपधाया ह्रस्वो वा स्यात्। वद्धनेणो। अबिभजत्। अबभाजत्। इत्यादि। कण रण गोवण भ्रण स्वण

केलपलुपलुवहेठीव॥ अवीकणत्। अचकणत्। इत्यादि॥ ऊर्णोत्॥ उपधायाः ऋवर्णस्य स्थाने ऋत् स्याद्वा। चङ्परे णौ॥
अचीकृतत्। अचीवृतत्। अमीमृजत्। पक्षे ईर्गुणाद्द्धयः। अचिकीर्तत्। अववर्तत्। अममार्जत्॥ ॥स्वापेश्चङि॥ उप
न्त्यस्य स्वपेर्वा ङसे प्रधाने पीस्यात्। असूषुपत्॥ ॥शाछासाह्वाव्यावेपां युक्॥ एषां युगागमः स्यात्। णौ। शाययति
इत्यादि। छाययति॥ ॥कृश्सिवसानणम॥ सन्यरेव यरेव णौ ह्वयतेरुसं प्रसारणं स्यात्। निन्ये। पीवसानलस्व
वलीयस्थानममुकः। अजूहवत्। अजुहावत्। पाययति॥ ॥लोपश्च पिबतेर्णौ वाभ्यासस्य॥ पिबतेरुपधाया लो
पश्चस्यात् अभ्यासस्य ईत्वादेशश्च चङ्परे णौ। अपीप्यत्। अर्त्तिह्रीव्लीति पुक्। पुगन्तेतिगुणः। अर्पयति। ह्रे
पयति। ब्लेपयति। रिपयति। यलोपश्च। क्नोपयति। क्ष्मापयति। स्थापयति॥ ॥निघ्नेतिन्त। निघ्नेतुपधायार

रादेश॰स्यान्वघ्नेणौ। घनिघ्निपत्॥ ॥जिब्रू तेबी॥ जिब्रने॰ध्राग्रु क्ने वास्यात्। श्रजिब्रिपत्। श्रजिब्रपत्।
पातेणौ लुगागमो वक्तव्य॰ पालयति॥ ॥वो विधूनने युक्॥ वातेर्युक्स्यात्। णौ कंपे॰र्थे। वाजयति। किंपे
किम्। केशान्वाययति। धूञ्प्रीञोर्नुक्कतिकेचित्। धूनयति। धावयति। प्रीणयति। प्राययति॥ ॥विभाषा
४८ लीयते॰। लीलोर्नुग्लुकावन्येवास्यात्। ञपि। एत्विमित्वेऽशितिवा। विलापयति घृतम्॥ ॥लीलोर्नुग्लुकावन ४८
न्यस्यामा। स्नेहविलापने। लीयतेर्लीनेश्व कमानुग्लुकावागमौस्त॰। वाणौ। स्नेहद्रवे। विलीनयति। विल
पयति। विलालयति। विलापयति वा घृतम्। स्नेहद्रवे किम्। लोहं विलापयति। विलापयति॥ ॥ञलेमत्ता॥ने
मवप्रगाप्तुलिङ्यो नित्यमात्वेमयि निवाच्यम्॥ ॥जिपः संमानन शालीनीकरणयोश्च। लोऽन्तजिर्योऽन्तत्वप

नात्मनेपदंस्यात्तोंदकर्तृकेऽपिफले।पूजाभिनवयोः ऽयम्लीननेवार्थी जटादिभिनालापयते।स्पेनोवात्रिंकाभु
ल्लापयते।बालमुल्लापयते॥ विनेनेर्हेतुमये।विनेनेवंशान्वैवास्यात्।णौ।प्रयोगकाऽयंवेद्यव्यम्। ॥भी
स्योर्हेतुमये॥भ्रात्मीप्यत्वाभ्यामात्मनेपदंस्यात्।हेतुमये।पुगागमश्चमुंडेनापयते॥ ॥भियोहेतुमयेषुक्॥भियः
षुकस्यात्णौ।हेतुमयो।ऽयत्रनिर्द्दिष्टान्त्रात्वपनेषुक्।नीजयंते॥ ॥नित्यंस्मयतेः॥स्मयतेर्वा।नित्यमात्वंस्या
त्।णौ।हेतुमये।जटिलोविस्मापयते।हेतुमयेकिम्।कुंचिकयैनेमापयति।विस्मापयति॥ ॥स्फायोवः॥
चस्फायोः वादेशःस्यात्।णौ।स्फावयति॥ ॥शदेरगतौतः॥शदेर्णौतोऽत्वादेशःस्यात्।नतुगतौ।शातयति।ग
तौतु।गाःशादयति।गोविन्दः॥ ॥रुहःपोऽन्यतरस्याम्॥रुहःपश्चस्यात्।णौ।रोपयति।रोहयति॥ ॥क्रीङ्जी

नाणौ॥ कोऽजीएषामेवस्यात्वेस्यान।णौ।क्षापयति।श्र्यापयति।ज्ञापयति॥ ॥णौवसेश्वजेश्चा॥स
न्पनेवम्बनेवणौ॥ इणोगाऽवाम्पान।अध्यजीगपत।अध्यापिपत।णौ॥ननु पामलौकिकार्थे।अन्नैसावय
ति॥ ॥सिध्यतेरपारलौकिके॥अस्यैवस्यात्वैस्यान।अदध्दार्थेनु।नपथ्मसेवयति॥ ॥विस्फुरोणौ॥क्रिः
८९ स्फुरश्चैवस्यात्वंवास्यानणौ।वापयति।वापयति।स्फायनयाति।स्फोरयति।आन्कस्यान्यासेस्यानिवर्न्न
ता अपुस्फुरत्त।अपुस्फरत्त॥ ॥ग्रजनेवीपने ४।अस्यैवस्यात्वैवास्यान।णौ।ग्रजने१र्थे।वापयति।वा ८९
पयति।णा४।पुनोवानःगम्यिथाह्यतौम्यर्थः।स्त्रावयति।अवादेशस्यम्यानिवन्धान।अनुघुवन।भाव
पति।सन्वड्डावे॥उःपुपयंत्र्यपरे।अभ्यासोवर्णस्यसमानिपरेइन्वीस्यान्पवर्गयणायकानेच्ववर्णपरेपु

पनतश्चवीनवत।श्वज्ञीज्ञपत।श्वयायवत्।।श्वव निश्चणोति इवति श्ववति श्रवति यवतीनीव।।एवा मम्यासे
स्यं कारस्य इत्वेवास्या न्।।सनिश्च वर्णपैरेवान्व जेरे परे।।असिश्चवन्।अम्सुस्व वत्।इत्यादि गूहयति।। दोषो
णौ।। दुष्यते रूपथायाः उत्वादेशस्यात।णौ।दूषयति।। ।।वा चित्तविरागे।।चित्तविरागेर्थे दुषेर्वा उत्वस्यात्। चित्तं दू
षयति। दोषयति वा।। ।।मितां ह्रस्वः।।घटादयो मित इति ज्ञेया। तेषां ह्रुपधायाः ह्रस्वः स्यात् णौ। घटयति। व्य
थयति। पैव पीवाशानो नूर्पा।। ।।जनीजॄष्क्नसुरंजोऽमन्ताश्च।।जन्यादयः अमन्ताश्च मितो ज्ञेयाः। जनयति। जरय
ति। क्नसयति। रंजेर्णौ मृगरमणे नलोपो वक्तव्यः। रजयति मृगान्। अन्यत्र रंजयति वस्त्रम्। दमयति।। नामणनी
णमानिशामनेषु ह्रा।। एष्वर्थेषु ज्ञामित्स्यात्। ज्ञपयति। सम ज्ञापयति।। ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा।।ग्ला

स्नावनुवमश्च॥ ज्वलादयो ग्लादयश्च मितो वा स्युरनुपसर्गाश्चेत्। ज्वलय। ज्वालयति। ग्लपयति। ग्लापयति। अनुप
सर्गा इति किम्। प्रज्वालयति। प्रग्लापयति॥ ॥न कम्यमिचमाम्। अमन्ताश्चैते मितो न स्युः। कामयति। आमयति
।चामयति। शमोऽदर्शने मित्। शमयति। दर्शने तु निशामयति। यमोऽपरिवेषणे। यमयति। अन्यत्र तु यामयति।
५० स्खदिरवपरिभ्यां च। अवस्खदयति। परिस्खदयति। सोपसर्गस्खदेः फणादयश्च मितो वेति केचित्। प्रस्खदयति।
प्रस्खादयति। फणगतौ। फणयति। अन्यत्र फाणयति॥ णौ गमिरबोधने॥ इणो गामिः स्याण्णौ। इकारान् उवार णार्थे ५०
गमयति। बोधने तु प्रत्याययति। अत्रे इण्वदिकः। अधिगमयति॥ ॥हनस्तोऽचिण्णलोः॥ हन्तेस्तकारोऽन्तादेशः स्यात्
चिण्णल्वर्जे ञ्णिति। घातयति। इष्यति। इष्यनेस्तृतीयस्य द्वे। तृतीयवर्जनस्यैकाचो वा। पि॰

व्यनापद्विपितम्॥ ५। ॥इति ण्यन्तप्रक्रिया॥ ५। ॥धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायाम्॥ इच्छिकर्मणो धा
तोः इषिजिणैककर्तृकात् सन् प्रत्ययो वा स्यादिच्छायाम्। जुगुप्सनोतिति निवसः। ञित्त्वम्॥ ॥सन्यतः॥ धातोर्द्विर्व
चनं द्वाईषातुकत्वम्। पकारवत् पदस्थ इति। नेट्। धातुत्वात् तङ् इट्। पठ। सम्पतन्त्री। म्नः तुमि छति। जिघत्सति॥ धनोली
पठः त्वजिघत्सात्। पत्रेवा धमपि। दा दः ध्वसन्तात्वेवानेकवित्। दिदासते। दिदासते॥ ॥धुतिश्च्याप्यार्थसे वृत्तस्या
न णम्॥ नलोपो उपधाद्धलादेश्च सेट्॥ उश्च इश्च वि। उ इ वर्णोपधाद्धलादेः नलेनात्मनोल्कासनो सेटो वा कितौ स्कः
दिधुनिषते। दिधानिषते। उ छेः तुकि द्वित्वे च छतेषपूर्वो धात्व पठ। राष्य तत्र इत्नि वक्तव्यमिति नलोपः। वर्त्तमा स्व
स्यास वर्त्ते स्य तुके प्रतिमिद्धं चान् छे वेति नतुक। उविच्छिषति। नलोपो वेनैके। उनिच्छिषति। ण्यन्तात्मनाणौ

संख्वङेनितिगास्त्वा।त्रविजिगापयिषति।ख्वध्यादिपयिषति।लोवसन्निनिवासंघसानली॥शश्वायायिषाति
जति।युशावयिषति।अणपत्रस्यनु।शश्वयिषति।कश्संप्रसारणी।जुहावयिषति॥उभौसाभ्यासस्य॥त्रनि
नेश्साभ्यासस्यउभौनकाभौणन्वैघाघुनश।निमित्रेसति।घाणिणिषति।पनाणिणत्॥ ॥नहृचश्ववृर्म्येश॥ह
लत्राध्र॥इकसमीपाद्धलश्पनोकलाद्दिःसनकिस्पान।हृहस्रति।नङ्गिनु।विवर्त्तिषते।सश्मिवानिवृट।निनृक्ष
५१ नि।निनर्त्तिषति॥ ॥इसनिवा॥हृहृभ्यामृद्दिःवाध्यपरस्मसनहृक्षस्यान्॥ ॥इकोफल॥इगन्तानफलादिश्स ५२
नकिस्यान॥ ॥सनस्थानोश॥तितीर्षति।तितनिषति।तितनीषति।स्वञ्जनगमोसनि॥चञेनानोऽन्त्रेविग्रहे
रागमेरवदाघेश्स्यान।फलादौसनि॥ ॥उदोष्ठ्यपूर्वस्य॥बुभूर्षति।विवरिषति।विवरीषति।अनश्वसेयोगाद

स्कवर्ग्गासनःङ्कृतिकविन। विस्का जेनि। दुघूनेति। दिष्वनिजनि॥ ॥सन्क्लिटोर्ग्लेश॥जिगा जनि। विनाजावेश॥विवि
जनि। विवाषनि। कुर्च्वी जिर्यो मनि॥ ॥सनिव॥सनि पवेरणोगमि श्च्यान्नवुवोषने। जिगमिषनि। वोवनेनुशपो का
नेगास्मिहेश्पिसन्मङनेन्कासो ब्राह्मणेमजादेनिनि षिन्वार्थमपा नेनसनो द्विर्वी। ञम्पासम्पइन्वो। चनोपिषनि। इपवादि
काग्निषिजिगमि षनि॥ ॥इङश्च॥इङोगमि श्स्याक्सनि। ञाधिजिगांसते॥ऽर्ध्यनेश्सानियमनो ब्रींदिन्वम।इर्षि
यिषनि। इर्घ्यिजिषनि॥ ॥सनियहगुहोश्च॥यहेर्गुहेन्नुग न्नाञ्वसन इषन स्पान। वुनूषनि। जुहूषनि। स्वन्ना
देशाहूदन्त्रन्वेश्दिनेट्। विकार्विनि। जुघुक्षनि॥ ॥तुद्दविरमुषग्रहिस्वपिपछ्ःश्लेश्च॥ एभ्यः श्लेश्चक्कावाकि
नोक्त्र॥ग्राहिस्वपिपासनश्चषलक्ष्पासिद्धन्वाङ्षप्रावश॥ञेद्यन्नि। वदिस्वपानिउन्वी। सुषुप्सनि। स्निङपूङन्नगोस

नि।ष्मिङ्पूङःक्तयञ्जन्ञ्त्रशणष्म्यष्ठ्ठन इटस्यात्॥ सिस्मायिषते। पिपविषते। अपिरिषति। अञ्जिजिषति। अवि
शिषते॥ ॥किरश्च पंचभ्यः॥ कृगृदृधृप्रच्छ एभ्यः सन इटस्यात्। विकरिषति। जिगरिषति। अत्र इट्दोदी
र्घेनेत्यम। दिदरिषते। दिधरिषते। पिपृच्छिषति॥ ॥सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भु। श्रिपूर्णुभरज्ञपिसनाम्। इवन्तेभ्यो
अवादिभ्यश्च सन इड्वा स्यात्॥ ॥च्छ्वोः शूडनुनासिके च। सतुक्कस्य छस्य वस्य च क्रमात् श ऊठ् एतौ वा दिशो ष्ठ
५२ अनुनासिके क्वौ झलादौ क्ङिति। दिव्। दुद्यूषति। दिदेविषति। सुस्यूषति। सौ तिष्पोऽतिवेतिनियमान्नसन्वि से ५२
सेविषति। आदिदिविषति॥ ॥आप्ज्ञप्यृधामीत्। एषामच ईस्यात्सादौ सनि॥ ॥अत्रलोपोऽभ्यासस्य॥ सानि
मिमेत्यादीनामभ्यासस्य लोपश्च स्यात्। रपरत्वं। वर्त्तं। ईप्सीति। विज्ञानिषति। विज्ञपति। विपर्धति॥

दिदम्भिषति॥ दंभ इच्च॥ दंभेरच इद्धादेशः स्यात् इच्च। सकारादेशत्वानि। अभ्यासलोपश्च। हलन्ताच्चेत्यत्र दंभेर्हल्ग्रह
णस्य जातिवाचकत्वात् सनः किन्त्वे नलोपश्च। धिप्सति। धीप्सति। शिश्रयिषति। शिश्राषति। सिस्वरिषति। सुस्वूर्षति
यियविषति। यूयूषति। ऊर्णुनुविषति। ऊर्णुनविषति। ऊर्णुनूषति। बिभरिषति। बुभूर्षति। जिज्ञपयिषति। ज्ञीप्स
ति। इको झल् किन्त्वान्न गुणः अपनत्वात् षिल्लोपे न दीर्घो वाच्यते। ज्ञीप्सति। ज्ञपित्व पुगन्तो मित् ईत्‌ पकारान्तत्वं वैता
दिकश्च। सिसनिषति। जनसनखनसनेत्यादौ। पतिसिषासति। ननिपतिरिष्टिज्ञानिष्यथ मनो वा इद्वाच्यश्च। तितनिषति
॥ ॥ तनोतेर्विभाषा। तनोतेरुपधाया दीर्घः स्यात् झलादौ सनि। तितांसति। तितंसति। ढ्रोर्ध्यकायोः सन्वत्कार्याः
र्वा शुभूर्षति। कूलीपिपतिषति॥ ॥ सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस्। मि। मी। मा। मा ङ। दा। धा। एपतीन्

भादानीनां स्थाने इस् स्यात्। सादौ सनि चाभ्यासलोपश्च। स्कोनितिसंयोगादिलोपश्च। दित्सति। दिदरिद्रिषति। दिदरि
द्रासति। स्पर्द्धायामुक इति सम्पतश्च। मित्सति। ३मित्सते। २दित्सति। धित्सति। दिप्सते। लिप्सते। शिक्षति। पित्सते। ईर्त्सति॥
॥नावो हिंसायाम्॥ सनीस्वाभ्यश्च। घानिनित्सति। हिंसायां किम्। जिगिनासति॥ मुवो कर्मकस्य गुणो वा॥ अकर्मकि
५३ स्य मुवो गुणो वा स्यात्। नादोऽसनि। अभ्यासलोपश्च। पक्षे हलन्ताद्वेति किन्वान्न गुणः। मोक्षते। मुमुक्षते वा वत्सः स्वयमेव। स्वि
53 कर्मकस्य किम्। मुमुक्षति वत्सं कृष्णः। णौ हलादेः सन्यस्यात इत्वमापुस्फारयिषति। बुक्कावयिषति। उच्छपुयणा। ५३
यियावयिषति। बिभावयिषति। पिपावयिषति। निनावयिषति। लिलावयिषति। जुगतो। जिज्ञावयिषति। पुयण
जीति किम्। नुनावयिषति। अपरोक्षिम्। बुभूषति। स्रवतीति न्वेवा॥ सिस्रावयिषति। सुस्रावयिषति। इत्यादि। अप

तेन्येवा युयुत्सते॥ ॥नलोप्युपधायाद्धलादेः शीस्वानुनोविषते तुतुविषते। लिलेखिषति। लेलेखिषति। नु दविदेविषि
न्यीकित्वमातुतुद्दिषति। विविदिषामि। मुमुषिषति॥ ॥स्वोनिण्यौनिव सन्यभ्यासान्। अभ्यासेण१ परस्य स्वोनिण्यत्रयो
रेवसन्यपजश्च्यान्। सुसूनेसति। नान्यस्या। तुष्टूषति। सुतिस्वाप्योन्निपुन्वम्। सुष्वापयिषति। स्वोनिण्यो१किम्। सिषिक्
नि। उपसर्गात्तु स्यादिष्वभ्यासेनेत्यभ्यासादेव। पनिषिषिक्षति। षनिक्रिः। सुषूनेश्चन्यास्याद्देवा। निषामति। सुषुप्स
ति। अभ्यासात्किम्। चान्विषिन्निमित्र४जो१न्यभ्यस्यादेवा। ईणा। भनीषिषति। इकाश्चवा। षिषति॥ ॥सः स्विदिस्वदि
सहांनोषि। अभ्यासेण१परस्यषो णिपान्त्वा नीससपस एव स्यात्। नषः षणिपरे सिस्वेदयिषति। सिस्वादयि
षति। सिसाहयिषति। स्यादिष्वभ्यासेनेत्यत्र स्यादिष्ववाम्पासस्यषत्वम्। नसुनोत्यादिषु विनियमान्। अ

चनिघुमृषनि। पनिम्मिणासनिषिजिकान्मह्नुवर्धायाःकैषिकामनुवर्थिक४समूपप्रत्ययोनेक्ष४मनत्वान्त्रसानिव्यने
स्वार्थसनन्त्राल्पादेवाःगुगुप्सिषने।मीमांसिषने॥ ७॥ ॥इतिसन्प्रक्रिया॥ ७॥ ॥धातोरेकाचोहलादेः४क्रियासमभिहारे
यङ्॥१॥ हलादिर्योधातुरेकाचस्तस्मात्पौनःपुन्यभृशार्थयोर्द्योत्ये यङ्प्रत्ययः४स्यात्॥ सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतिभ्यो यङ्वाच्यः४ वा
५४ नोतिम्नुक्तो४मोपसर्गात्वा। ग्रादतिन्तशी। ग्नुविशुम्भोर्यङ्॥ ॥नित्यंकौटिल्येगतौ॥ गत्यर्थात्कौटिल्यएवयङ्स्यान्नतुक्रि
यासमभिहारे॥ ॥लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्योभावगर्हायाम्। एभ्योधातुभ्योगर्हायामेवयङ्स्यात्।नतुक्रियासमभि ५४
हारे। मृयाघर्थमावगर्हेपोमियणो४पिलुपादेः४स्यादितिकेचित्। सन्यङोरितिद्वित्वं। गुणोयङ्लुकोः४। अभ्यास
स्यगुणः४स्यान्यङियङ्लुकिचपरे। वाङुल्वादृशलडादयः४। ङित्वादात्मनेपदं। णिलोपः४। पुनः४पुनरतिशयेनसू

वधानिसोमूच्यते॥ ॥यस्य हलः४॥ हलःपरस्ययकारस्यलोपः४स्यात्‌दार्ढ्यावुके।यसोमूविप्र।सोमूबीव

के।सोमुच्यात।मोमूच्यते।द्वितीयस्यद्विर्त्वे॥ हलादिःशेषः४॥ दीर्घीःकितः॥ यकितोःभ्यासस्यदीर्घः४स्यात्‌। याइ

यङ्लुकि॥ यदाघते।यशाश्यते॥ पडिव।यर्वःसयोगादेःवक्षतोगुणः४स्यात्‌।पडियङ्लुकिव।पकारपरस्मैप

स्यतद्विर्वानिजेषः४यनायिते।पुर्णीनृपते॥ ॥घुमास्थापोजहातिसोहलि।ततोद्विर्वम।गुणःदेदीयते।यानोले

दः४॥ यदेदापिलादिदीयते।मेमीयते।नेधीयते।जेगीयते।पेपीयते।जेहीयते।सेषीयते॥ ॥दिमाबाख्ये४॥ सोमू

यते।योश्वीयते।सास्मयिते।यीङ्‌तः४वेकीयते।पुटीवाजहिगिरचानमीयोगादिन्वेनगुणः४।सीसेस्क्रीय॥ ॥निवोय

ति।सिवःसम्पयोनस्यात्‌यङि।उपसर्गात्यासनिमित्तत्वापवादः।निसेमिव्यते।वर्कःअजः।सैनिवाकुःफंघते॥

॥ ग्रायङि। गृइ इ नस्यपेनेफस्पलथस्याघङि। गार्हिनीगिलनिनिग्गिल्यते। लोनुप्यते। मासघ्येते॥ ॥ नकवनेयेङि॥ क
दनेमींवा दिकस्याभ्यासस्यबुर्त्वं नस्याघङि। कोकूयते। कवनेनिर्द्दिशात्कोनिकुवन्तोश्वुर्त्वमेव। वोकूयते॥ ॥ नीग्वंचु
घींसु घींसु न्त्रींसु कशपतपद्स्कंदाम॥ एषामभ्यासस्यनीगागमः स्याघङ्कु कोः। अकितइत्युक्तेर्न दीर्घः। लोपः।
५५ वनीवच्यते। सनीघस्यते इत्यादि॥ ॥ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य॥ अनुनासिकान्तस्य तकारान्ताभ्यासस्य नुगागमः स्या ५५
घङ्कुकोः। नुक्सहितत्वं वक्ष्यमाणः। अनुल्यप्यनुस्वारः। वा पदान्तस्येति वा परसवर्णः। यंयम्यते। जंगम्यते। वंवम्यते। वम्य
म्यते। तंतन्यते। तन्तन्यते। अन इति न परत्वान्नेह। मामकोचे। वामाम्यते। यतिभिभाजेन्यान्त्वेवा। जाजापते। जंगन्यते। एवं
मनखना। कुन्चीर्जीवन्यते। हन्तेर्हिंसायां याङि घ्नीभावो वक्तव्यः। जेघ्नीयते॥ उपजनदहदंशभंजपशांच॥ एषामभ्यास

स्पनुकस्माघङुको॰ ४। ॐजप्यनइत्यादि। लव्ययान्वस्या म्यासस्यनुखे निकेवित्र। वंवल्पने। वावल्पने। मीमव्यने। माम व्य
ने। ददयपने। दादयपने॥ ॥ वनफलोश्व॥ त्वनयोनम्यामस्यानो नुकस्यानपङ् लुको॰ ४॥ ॥ उत्पनस्पात ४॥ वनफलो ४
प्रक्लते। नकानस्पतन्स्माघङुको॰ ४। वंनूर्यने। पेफुल्पते॥ नागद्रु पवस्पव॥ ज्ञद्रु पवस्पषानोनम्यासस्पनागाग मः
स्माघ ङुको॰ ४॥ कुञ्चादि भुव॥ कुन्नादावा क्लनि॰ णोनन्वेनस्यात्। ननीनृत्पने। जनीगत्वने। कूपनोलङ्स्तुमय
नलन्वी। वलीकृप्यने। नीगल्वनइ निसीपोगा थैवाव्यम। वनीवृश्चपने। पनीपृच्छते॥ न्वपिस्पमि वोमीयङि॥
पनीयङि मीपसारणेस्यात्। सोप्तुप्यने। सोमिम्यने। वेवीयने॥ नव ४ वत्ते येङि सिप्रसानणीनस्यात्। वाव
यने॥ वायः की॥ नायने ४ कीस्माघङि। विकायने॥ इन्द्रान्त्सो ४॥ पनमोनीचनादेशश्स्यात् पङि। मेव्रीयने। देवी

पते॥ ॥ न यङः क्ङिति॥ याङोयङः ईतिशश्चाघोटो क्ङितिपरे। ङित्वादन्त्यस्य। शाशय्यते। अभ्यासस्य एकस्य च॥ ननो। गुणश्च। डौ ढौक्य
ते॥ ॥ इति यङन्तप्रक्रिया॥ यङो ऽचि च॥ यङोऽच्प्रत्यये लुक्स्यात्। चकारात् अप्रत्ययेऽपि च हलि लुक्स्यात्। अत्र न ङकार्ये
न लुमतेति द्वित्वानिषेधः॥ यङ्लुकि सन्यपि न रीगन्ता द्वित्वे अभ्यासकार्यं वक्तते। धातुत्वात् तिबादिः। चनस्तिङा अ
ने कार्ये ञेयो। वकैनाने च। वर्क्ष्यानमिति यङ्लुगन्तेन तपरस्मैपदि इत्यदादिवत्। शेर्यरपो लुक्॥ ॥ यङो वा॥ ५६
५६ यङ्लुगन्तात् परस्य हलादेः पितः सार्वधातुकस्य ईडागमो वा स्यात्। भूसुवोस्तिङि गुणः प्राप्तौ बोभूतु ते
56 तिक्ते इति छन्दसि निपातनात् भाषायां यङ्लुकि गुणः। बोभवीति। बोभोति। बोभूतः। बोभुवति। बोभूया
त्। बोभूहि। अबोभवुः। अबोभूत्। अबोभूतम्। बोभवीवकान्। कोश्विदाम्नेष्यते। धातुनिर्देशे यङ्लुगन्ता

स्यापियदृष्णा। नू। भुवो वुगिति वुक। वो भूव। वोभूवतुठ। वानुयहृयो ऽन्त्रीयङ्लुकि वेति केचित्। बोभाव। बोभुवतुठ। वनी
वन्त्रीति। वनीवंक्ति। वनीवंक्तठ। जंगमीति। जंगन्ति। जंगतठ। उपधालोपठ। जंग्मति। जंगमति॥ ॥ म्चोरव॥ मात्रस्यवार्न्
न्नेस्यान भवयो ऽध्पनन थ। जंगन्मि। जंगन्वथ। जंघनीति। जंघन्ति। जंघनठ। जंघ्नति। जंघनति। नाम्यस्यावीनि नगुण। थर्वर्वु
नीति। उन्पनस्यानदनितपरत्वान्नगुणठ। धर्घत्वंस्पादिवा। वेवृन्ति। वेवृत्तेठ। वंखानठ। वेखंतठ। वेख्नति। वेखनति। जंजान्ः
जंजनठ। जंघनि। जंजनानीदेदिवीनि॥ ॥जापोव्याघेलि॥ ददेति। दधूनेथय ङ्लुकि श्वो ऽधूटो वा यकारे वानकवन्। ददनथ
मि वंपोऽनुनासिकवा हूट। गुणठ। ददघोमि। ददघूवठ। देदिवठ। विच्छवि विच्छीति। वेवेष्टि। वेविष्मि। वेविश्वठ। वेवि च्छठा ना
मास्त्रप्येत्यनुदूत्वेऽनुनो वा द्वैर्न्ने। योयानि। नोनोति। जाहंति। जाहाति। जहान्मन्यासस्यनदीर्घ इति। केचित्। जहाति। जंहान्मस्य

गाहितश्च ऽपजमदहृदशेनिन्लोपि नोग्रहणाय यङ्लुकि न्लोपश्च देदधाति । न्लोपो वेनिकाविन । देदी दादि दसि दोग्ध्यापिस
मीति अत्वपक्षे । सो जो धि । अन्यत्र सारवधि ॥ ॥ नधातुलोपआर्द्धधातुके । धात्वंशलोपनिमित्ते आर्द्धधातुके परे तन्निमित्ते
गुणवृद्धी इको न स्तः । वेविदिता । मरीमृजिता । आर्द्धधातुके किम् । वेभेत्ति मर्मार्ष्टि ॥ उपधायां च लुकि ॥ अदुपधस्य
धातोरभ्यासस्य तुक् अनिकश्चीकप्रत्येके आगमः स्यात् यङ्लुकि । वर्वृतीति । वरिवृतीति । वरीवृतीति । वर्वर्त्ति । वरिवर्त्ति ५७
५७ वरीवर्त्ति ॥ ॥ अनत्व ॥ अदत्वधातोरनपि तथा । वर्कृतीति । वरिकृतीति । वरीकृतीति । वर्कर्त्ति । वरिकर्त्ति । वरीकर्त्ति ।
57 अनत्वे निनपत्वाद्धृदन्त्यस्य न । द्धवा कर्त्ति । गुणवद्धृद्धेवादिनिषेधोऽयपक्षश्च मम्रजीति ॥ यहा जर्हीति । टत्वघत्व
सुत्वटलोपाश्च जर्गाहि । केचिदिधात्निमित्तेसंप्रसारणं नेच्छन्ति । जाग्रहीति । टत्वघत्वष्टुत्वटलोपदीर्घाश्च । जाग्गा

द्दि। वली पश्वा। रा दैमे घस्मान पी। नं नो द्दित्वे। नुग्रि गादि। नर्गृ ठ श। जनि गृ ठ श। ऊनो गृ ट श। जृगृ हनि। गृ घु। जर्गृ थि
नि। जर्गर्षि। जर्गृ षात। गुणश। हल्वावि निलोपश। नप्स्या वश। जनृन्ववर्जे। वजर्ईवन। जजरद्दाम। वजर्गृ ठुश व
स्त्वे नि वा नुन्वम्। नोति। हलोपे दीर्घश्च। जर्घी श्वजघेन। इत्यादि प्रयोगानुसारात् ज्ञेयम्॥ वा॥ इति यङ्लुक्प्रक्रिया
॥ सुप आत्मनः क्यच्॥ एषि तु नात्मसीवेति न इ षि कर्मण श्च सु न न्नादि ह्लायो क्यच् प्रत्ययो वा स्यात्। सु पो धा न्त्वेति सु पो लु
क्॥ ॥ क्यचि च॥ क्यचि परे अवर्णस्य ई आदेशः स्यात्। धातुत्वात् ल्लआदयः श्वात्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति॥ ॥ वा
त्तापि प्रत्ययेण्यति। नाव्यति। व घ ति। मघति। युष्मघति। अस्मघति। हलिवा। गार्यति। द्योव्याति। अह स्पति॥ ॥ न
ङ्गेन श्च कर्वीयति। व्य श्चोख्व। गार्गीयते॥ ॥ नः क्ये॥ क्यचि क्यङि क्यपि पि परे नान्तमेव पदं संज्ञं स्यात्। नान्यत्। लोपश्

राज्ञीयति। नान्नमेवान्निनियमान्नेह। वाच्यति। अकृत्सार्वधातुकेति दीर्घः। कवीयति॥ ॥क्यस्य विभाषा॥
हलः परयोः क्यच्क्यङ्‌·अपीलोपो वा स्यात्। आर्द्धधातुके। समिधिता। समिध्यिता। मान्ताव्ययेभ्यश्च क्यच् ने-
ष्टः। किमिच्छति। उच्चैरिच्छति॥ ॥अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्द्धेषु॥ अशनायादयः क्रमाद्बु-
५८ भुक्षाद्यर्थे निपात्यन्ते। क्यचि। अशनायति। उदन्यति। धनायति। बुभुक्षादौ किम्। अशनीयति॥ ॥अश्वक्षी- ५८
58 रवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि॥ एषां क्यचि परे असुगागमः स्यात्। आत्मप्रीतौ। अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छा-
यां दध्नोऽश्वस्यति वडवा। वृषस्यति गौः। क्षीरलवणयोर्लालसायाम्। क्षीरस्यति बालः। लवणस्यत्यु-
ष्ट्रः। सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि लालसायामसुक् च सुग्वागमः स्यादन्यपरे। आदेशप्रत्ययेन त्वाव(?)षः। दधिष्य

स्यति। दृषस्यति॥ ॥काम्यच्॥ इषि कर्मणः सुबन्तादात्मेच्छायां काम्यच् प्रत्ययो वा स्यात्। काम्यचोऽस्यानुबन्धत्वेन
ह्रस्वानुकरणाभावादेव गुणाद्यभावे क्रियत्वप्रयोजनाभावात्ककारस्य नेत्त्वं। पुत्रकाम्यति। सोपदादौ। यशस्काम्यति॥ इण
ःषत्रासर्पिष्काम्यति। किंकाम्यति। स्वव्ययत्वान्न सः। स्वःकाम्यति॥ ॥उपमानादाचारे॥ उपमानात्कर्मणः सु
बन्तादाचारेऽर्थे क्यच् स्याद्वा। पुत्रमिवाचरति पुत्रीयति। छात्रं। विष्णूयति द्विजं। अधिकरणाच्च। प्रासादीयति।
कुट्यां॥ ॥कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च॥ उपमानात्कर्त्तुः सुबन्तादाचारार्थे क्यङ् स्यात्। सान्तस्य लोपश्च। त्रकसाघेयानुके
निरोधेः कृष्णश्वाचरति। कृष्णायते। राजायते। स्म्यानितोश्चेति पुंवत्। कुमारायते हंसी। ओजसोऽप्सरसो नित्य
मितरेषां विभाषया। सलोपः। ओजायते। अप्सरायते। पयायते। पयस्यते। सुपूर्वस्य मनसो नित्यं सुमनायते।
स्याचारे गल्भक्लीबहोडेभ्यः क्विब्वा। क्विपः सर्वस्य लोपः। गल्भोऽदेः काचापि न ङानौ। गल्भायते। गल्भते। इत्या

दिासर्वं चानिपादिकेभ्यः क्विनावान इत्येके। कष्णति। स्वनति। स्वामास। स्वीवकान। भृगादिभ्यो भुवश्चेलोपश्च हल
लः। भृशादिभ्यश्च अर्थे न वत्यर्थे क्यङ् स्यात्। न तु अन्त्रेभ्यः। अच्च न हल्लोपश्च। अभृशो भृशो भवति। भृशायते।
उन्मनायते। शश्वन्नाशश्वायते। क्विवप्यत्रेतिको विन। भृशति। पक्षे विशः भृशी भवति॥ ॥ लोहितादिडाज्भ्यः
क्यष्॥ लोहितादेर्डाजन्तात् च भ्वार्थे क्यष् स्यात्। पक्षे विशः। क्विविन्येके। वा क्यषः। क्यवैतान्यत्र स्मैपदं वा स्यात्। ५९
लोहितायति। लोहितायते। लोहितति। लोहिती स्यात्। वमीयति। वमीयते। वर्मति। वर्मी स्यात्। पटपटायति
५९ 59 पटपटायते। पटपटाति। पटपटी स्यात्॥ कष्टाय क्रमणे॥ चतुर्थ्यन्तात् कष्टशब्दात् उत्साहेऽर्थे क्यङ् स्यात्। कष्टा
य क्रमते कष्टायते। कत्रायत इत्येके। यत्र कत्र कष्टगहणम्यः पापविकीर्णायाम। सत्रायन इत्या
दि॥ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्त्तिचरोः॥ रोमन्थतपोभ्यां कर्मभ्यां क्यङ् स्यात्। क्रमेण वर्त्तिचरोरर्थयोः। रोमन्थ

वक्री यति। नोमेथायते गो। ष्ठ। हनुवल्लनपवानपमस्थपरस्मैपदे वा। नपस्ववनति। तपस्यति॥ वाष्पोष्मस्यामुद्वमने॥
वा। न्याय्यङ्स्या। उद्वमने। नाष्पमुद्वमति। वाष्पायते। ऊष्मायते। फेनायते। फेनाद्ब। चूर्मा। ब्रनिकेविन। शब्दवै
नकलहाव कण्वमेते न्यष्ठकारणे॥ दन्यष्ठकर्मेण्यष्ठ कृञर्थे क्यङ्स्यात्। यदिकानिशिद्वापनह्स्यादि। सुदिन दु
र्दिनना। हान्न्यष्वा। सुदिनायते। दुर्दिनायते। सुखादिभ्यष्ठकर्तृवेदना। पापा। दन्यष्ठकर्मेण्यष्ठ क्यङ्स्यात्। वेदयि
तुरनुभवेऽर्थे। सुखं वेदयते। सुखायते। दुःखायते। नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्। दन्यष्ठक्यच्स्यात्। कमेणपूजायां
परिचर्यायां आश्चर्ये लिखने योष्ठ। नमस्यति। वरिवस्यति। चित्रीयते। पुच्छभाण्डचीवरान्णिङ्स्यात्।
कृञर्थे। पुच्छादुदसने पर्यसने वा। उत्पुच्छयते। परिपुच्छयते। भाण्डात्समाचयने। संभाण्डयते। चीवराद्वर्जने
परिधाने वा। संचीवरयते। निकृष्टमुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृतत्तूस्तेभ्यो णिच्। दन्यष्ठकर्थ

निघ२

ग्रैतिवस्यानो। मुंडयति। खनाझो जनेन। निरस्यो ऽवपयः। पूठाशीवादनयति। वस्त्राछादने संवस्त्रयति। पा। विध

वस्त्रौदिके स्या॥ इवेयथावा॥ निपादि कस्पपुवक्षावानावटिलोपविण्मनुस्रोपययपा॥ दिलोपघस्याघादेशा ४

मुञ्मवदणावपीन्वथेष्ठाडल्गिकलिंगढ्लानि। स्रवणाविपनन्वाहदौमन्वीटिलोपदा हलयति। महद्वजैहुलि ३ क

लयति। अघडिश्लोपिन्वामावरव्रदद्ग्रावेप्रावहलकलेन्यदवमिर्दरष्टिन्मान्वकलनाग्रजहलनाङ्कयति।

६० स्ववकृतेन। नूस्वानिविहन्ति। वितूस्रयति। सत्यापमावश्रेतिणिवा। अर्थवेद सत्यानो पुग्वा। अशसत्यपासोसत्या। ६०

पयति। ब्रूधापयति। विदापयति। पाशाद्विमोचने। विपाशयति। तूपेपरपाति। निरूपयति। वीणायोपगायति। उ

पवीणयति। तूलैरवकुष्णाति। अवतूलयति। श्लोकेरुपस्तौति। उपश्लोकयति। सेनयाभियाति। अभिषेण

यति। अभ्यषेणयत्। अशोपदेशस्यापि स्यादिति नियमात्। असमासे वा यपि बद्धी। अपनिषेणयिषति। ले

मान्यनुमार्ष्टि। अनुलोमयति। त्वचं गृह्णाति। त्वचयति। वर्मणा सन्नह्यति संवर्मयति। वर्णं गृह्णाति वर्णयति। चू
र्णैरवध्वंसनेनाववचूर्णयति। हस्तिनातिक्रामति। अतिहस्तयति। हस्तौ निरस्यति। हस्तयते इति केचित्। नानच्
नातिन हाव क्ष शनिवुना हित्वा नसुवन्ना। णिच्। वर्षि कोन्यावक्षेवाप्सयति। मुण्डान्तुल्यान् स्वपनस्थ कार्विप द्धि
वाश्वाव क्षेदक्षामत्यौ टिलोपश्च। कवयति। पटयति। वडिश्च नङ्लोपित्वा सन्दष्टा वश्चश्ववीकवताश्चपापटन्।
श्वाख्यानात् कृतस्तद्वावक्षे तल्लुकृप्रकृतिप्रत्ययापत्तिश्च प्रकृतिवच्च कारकम्। केशवधमाख्यानमाचष्टे
केशीबानयति। वल्लिं वेषयति। ढदिमाव क्षेदुदयति। वडि हित्वं प्रति दन्वादीनामति द्वन्द्वो सन्निक्ष्वत्रस्यहूर्ति
इन्प्रस्य हित्वी। हलादिशेषश्च। अजिदन्। दीप्तस्य हित्वमिति दुर्गगुप्ता दयश्च। अजि दन्। उदमावक्षे। उदयति। अजि
दन्। स्वल्लोपस्य स्थानिवद्भावादिन्य हृयपृस्य हित्वाव अजदादिति काशिकायाम्। अड् दहिन्यन्यो। प्रकृतेर्

वर्हहिपुगागमो। म्लापयति। डुक्ष्वन्तुवम्नावक्ष्यनीमावक्षेपनयति। मानुवइत्तितुत्वीमपयति। स्थूलदूरेतियण
दिलोपक्षाम्यवयति। विपाश्विनेतिवाद्यश्च। प्रियमावस्ले प्रापयति। मावयति। संज्ञापूर्वको विधिरनित्य इतिनो
पवाहद्विटाक्नयति। विन्मतोर्लुक्। स्राग्विनं स्रजयति। इष्णमानं इशयति। त्वचयति। स्वेनाश्वाश्वनरगालोडि
नाक्तकेणामश्वननेतकलोपश्च। स्वेतयति। अश्वयति। गौलोडयति। वाक्तनयति। कण्वादिभ्यो यक्। की
६१ डूम इत्यादिभ्यो यक् कण्वमय इस्मात्कम्रर्थे। तानवश्चानिपदिकानि वेत्ति कण्वादयो हि विवाध कीडूको ६१
ति। कीडूयति। कीडूयते। हणीङ्‌हणीयते। महीङ्। महीयते इत्यादि। धर्मेनासनं। नामवनात्यये सीदिन्नवक्र
कमा। पुपुत्रीयिजति। पुत्रिवाधिजति। पुत्रीयिषियति। पुपुत्रिवायियिजति। अजादेर्द्वितीयस्य द्वितीयमञ्च
शिरवायिजति। अश्वायियिजति। चारीश्वीयिषियति। पवर्गयोगे नदराश्मान्निनअभ्यादेर्व नाहिती।

इन्द्रिञ्झायि विजति । इञ्झायि विपि बति । केञ्झा इञ्झुनी यस्पे वा केञ्झूयि यि पति । णिङ् श्मन । विकाम यि षते । ञायायाद्विचा
ना । विद्वमिषते । यङ्सन्नुन्यें ज्ञात्मन । वो मूयि यपि जनि ॥ इत्यादि ज्ञेयम् ॥ वा ॥ इति नामधातुप्रक्रिया ॥ स्वेत्तु
पनाभ्यां कुर्म था । त्वाभ्यां कुर्मश्च परस्मैपदं स्यात् कर्तृगे फलेऽपि । गोपनादावपि । स्वतुकतोनि । पना । कनोति । स्वमिषु
व्याति भ्यश्च क्रियश्च क्रिपश्च कर्तृगे फले परस्मैपदं स्यात् । नाचामित्क्रिपति । एवं घ्नति क्रिपति । ञाहदृश्च घ्वर्हति । पने
र्नेइश्च पति मृष्यति । वहेरपि । पारिवहति । व्याघ्रति स्यात् मश्च । विरमति । आरमति । परिरमति । उपाच्च । उपपूर्वी
इन्तेः कर्तृगेऽप्यर्थे परस्मैपदं स्यात् । यज्ञदत्तमुपरमति । उपरमयतीत्यर्थः । विभाषाकर्मकात् । उपाद्रमोऽक
र्मकात् वा परस्मैपदं स्यात् । उपरमति । उपरमते । निवर्तत इत्यर्थः । बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः । एभ्यो णेः
पूर्वमविद्य वर्कर्तृकेभ्योऽचलनार्थेभ्यो ण्यन्तेभ्यः परस्मैपदं स्यात् । बोधयति । पद्मम् । योधयति काष्ठौ । नाशय

ति। ऊनयति। ज्ञापयति। घ्रापयति। ह्वापयति। ध्मापयति॥ निगरणचलनार्थेभ्यश्च॥ अणौ सकर्मकेभ्यश्च विवक्
क्षैकेभ्यः विप्रत्ययनकेषु न। अर्थेभ्यो ण्यन्तेभ्यः कर्तृफलेऽपि परस्मैपदं स्यात्। भोजयति। चालयति। अत्रैवाङ्गिनेयथ
इयते॥ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्॥ तत्पूर्वमकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकान्ण्यन्तात्परस्मैपदं स्यात्। शेते कृष्ण
स्तं शाययति कृष्णं गोपी। अकर्मकात्किम्। न किं कारयते। चित्तवत्कर्तृकात्किम्। शोषयते व्रीहीनातपः। अणौ किम्
६२ 62 तूष्यन्तं प्रयोजयति तूषयते हरिः। न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः॥ सूत्रद्वयोक्तं नैव एभ्यः पिबा
दिभ्यो ण्यन्तेभ्यः कर्तृफले परस्मैपदं न स्यात्। पाययते। दमयते। आयामयते। आयासयते। परिमोहयते। रोचयते ६२
ते। नर्तयते। वादयते। वासयते। वेदो धेट इति वक्तव्यम्॥ धापयते। अत्र कर्तृफले परस्मैपदं स्यादेव। सोमं पाययति
पाजकः॥ कर्तरि कर्मव्यतिहारे॥ धातोः कर्तर्यात्मनेपदं स्यात्। क्रियाविनिमये। व्यतिलवते। रनसोनल्वोपथश्च

निघ्ने। व्यतिघाते। व्यतिघ्नते। नासस्मोदिति मन्लोपश्च। व्यतिसे। घिवा। व्यतिषेवाः। हपनि। व्यतिहे। व्यतिजीन। व्यत्य
से। व्यत्यास्म। व्यत्यास्म। व्यतिनाते। व्यतिनाते। व्यतिनाते। व्यतिनासे। स्वल्लोपपके। व्यतिरे॥ इड्नौर्द्धे वा। धा
दिल्वा कृते द्विवे। व्यतिजज्ञिषे। व्यतिजग्निषे। व्यतिजज्ञिध्वे। व्यतिजज्ञिध्वे॥ न गतिहिंसार्थेभ्यः॥ प्रत्यक्षकिय
विनिमये परस्मैपदं स्यात्। व्यतिसर्पन्ति। व्यतिघ्नन्ति। हसादीनां चि। व्यतिहसन्ति। प्रत्वेष्टन्यपदा। हन्ते
र्निषेधः। सोप्रहन्ते। व्यहे। नेनिषेधनि केविन। व्यतिवहे॥ इतरेतरान्योन्योपपदाच्च॥ अन्योन्यं युक्ता
न्ति। पाविनिमये शेषदिनात्मनेपदं स्यात्। इतरेतरस्य अन्योन्यस्य वा व्यतिलुनन्ति। परस्परस्योपपदा। पर
स्परस्य व्यतिलुनन्ति॥ नेर्विशः॥ निपूर्वाद्विशः आत्मनेपदं स्यात्॥ निविशते। पाति व्यवेभ्यः क्रीञः॥ परस्य चक्री
णाते जनानो ग्रथः हामपपार्दनामात्मनेपदं मकर्त्रभिप्राये। परिक्रीणीते। पदीत्र वा॥ विपरा भ्यां जेः।

विजयने। पनः ग्यने।। आङो दोनास्यविहरने।। आङ्पूर्वो दान स्वात्मनेपदं स्यान। न तु मुखप्रसारणेर्थे। आद
ने मुखप्रसारणं तु। व्याददाति मुखं कृष्ण श्मुखप्रसारणं सहशाद विन। विपादिकां व्याददाति। स्वाग क
र्णं कादवनिपष्ठ। नेह। व्याददे पिपालिकापतंगस्य मुखम्।। कीडो ऽनुसं परिभ्यश्च।। एभ्यः क्रीडस्तङ् नास्त्र
मनुक्रीडते। एवं संपरिवका नादाडोऽपि। आक्रीडते। अवादिति किं विनाय वक्रीडते।। समो ऽकूजने।। संक्रीडते। कू
६२ जने तु संक्रीडनि चक्रो। आगमे क्षमायाम्। आगमयते। आपितिनाथथ। सर्पिषो नाथते।। ने गत्यनुकाने ६३
63 पेत्रिकमनुहरते ऽश्ववश्च। किरते ऽर्षं जीविकाकुलायकरणे ष्वात्मनेपदं स्यात्। अपाच्चतुष्पात्कुनि व्यालेखने
। अपाल्किरते ऽश्पु दस्मात् वतुश्पाच्छकुनिकर्तृके आलेखने ऽर्थे अपा स्किरते हृष्टो हृष्टः कुक्कुटो भक्ष्यार्थी।
श्वाश्रयार्थी वा। अन्यत्र मल्लो पकिरति। गजो पकिरति। नथ आङि नुप्रच्छोः।। लिश आपृच्छते। आपृच्छते। आप

३पालीने। विज्ञायशपने। समनवप्रविश्यऽ। पन्यस्त्रिघने स्वजनोऽस्वथ। सेनिघते। समस्थितेन। एवेश्वनप्रविश्वा
ऽ-इघ्रतिज्ञाने। नित्येशहमानिघने। प्रकाशनस्थेपारव्ययोरव। स्वामिप्रायो। विष्कारणो। निर्न्नेत्रारव्यायाव
त्यघ्रजनोऽस्वथ। कण्डायनिघनेगोपा। त्ययनिघनेविवादइथ॥ उदोःनूर्द्धकर्मणि॥ उदुस्त्रिघनेस्वजनोऽस्व
थश्वनूर्द्धक्रियायामा। उदइहायां। मिष्ठिश। मुक्तावुन्निघनेजनथइहायां। किमायामा। कनमुन्निघनेत्वनूर्द्ध
क्रियायां। किमायासनादुन्निघाति। उपान्मेचकरणे। उपाक्वस्वजनोऽस्वोमेचेकरणो। गायत्र्योपनिघने। अ
केम। उपाद्देवपूजासंगमैत्रपाथिप्वितिवा। अस्म। विष्णुमुपनिघने। गणुनागेगामुपनिघने। सत्रमुपनिघने
गंगामुपनिघनेपेथाश। लिप्सायांवा। मिक्षुर्चाप्रिकमुपनिघने। उपानिप्वतिवा॥ त्वकर्मकात्॥ उपपूर्वा
न्निघनेनकर्मकान्नजनोऽस्वथ। ज्ञानमुपनिघने॥ उदिम्योनपश॥ वाम्यामकात्वपदश्राग्वत। उन्नपते। विन

नयते। आत्मीगकर्मकाबोलिथउन्नयते विनयते पालीः कर्मकाद्व्यागकर्मकान्किमाम होंखावेन पन्न क्रिया।
स्वाङ्गयमहनश्च॥ आङ्ङपराभ्यामकर्मकाभ्यां नङानोस्त्र थस्वायच्छते आहते। आ च्छते। आत्मीगकर्मकाभ्यां व
आयच्छते पालिः आहते शिरः श्ङनश्चसिवकिन्॥ हन्ते स्परश्च सिवकिस्यात्। किञ्चाऽरनुनासिकलोपश्चाक्रस्वा
६४ देशा नाश्चाहत। आहसातान्। आत्मनेपदे व्वन्यतनस्याम॥ हन्ते र्येवादयोवास्यात्। आत्मनेपदे लुङिआवाधि
षा॥ यमोगन्धने॥ सूत्रनार्या यमः सिवा किस्यादात्मनेपदे लुङ्। उदायत। कर्मकाभ्याम आगकर्मकाभ्यां
किम। यत्तु माहहविः। परागिनस्वायच्छति॥ समोगम्मा क्षिप्राकिरयवरस्यात्वेचुविदिश्यश्च॥ एभ्यः सपूर्वेभ्योऽकर्म ६४
केभ्यस्त्वङानोस्वक्षसंगच्छते॥ वागमश्च। गमश्च परो लिङ्सिवा किनोवा स्वश्च आत्मनेपदेषु। तनुदात्तोपदेशे
निपलोपः। समगनामपगं स्त्र। संगंसीला। संगसीष्ठा। समपृच्छते। संपृच्छते। संस्वरते। समपृच्छतेसत्रीन्यः।

समानन। समानेनामासीरत्पुते। मीविव्रे। विव्रेर्बिमा। जावव्रेः पनस्य कादेशस्यात्रो नु उ आगमो वा स्यात्। नासीविदते। सी
विदते। दशेश्चेक्रव्यी। च कर्म केभ्यः किम्। गंगा संगच्छति॥ निसमुपविभ्यो ह्वः॥ अकर्मकादिति निवृत्तौ। एभ्यो ह्वे
ः प्राग्वत्। निह्वयते। एवं सी उप। वि। उपसर्गाद्स्यत्यूहोर्वा वाच्यम्। निरस्यति। निरस्यते। समूहति। समूहते
उपसर्गाद्धस्वत्ुहतेश्च॥ उपसर्गात्परस्या नाद्धहतेः स्वरस्यात्। मा दोऽक्षिणि। व्रूसमुत्स्यात्॥ स्पर्धायामाङः॥ आङो
ह्वेः प्राग्वत्। मल्लो मल्लमाह्वयते॥ गंधनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नोपयोगेषु कृञः॥ दि
शामकसूचननिर्भर्त्सनादौ वक्तव्यः पूर्ववत्। उपकुरुते। श्येनो वर्तिकामुपकुरुते। विष्णुमुपकुरुते। परदारान्
पकुरुते। एधोदकस्योपस्कुरुते। गीनाः प्रकुरुते। शतं प्रकुरुते। धर्मार्थं विनियुंक्ते इत्यर्थः। स्व येः प्रसहने। स्वये
गनोः स्वरशास्त्रात्। दैन्यान् पि कुरुते। विष्णुश्च। वेदस्याहमकर्मकाः॥ यद्दकर्मकात्कर्तृपदं स्यात्तस्मात्। हिंदूषी कर्मणः प्राग्वत्। सं

गान्विकुरुते॥ अकर्मकाच्च॥ विःशब्दः कर्मकाच्च था॥ वायुर्विकुरुते॥ यद्यकर्मणः कर्मकात्किम॥ विक्री विकरोति कामः
नीमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः॥ पूजनोन्नेपणादौ नीनयः ज्ञानोत्सवभयाद्वे नयते
ऽउपनयते। पुत्रमुपनयते। पदार्थान्नयते। मन्त्रमुपनयते। करं विनयते शतं विनयते॥ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि॥
नियः कर्तृस्थे चामूर्ते कर्मण्यात्मनेपूर्वं वदा क्रोधं विनयते। कर्तृस्थे किम। गुरोः क्रोधं विनयति। अमूर्ते किम। गण्डं वि
५५ नयति॥ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः॥ क्रमः स्वरतो वृत्तिः अप्रतिबन्धः शास्त्रेष्वस्य क्रमते बुद्धिः। सर्गः उत्साहः व्याकरणाय क्रमते स ५५
र्गः। ... क्रमते॥ उपपराभ्याम्॥ वृत्त्यादिष्वेव क्रमस्त्रगनो ष॥ नान्योपसर्गात्। उपक्रमते। पराक्रमते। व्या
किम। संक्रामति। वृत्त्यादौ किम। उपक्रामति॥ आङ उद्गमने॥ आङः क्रमः ज्योतिरुद्गमने क्रमते सूर्यः॥ ज्यो
तिरुद्गमनइति वाच्यम्। नेह। आक्रामति धूमः॥ उद्गमने किम। समाक्रामत्न्य क्षे॥ वेः पादविहरणे॥ वेः क्रमः साधु

ग्ने॥ पादविहरणेऽर्थे। साधु विक्रमते वाजी। पादेति किम्। वाजिना विक्रामति॥ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्। आभ्यां
तुल्यार्थाभ्यां क्रमस्तङानौ स्तः। क्रियारंभ एवानयोस्तुल्यार्थता। भोक्तुं प्रक्रमते। उपक्रमते॥ अनुपसर्गाद्वा॥ क्राम
ति। क्रमते॥ अपह्नवे ज्ञः॥ ज्ञानातेस्तङानौ स्तः अपलापेऽर्थे। शतमपजानीते॥ अकर्मकाच्च॥ अकर्मकाज्जा
नातेस्तथा। सर्पिषो जानीते। सर्पिषा उपायेन प्रवर्त्तत इत्यर्थः॥ संप्रतिभ्यामनाध्याने॥ आभ्यां ज्ञस्तङानौ स्तः। अ
नोत्कण्ठे। संजानीते। प्रतिजानीते। अनुत्कण्ठेति किम्। स्मरति जानाति॥ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमंत्रणेषु
वदः॥ भासनसान्त्वनादिषु वदस्तङानौ स्तः। शास्त्रे वदते। भृत्यानुपवदते। पाणिनिर्वदते। क्षेत्रे वदते। विवद
न्ते शिष्याः। अथ परदारानुपवदते॥ व्यक्तवाचां समुच्चारणे॥ मनुष्याणां सहोच्चारणे वदेस्तङानौ स्तः। संप्रव
दन्ते द्विजाः। व्यक्तवाचां किम्। संप्रवदन्ति खगाः॥ अनोरकर्मकात्॥ व्यक्तवाग्विषयादनुपूर्वाद्वदेस्तङा

श्रेनुबन्धे नेकर्तृकलापस्य ॥ विनाशे विप्रलापे ॥ नृणां विमतिसंवादे क्रीव्यामिश्रणो वदेश्चात्मनेपदं ॥ विप्रवदन्ते विप्रव
दान्ते वा वैद्याः ॥ अव वा ग्रः ॥ अव वा जिनते ऽप्रज्ञाने ऽप्यर्थः ॥ अवगिरते ॥ समः प्रतिज्ञाने ॥ संपूर्वो गिरते ऽपूर्ववत् ॥ घनित्य
धाम ॥ शतेसीगिरते ॥ उदश्चरः सकर्मकात् ॥ उत्पूर्वाच्चरते ऽज्ञाने ऽप्यर्थः सकर्मकाद् धर्ममुच्चरते ॥ उत्क्रम्य यान्ति अर्थः ॥ स
६६ कर्मकात् किम् ॥ धूममुच्चरति ॥ समस्तृतीयायुक्तात् ॥ संपूर्वाच्चरतेः प्रागुक्तात्तृतीयायां योगे ॥ अश्वेन संचरते ॥ दाणश्च सा चेच्च ६६
तुर्थ्यर्थे ॥ संपूर्वाद्दाणस्तृतीया चतुर्थ्यर्थे तृतीयायां योगे ऽन्यतो ऽप्यर्थः ॥ दास्या संयच्छते कामी ॥ समइति किं न भवत् त्वान्त्रेण व्यवधा
ने ऽपि ॥ दास्याः संप्रयच्छते ॥ चतुर्थ्यर्थे किम् ॥ दास्याः संप्रयच्छति भिक्षाम् ऽनिन्दे ॥ उपाद्यमः स्वकरणे ॥ उपपूर्वाद्यमो
विवाहे ऽर्थे ऽन्यतो ऽप्यर्थः ॥ भार्यामुपयच्छते ॥ विनापि पपमने ॥ विवाहाभावे घमश्चसि ज्ञा किं स्वात्राश्चान्यान्ने पदं
स्नुनामस्य ॥ नानुपायन ॥ उपायस्य वा ॥ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ॥ एभ्यः सन्नन्तेभ्यो ऽन्यतो ऽप्यर्थः ॥ जिज्ञासते ॥ शुश्रूषते ॥ दि

इत्यतो युक्तेर्णितो॥ नानोर्ज्ञः॥ अनुपूर्वो ज्ञ इत्यस्मान्नात्मनेपदम्। अनुजिज्ञासति पुत्रम्॥ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः॥ प्रत्याभ्यां
परतो नेः सनन्तान्नात्मनेपदम्। प्रतिशुश्रूषति। आशुश्रूषति। इह सर्वत्रोपसर्गग्रहणात्कर्मप्रवचनीयादात्मनेपदि-
गे प्रतिशुश्रूषते॥ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु॥ प्रोपाभ्यां परादयज्ञपात्रविषयाद्युजेरात्मनेपदम्। प्रयुङ्क्ते। उपयु-
ङ्क्ते। स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वाच्यम्। उद्युङ्क्ते। वियुङ्क्ते। यज्ञपात्रेषु तु द्वन्द्वं युनक्ति॥ समः क्ष्णुवः॥ संक्ष्णुते शस्त्रम्॥ भुजोऽनवने॥
भुजस्तस्मादनवने आत्मनेपदम्। भुङ्क्ते। पालने तु महीं भुनक्ति॥ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्त्तानाध्याने॥ ण्य-
न्तादात्मनेपदम्। अणौ यत्कर्म स एव ण्यन्ते कर्त्ता चेन्नाध्याने। पश्यन्ति भवं भक्ताः। दर्शयते भवो भक्तान्। स्व-
यमेव। इह कर्तृस्था क्रिया। तेन कर्मवत्कर्मणेति कर्मवत्त्वाभावादात्मनेपदमप्राप्तं विधीयते। अणौ यत्कर्म णौ
चेत्कर्त्तेति किम्। दर्शयति भवं भक्तान्मन्त्रिः। अन्यथेत्थं मन्यते भक्तान् हन्ति। गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने॥ ण्यन्ता-

भ्यामान्धीतङानोस्तश्चपनारणेः र्घीविडुगार्द्धपतेर्विवयते। पलेननोकिम। स्वानेगद्वयति। अहिविवेदपाति॥ मिथ्योपप
दात्कृञोऽभ्यासे॥ मिथ्योपपदात्कृञानोस्वतश्चभ्यासेपदं मिथ्याकारयते। सोपदवानस्वनाहिदुष्टमस
कृदुवानयतीत्यर्थः। मिथ्याकिम। साधुपदं कारयति। अभ्यासेकिम। सकृत्पदं मिथ्याकारयति॥ अपाद्वदः॥ अ
पपूर्वाद्वदस्तङानौ स्तः। कर्त्तृगेक्रियाफले। न्यायमपवदते। समुदाङ्भ्योयमो ऽग्रन्थे॥ एभ्योयमस्तङानौस्तोऽनुग्रन्थे
६७ कर्मकात्। कर्त्तृगेफले। संयच्छते। उद्यच्छते। आयच्छते। आयामित्र नत्त्वौ। ग्रन्थेतु। वेदमुद्यच्छति॥ अनुपसर्गाज्ज्ञः॥ अ ६७
नुपसर्गाज्ज्ञानातेः कर्त्तृगेफले क्रियाफले नङानौ स्तः। गां जानीते। अनुपसर्गात्किम। प्रजानाति। कर्त्तृगफलेकिं
परस्यगांजानाति॥ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने॥ कर्त्तृगेफलेपदात्मनेपदं विहितं न तदुपपदेन घोत्येकर्त्तृगे
फलेवास्यात्। स्वंयज्ञंयजति। स्वंयज्ञंयजते। एवमन्यत्र॥ १॥ इत्यात्मनेपदपरस्मैपदव्यवस्थाप्रक्रिया॥ १॥

भावकर्मविवक्षायां कर्मणि वेनिदत्तउदयथलष्यन्ति वादयः ॥ भावकर्मणोः ॥ भावकर्मणोर्विहितस्य लस्यात्मने
पदं स्यात्सर्वत्र ॥ सार्वधातुके यक् ॥ भावकर्मवाचिनि सार्वधातुके परे धातोर्यक् स्यात् ॥ भावकर्मवाचिनि सार्वधातुके । भावे वाच्ये धात
स्यकर्मकादप्रत्ययः कर्तव्यः । कर्तुरविवक्षितत्वात् कर्मणि वा ॥ त्वया मया अन्यैश्च भूयते । भूयते । भूयन्ते । अनुभूयते
कर्मकारकमुपसर्गवशात्सकर्मकत्वात् । तत्कर्मणि लकारः प्रथमपुरुषैकवचनं कर्मणि नद्वितीया ॥ अनुभूयते आनन्द
स्त्वया मया वा ॥ अनुभूयते ॥ अनुभूयते । अनुभूयसे । अनुभूयेऽहं त्वया । अनुभूयावहे । अनुभूयामहे ॥ विण् ॥ भावकर्मणोः
यात्मनेपदं चिण्वदिटा । भावकर्मवाचिनि तङ्प्रत्यये परे । णिन्त्वाद्वृद्धि अस्य भाविष्यते भावितानि ॥ उपसर्गस्य
पुरस्तात्सिद्ध भावकर्मणोरुपदेशेऽजन्तहनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् ॥ उपदेशेऽजन्तेभ्यो हनादेश्च परे भावकर्म
णोर्विहितानां स्यादीनां चिण्वदिड्वा स्यात् स चिण्वद्भावः ॥ चिण्वद्भावाद्वृद्धि अन्यत्र भाविता ॥ अन्यत्र भवि

नाम्नः। स्तुभूवे। माविना। मविना। माविषीष्ठा। नविणा। ह्वा। माविष्यते। नविष्यते। अमाविष्यत। अमविष्यत। अक्रम
धेयानुकम्पोद्दीर्घश्च सूयते विष्णुश्च अस्ताविं। अस्ताविषा नाम्ना। अस्तोषाता नाम। हरि ह्रौपक्केन। नुष्टुवे। स्ताविना
स्तोता। स्तोषीष्टा। स्ताविणी स्ता स्ताविष्यते। स्तोष्यते। गुणो वृत्ति गुणश्च स्मर्यते। अर्पते। सुदो वहिरिगत्वात्तु गुणः
६८ निमादेयश्च लेक्रियते। लोपभयस्यते। इदि त सुनन्यते। सेधमानणी। इष्यते॥ अयङा कपिकुतिरायते।
ननेति तेषीकि। ननानेनाकानो। न्वाद्देयाश्च स्याघाकिवा। नायते। तन्यते। पविमाला। ऊपते। ऊन्यते। नपानुनाये
वानयतेश्च क्षेविण नस्यान। कर्मेकत्रे पिनुता पेवा। चन्द्रन स्रपापिना। धुमास्यते। नीदायते। एराञ्चादिरिन्वा ६८
भावाहान्तीजले। स्वानोयुक्तविण स्नेथ चाद्रवा। नाधुगागमक्ष्मानृविणि स्निति कानिवा। अदायिवादिपा
नामाक्षराविआना माहायिष्यते। हास्यते। हन्यते। हो हवेतिनि कुर्वं। अविष्यलोनिस्तुके हेनस्तोना। अवानि। अ

श्चवानि णानाम । श्वहसानाम । पञ्चेवषाद्देशाश्चवषिश्चवषिणानाम । गृह्येने । श्चयाहि । विलवदिरोनदर्हेल्वामि
हलम । श्चयाहिषानाम । श्चयहषानाम । हृपाने । श्चदर्शिश्चदर्शिणानाम । सिवः क्लिवादशान्ताश्चदृक्कानाम । लि
लोपश्च यम्यनेमोहोमुकुन्दे न ॥ विमामुलोदीर्घो । न्यननस्यामृ । विल्पनेणमुल्मवणो मिनामुपयादी
र्घो वास्याश । ह्रिनायणिविदीर्घ विवोन्वगादेशो नस्यानिवद्दिनिषा । क्रिकदीर्घार्थे दीर्घो क्रिकस्वो क्रावाघाणि
लोपस्यस्यानिवत्वान्या । क्रिक उपधाया ह्रस्वो नस्यात् । चाशमि । श्चशामि । व्यक्तन्वेनाऊन्त्वाद्विषदादि ।
नस्यासिद्धवद्ध्वानवोदिदि तिलोपेधुनिश्चासिद्धत्वात् लिलोपश्च । श्चशमिषानाम । श्चशामिणानाम । विल्वादि
ऽभावो । श्चशमपिषानाम । ण्वन्त्वानावेशाम्पने मुनिना ॥ नोदात्तोपदेशस्यमान्तस्यनावमे ४ ॥ मान्तस्यापे
द्द उपधाया दीर्घो न स्यात् । विणि । श्रोन्तनिवानत्वावामेष्टश्चशमि । श्चदमि । श्चनावामेश्च क्रिम । श्चावामि । श्चवामि

कामिवमामिनिवक्तव्यं।अवामि।अकामि।अमदवम।विस्मविनिकोविन।आमि।अमि।नमाख्यागे।अवामि
अवमि।असामि।व्यस्मि।वयहिंसायाम्।जानिवक्त्योदनि न हृद्धिश।अवधि।जायोविविण।कुमुड्नुक्ते
धुद्धिथ।अजागानि।ण्यन्नाक्तागर्व्वेविण्मुलोर्षौहृद्धिनिनि कविन।अजागनि।अजागानि॥मकेरवणिवि॥म
ओर्नेलोणोवास्याविणि।अमागि।अमाक्ति॥विमाबोविणमुलोउ।लमेर्नुमागमोदास्यानुविणमुलोश्पनःर
६९ अलेमि।अलामि।अवास्थिनविकल्पानशादेर्न्नित्यमानुम।घालेमि।पदाकर्मकर्तृत्वेनविवक्ष्यतेनदासक ६९
69 मिकानामप्यकर्मकत्वात्कर्त्तरिमावेवलकारथ।कर्मवत्कर्मणातुल्यक्रियश।कर्मस्थयातुल्यक्रियश्कर्त्ताक
मेवत्स्यात।कर्मवत्वात्यककृस्रोऽमनेपदविणा।विणवदिटश्सुथउकीव।क्रियमाणोवुयत्कर्मस्वयमेवक्रामि
ष्यति।मुकरेस्त्येर्गुणपेन्मात्कर्मकर्त्तरिनिनाद्धिदुःपनत्वाख्यपिश्च।ध्वेकर्मकर्त्तरि।कैयरवाख्यअकर्त्तरिकामे

ण्यन्तु हन्त्रौ गेणात्कर्त्रैवानि पुनः कर्त्तृग्रहणात्कर्त्रैव यः कर्त्ता न च परस्मैपदं न कर्म कर्त्तरि। भिद्यते काष्ठं स्वय
मेव। अत्र कर्त्तुः प्रियो कर्त्ता प्रथमा। गर्भेदिप्रमृतेऽदं नः स्वयमेव। अपादि। यद्यानावेलकारस्त्रदाकाष्ठात्क
र्त्रैविनूनाया॥ लानुहन्त्रेभिः वाक्यस्यैव कर्त्तुः कर्मवत्त्वं। नेनाच न द्वितीया। भिद्यते काष्ठेन। न परस्मैपदं कर्म क
र्त्तोः। न पदं कर्मकस्यैव न पदं कर्त्ता कर्मवत्स्यात्। न प्येनेन परस्मैपदं। न प्राग्जेयनीन्यर्थे यन दानुनापदेवेति कर्म
कर्त्तरि विधानं। अन्न गनं पदं कर्मेति किम्। उन्नपति सुवर्णं सुवर्णकारः। स्वस्यार्थं कर्त्रैकास्मृतो यक्कर्त्तरि। नि
कविनाभिद्यते वृजीमक्कः। अत्र समाज्ञि॥ कृषिरंजोः। प्राचांस्यन परस्मैपदं च॥ अनयोः कर्मकर्त्तरि स्यन परस्मै
पदे वा स्वतः। कुष्यति। कुष्यते वा पादः स्वयमेव। रज्यति रज्यते। अन्वास्थि न द्वि कल्पन्त्वा न त्वार्द्धधातुके। नात्र कोऽपि
प्रेतान्ज्ञि॥ अत्र कर्मकर्त्तरि॥ अनन्तारञ्जेष्विण्वास्यात्। कर्मकर्त्तरि न शब्दः। अकारिच्छलन्। दुहत्वा। अदोहि

ष॥ न तु यत्॥ तुवस्त्रेः कर्मकर्त्तरि चिण्ना। अनु दुहपवदुहान्नां द्विकर्मकानां कर्मकर्त्तान कर्मवदिति केचित्॥ विनो निष
जौ फलानि स्वयमेव। द्विकर्मकाणामपि बहुलं ... कर्मकर्त्तरि चिण्णेति केचित्। अपक्वाग्रटफली। अदुग्ध गौ दुग्धा।
॥ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ॥ एषां कर्मकर्त्तरि यक्चिणौ न स्तः। दुहेरनेन यक् निन्दा निषिध्यते। विनम्रायपलावि
कल्पितं न च दुग्धा। स्नुते। नित्वादयानानिषेध इति केचित्। अन्नमावि ष्ला। नुकमा पितिनेदाश्रस्नोस्ता। नमते। अनंस्त
१० ॥ पोरवधियर्थेधिनुनान्मनेपदाकर्मणाय कादिणो नाकारयते। ण्यन्तात् कर्मकर्त्तरि न इति केचित्। स्ववाकार १०
य कारयिष्टा। स्वकारि ष्ट ... नथ्यो नेप्स्वसोथिस्ता नथ्यो नेप्सु यो धिष्ठा। बूते स्वयोवा। च्याहते। च्याहत। आयाति ष्ठ
ष्वावविष॥ करिसतु आर्थेम्यश्मनत्वा श्रयक्चिणौ न। विषयेस्वावनर्मा विण्वाद्दिदपिने निकादि॥ केरते। स्वक
र्णी। गिरते। अगीर्णी। स्वयते। अस्वपिष्ट। नैसते। अनैसिष्ट। विक्रीणीते। अविक्रापिष्ट॥ ण्यादयो णुवनि

कर्मगत्यर्थामुख्यकर्मणि। घत्यर्थयान्निदुलोदिगो। गोहन्येतुमथानुवि॥ निन्येविगमगागनिनजनिमगादिय
दमयाविसंनोगी। गोपीहावमकार्यनभावश्वेनामनन्वेन॥२॥ ५॥ ॥इतिभावकर्मप्रक्रिया॥ ५॥ ॥अमिहावबने
न्ट्ह॥ मतिपर्यापयानुयोगेभूतानघननेवानोलेंस्मान। स्मरसिहछ्गोकुलेवत्स्यामः। यहछ्हयोगेनायद्भु
केपागुकेंन। अमिगानामिकृष्णपदनेःभुक्ष्माहि॥ विमाषासाकाले॥ यछ्हेनयोगेःयोगेःपिउक्रोःर्येलृद्व
सान। लन्पलजुणसंववेप्रयोकुताकोज्ञापी। स्मरमिहष्णवनेवत्स्यामः। नत्रगाश्वानयिष्यामः। वासो
लन्लमःवारलिन्य। पक्रेलङ्। पवेयबद्दृ। पनोक्रेलिटावकारःउन्नमपुत्तुपेवेदिन्यान्यनोक्रे। मुवोःः
लविलला। पाअर्थनापक्रवेःपिलिटानाहकालिगेजगाम। हशश्वनोलेङ्वा। चाम्पीपागोलिङ्पयेलङ्
स्यानालिङ्। इनिहाकनोनाइनिहवकानानारश्वदकोनाववकामवा॥ पश्नेवासन्नकालोलङ्वालिटाश्वग

धनाकिम।जगामाकिमाश्चाम त्र कालेकिम।कर्मेल ह्यानाकिम॥ लङ्स्मे॥ स्मयोगेलिङर्थेपि लट्स्यादेव।यजतिस्म युधि
ष्ठिरः॥ स्म पुरोकेव।भूतानघतनपरोक्षेऽपि स्मयोगे लट् स्यात्।एवं स्मापिनाब्रुवानि॥ ननौपृष्टप्रतिवचने॥ ननुयो
गेभूतेऽपि लट् स्यात् पृष्टप्रतिवचने ऽर्थे।अकार्षीः किम।ननु करोमिभोः॥ नन्वोर्विभाषा॥ आभ्यांयोगे योगे पृष्टप्र
श्नेऽकार्षीः किम।नकरोमि।नाकार्षम्।अहंनुकरोमि।अहं न्वकार्षम्॥ पुरिलुङ्चास्मे॥ पुरायद्भयोगे भूतानघतने लुङ्
लेवा स्यात्।ननुस्मयोगे।पठन्तियाज्ञा।वसन्तीह पुराछात्राः।अवात्सुः।अवसन्।ऊषुर्वा।स्मेकिम।यजतिस्म
पुरा॥ यावत्पुरानिपातयोर्लट्॥ आभ्यांनिपाताभ्यांयोगे भविष्यत्काले धातोर्लट् स्यात्।यावद्भुङ्क्ते॥ निपातयोः किम।या
वद्दास्यते।नावद्भोक्ष्यते।केनपामूनपापुरा यास्यति॥ विभाषा कदाकर्ह्योः॥ आभ्यांयोगे भविष्यति लट् स्यात्।कदाकर्ह्यः
वा भुङ्क्ते।भोक्ष्यते भोक्तावा॥ किंवृत्तेलिप्सायां॥ विभाषेत्येव॥ नेडवशकृति॥ किंवृत्तमन्यतरे
षां॥

गमविष्यतिवालृट्। स्याल्लिङ्क्षायामृ। के कतरो। कतमोवा। त्वंभोजयसि। भोजयिष्यसि। भोजयितासिवा। लिप्स्यमा
नसिद्धौव। लिप्स्यमानेनान्नादिनास्वर्गादिफलसिद्धौ गम्यमानायां भविष्यति लृट्वास्यात्। योऽन्नंददातिदास्यति
दातावास स्वर्गलोकं यातियास्यति यातावा। लोडर्थलक्षणेच। लोडर्थस्यप्रैषादेर्लक्षणेक्रियायां वर्त्तमानाद्धातोर्भवि
ष्यतिलृड्वास्यात्। आशंसायामपि। निकावित्। कृष्णश्चेद्भुंक्ते। त्वंगाः रक्षस्व। प। पञ्चक्षुद्। भूतेवर्त्तमानसामीप्येवर्त्त
मानवद्वा। समीपमेवसामीप्यं। स्वार्थेष्यञ्। अनेनवर्त्तमानसमीपे भूते भविष्यति वा काले वर्त्तमान
वत्प्रत्ययाःस्युः। कदागतोऽसि। एषआगच्छामि। एषआगमम्। कदागमिष्यसि। एषगच्छामि। गमिष्यामिवा
भूतवद्वा। भविष्यतिकालेभूतवत्कार्यात् वर्त्तमानवच्चप्रत्ययावास्युः। आशंसायां। देवश्चेद्वर्षति। वर्षीत्। वर्षिष्य
तिवा। एतेषांसंपन्नाः। वर्षिष्यामोवा।। क्षिप्रवचनेलृट्।। क्षिप्रपर्यायेपदेभविष्यतिलृड्वास्यात्। आ

रीस्यायीत न मूनवन्त। हृष्टिश्चेन जिघ्रमाघुत्व निर्नेनाचायायास्पति शीघ्रं व क्ष्यामस्थ नेनिवाम्मे। हेतुहेतुमतोर्लिङ्चायार्थो। स्वः
यीश्चे व क्ष्यामस्थ॥ चायेसावव नेलिङ्॥ चायेसापर्यायापपदेस्भ विष्पनेलिङ्वस्यात्। न मूनवन्त। गुरुश्चेदुपेयात्
चायेस स्वघी पीयात्। चायेसस्त जिघ्रमचा पीय। भूतेवा। उताप्योः समर्थयोरित्यादिलिङ्निमित्ते लिङ्निमित्ते भूतेऽर्थे
लिङ् स्यात्। क्रियायाश्चानिष्पत्तौ। यद्यहमेव मुना भोन्ष्ये। तथ भोन्ष्ये। न भुक्तवान्॥ वोताप्योः॥ वा ऊर्ध्वं उताप्योः
७२ उताप्योरितियावत्। भूतेलिङ्निमित्ते लृङ्। क्रियातिक्रियातिपत्तौ च म्यचिक्रियते। गर्हायां लडपिजात्वोः। अथ या ७२
मीधागेल्लस्यात्। कालत्रयेऽपि गर्हायाम्। कालविशेष प्रत्ययापवादः॥ अपि जायी त्वं जाल्मि। जातु गणिकाम्
इवेत्। अत्र लिङ्निमित्ताभावान्न लृङ्॥ विभाषा कथमि लिङ् च। कथमायोगे कालत्रयेऽपि वा लिङ् स्याद्वा लट्। गर्ही
याम्। कथं धर्मं त्यजेस्त्यजसि वा। पक्षे कालत्रये पिलकाना ... नभाविष्यति निमित्ते लृङ्। भूतेवा। कथं नाम न चमवा

भवानधर्ममन्यस्व । किंवृत्ते लिङ्लृटौ । किंवृत्तयोगे गर्हायां पापे नोक्तः कालत्रयेऽपि । सर्वलकारापवादः ४ । कः
कतमः कतरो वा हरिं निन्देत् निन्दिष्यति । लृङ् च धात्वेव च ॥ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ॥ किंवृत्ते चाकिंवृ
त्तेऽपि लिङ्लृटौ स्तः । असंभावनामर्षयोः त्रिषु कालेषु सर्वलकारापवादः ५ । न संभावयामि न मर्षये वा । भवा
न् हरिं निन्देत् निन्दिष्यति वा । कः कतरो वा निन्देत् । निन्दिष्यति । क्रियातिपत्तौ पक्षे लृङ् । किंकिलास्त्यर्थेषु लृट्
६ । किंकिलशब्दे अस्त्यर्थे वोपपदे च अनवक्लृप्त्यमर्षयोः लृट् स्यात् । कालत्रये न संभावये न मर्षये वा । किंकिल त्वं शूद्रा
न्भोजयिष्यसि । अस्ति भवति विद्यते वा शूद्रान्भोजयिष्यसि । अत्र लोडपि नाप्यादिभावात् लृङ् न ॥ जातुयदोर्लिङ् ॥ आभ्यां
योगे कालत्रयेऽपि लिङ् वम्यापवादः ७ । यद्यायद्योपिगिवा । जातु यज्ञ यदा यदि वा त्वादृशो हरिं निन्देत् । नावकल्प
यामि । न मर्षयामि । लृङ् प्राग्वत् । यच्चयत्रयोः ९ । आभ्यां योगे प्राग्वत् । यच्च यत्र वा त्वमेवं कुर्याः नेदं संभावयामि न मर्षे

म। याग्यवल्कः॥ गर्हायां च॥ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरिति निवृत्तम्। यच्चयत्रयोर्योगे गर्हायां लिङ् स्यात्। यच्च यत्र वा त्वं शू
द्रं याजयेः॥ चित्रीकरणे च॥ शेषे लृडयदौ॥ यच्चयत्राभ्यामन्येन यदिवर्ज्जेन योगे लृङ् वक्तव्यः कालत्रये। चित्रीक
रणे। आश्चर्यमन्धो नाम कृष्णं द्रक्ष्यति। अत्र लृङ् नास्ति यतः। किमाश्चर्यं यदि स भुञ्जीत॥ उताप्योः समर्थयोर्लि
ङ्॥ बाढमित्यनुज्ञायामर्थे योगे लिङ् त्रिषु कालेषु। सर्वलकारापवादः। शावाधार्थतुल्यार्थेनानयोः यथा लिङ्। उत न्याद् २२
२२ 73 न्याद्धि हरिः। इतः परं भूते लिङ्निमित्ते क्रियातिपत्तौ भूतेऽपि नित्यो लृङ्॥ कामप्रवेदनेऽकच्चिति॥ स्वाभिप्राय
विष्करणे अर्थे लिङ् स्यात् कालत्रये। न तु कच्चिति। कामो मे भुञ्जीत भवान्। कच्चिन्निकम। कच्चिज्जीवति। संभाव
नेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे॥ अलमर्थेन योग्यत्वसंभावने अर्थे लिङ् स्यात् सिद्धे चालमः प्रयोगश्च कालत्रये। वाके
संभावनवचनेऽयदि। संभावनार्थधातावुपपदे यद्यप्रयोगे लिङ् वा स्यात्। न तु यदि। संभावयामि भुञ्जीत भवान्। भो

ष्यनेवा। घयति। किम्। सीमावयामि यद्गुणा या था। हेतुहेतुमतोर्लिङ्॥ हेत्वर्थे हेतुमदर्थे च लिङ् स्यात्। कृष्णं नमेच्चे
त्सुखं यायात्। पक्षे लृट्। पुनर्लिङ् क्के म। विष्मदर्थेषा तुमि योगि किं लोटौ स्तश। त्वं पुकाले स्युः। इच्छामि भुंजीत।
भुञ्जीतां भवान्। कामप्रवेदने याच्चेनेहा। इच्छन्करोति॥ लिङ्। समानकर्तृकेषु इच्छार्थेषु योगे लिङ् स्यात्। विधि
निमन्त्रणे लिङ्। कालं समये विधौ। योगयो कुर्वीता। नियोगकरणो। इह तु जीन भवान्। कामचारे। इहासीत भवा
न्। सत्कारपूर्वव्यापारे। पुत्रमध्यापयेद्भवान्। संप्रधारणो। किं नो वेदमधीयीय। उत नतर्कम्। प्रार्थने। मोमो
गनीलं येय। लोट् प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च॥ एषु गम्यमानेषु धात्वर्थे कृत्याः स्युर्लोट् च। प्रेषित स्त्रीग
गीगच्छ। एवमानेप लब्धी प्राप्तस्ते कालो वा। लिङ् प्यत्रति केदिना। लिङ् स्प्वोर्द्धं मौहूर्तिके॥ प्रैषादिषु गम्यमानेषु
ऊर्द्धं मौहूर्तिके ऽर्थे लिङ् वा। यथा। पाक्षत्रा। भवान् खलु कटं कुर्यात्। कर्ता तु वा। स्मे लोट्। मसहेतु उपपदे पूर्वे

।स्मिन काले व लोडे वा तुह्यद्वं पुढ्वैकटेकोतुस्म॥ अवी प्तवा॥ अघी प्ते व्याख्यानी। स्म उपपदे व्याख्याने लोट् स्यात्स्व
गस्मरागच्छान वकम ध्याप या। लिखादि। कालसमयवेलासूपपदेषु धातो र्लिङ् कालो यद्भुञ्जीनमवाना। एवं समय
यो वेला वा॥ अर्हे कृत्यतृचश्च। वा लिङ् तृचं कृत्यांश्च हेः॥ यत्किलिङ्॥ यत्कियच्छो लिङ् स्यान्तवान् कृत्याश्च
चैमार्ह्वे हेः॥ लोडप्यवेति कावित्॥ सिवुमपिरो बयालि। माङि लुङ्॥ माकार्षीक्ष कयो मामवतु माकोर्विष्य
२४ मानि। नायीमाङि केवुमाशयः॥ क्रियासमभिहारे लोट् टलो वा हि स्वौ वा वत तघमोश्च यौन श्व पुन्येदृयार्थे वा २४
75 वानो लों स्यान्हानस्यव लोट् श्वपर्व्ववस्थया। हि स्वौ स्त ॥ सर्वतिङ्क्षिये। न घमोर्ष्विपयेतुवा। कालत्रये
लमात्रापवादः॥ समुच्चये न्यतरस्याम्॥ अनेककियाच्चवलाने धातुर्क्कीवास्याचा॥ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्व
स्मिन॥ पूर्वस्मिन्लोडिवाने यस्माद्धातो लोडुक्तः सोऽनु प्रयोक्तव्यः॥ समुच्चये सामान्यवचनस्य॥ समुच्चये

लोडादेशेसामान्यार्थस्यधातोरनुप्रयोगः॥ क्रियासमभिहारेद्वेवाच्ये॥ याहियाहीतियाति। एवंयातयात
तिं। यासि। या। थथ या। थ। यातयावेति यूयंयाथ। याहि याहीत्ययासीत्। याम्यनिवा। त्ववीच्याचाधेत्यधीते। एवमन्य
त्रहि। विजयेपाण्डवः। पडेभ्यवेत्यध्यवाचामिति। प्रत्ययान्तावच्छे क्रियासमभिहारे तु। लोलूपस्व। लोलूय
स्वेति। लोलूयते। समुच्चयेऽन्यतरस्याम्॥ सविवचानाः। शब्दादेरित्यध्वरुतानि। अन्नमुन्ध्व दधिकमास्वादस्वेत्यध्यवह
रते। नवा। भुङ्क्ष्व मास्वादस्वेत्यध्यवहरते। लोडनावपक्षेलडादिः। अ
त्ति। नवा। पिवतस्वादन्तेत्यध्यवहरते। भुङ्क्ष्व मास्वादस्वेत्यध्यवहरति॥ छ॥ इति लकारार्थप्रक्रिया॥ छ॥ धातोः॥ आतृतीया
ध्यायसमाप्तेर्ये प्रत्ययास्ते धातोः परे स्युः। कृदतिङ्‌ति कृत्संज्ञा स्यात्। तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्॥ कृदति
ङ्‌ति कृत्संज्ञा॥ वासरूपोऽस्त्रियाम्॥ अस्मिन्धात्वधिकारेऽसरूपोऽपवादप्रत्यय उत्सर्गस्य बाधको वा स्यात्। स्त्र्यधिकारोक्तं वि

ना॥ कृत्याः २ ग्वाऽपवुल ४॥ ण्वुल्तृचौ विन्यत २ ग्राग्ये ३ थीघ्रन्यपाठति कृत्यसंज्ञास्युः ४॥ कर्त्तरि कृत्॥ कृत्यन्यपरक
र्त्रेस्स्यातां ३ इति प्राप्ते न्याय्ये ते कृत्यक्तखलर्थाः ४॥ कृत्याः क्तखलर्थाश्च भावकर्मणोरेव स्युः ४॥ नव्यत्रव्यानः
पतः॥ बानेनेनेम्यया ३ स्युः ४ ३ केर्ध्यै । जस्वर्चे ४ ग्राग्वद्दिडा दिस्वाघुन्यत्रि ४ पचितव्यं । पचितव्यं । पचनीधी
२५ न्यपा। भावस्यैकत्वादेकवचनमा- ौचितव्य ४ वपनीयस्त्वया॥ वसेस्तव्यनकर्त्तरि णिच्च॥ वास्तव्यः
मेकर्त्तरि केलिमर्तुवा। व्य ४ स्त्वपविपक्षे इति प्रवेलिमाश्च दुला ॥ कृत्यचः ॥ उपसर्गस्थान्निमित्तात्प २५
रस्याचय उत्तरस्य कृत्स्थनकारस्य णत्वं स्यात्॥ प्रयाणीयम्॥ स्ववः किम्। प्रमग्नः॥ निर्विण्णस्योपसंख्यानं
निर्विण्णः॥ वा निर्विण्णा॥ ण्यन्तात्परस्योपसर्गस्थान्निमित्तात्कुत्र रस्य कृत्स्थनस्य णो वा स्यात्॥ दुर्बक्रीडपस
र्गादिति केचित्॥ प्रयापणीयम्। प्रयापनीयम्॥ हलश्चेजुपधात्॥ हलादेरिजुपधात्कृत्स्थस्य णो वा

।स्यात्। यागुक्कनिमित्तेऽसति। प्रकोपणीयं। प्रकोपनीयम्। हलश्च कम्। ग्रोहणीयम्। इगुपधात्किम्। प्रवपणीये
इग्रादेः सनुमश्च। इग्रो रेफवत्सनुमो हलन्तात्कृत्यस्य णत्वं स्यात्। अड्मिमिवे सति। प्रेंषणीयम्। इग्रादेरेव किम्। प्रमी
गनीयम्॥ न भाभूपूकमिगमिप्यायिवेपाम्॥ एभ्यः कृत्यस्य णो न स्यात्। भ्या चानो रविणत्वे नेति केचित्। पर्वी
नीयम्। प्रभानीयम्। प्रभवनीयम्। प्रपवनीयम्। पूञ एव निषेधः। पूङस्तु प्रपवणीयम्। अनोऽमध्ये। प्रकमनीयं
प्रगमनीयम्। प्रप्यायनीयम्। प्रवेपनीयम्। ण्यन्तेभ्यो दिग्भ्यो विभाषा। पिना। प्रभापनीयम्॥ कृत्यचः। कृत्यात्परो णु
ड्वढ्वल्कमर्थे षुष्टु। यश्चात्मनेनष्टानीयेवुणो। दायनेः स्मे दानीयो विषश्चात्मनीयम्॥ प्रगत्वाच स्मातावि पेयुण
न्यपा॥ ओे यी। वाक्सूत्रविवेस्यत्व्याहयोः। पि। वेनत्रमा। वयनीयं त्वपा। चगत्व मूत्रपूर्वादपि। हिस्त्री। वित्समा॥ इपनि
पत्निपन्यात्र स्मात्। गुणश्व हयेत्त्यपम्॥ न कियासिवनियात्रेगनिम्यद्व पन॥ नव्यापिस्याद्। हनोबापदछस्व॥

र

वघ्यश्वपक्षेणपान्।। पौंड्रपवान्। पवर्गस्त्रिद्रुडुपवान पत्स्पान्।। पनोःपवादस्थाप्पम। वनूपन्वान् नप्पत्।। आ नोषि
।। आङःपनस्प लमेतुम स्पान्।। धादौ पत्य पेपनोक्षा लम्भागो८ आङकिम्। लम्भौ।। उपान्म्रश्रुत्मायाम।। उपान्मश्रु
मस्पान्।। उपलंभ्यानि उपलम्भ्य८ साधुः।। सुनौ किम्। उपलभुरपश्व उपलम्भपद।। ताकिम होत्व।। आ मीयस्मान्
२८ नर्य।। सस्वमान्। गरमदस्वस्यमस्वान्पसर्ग। पञ्चोः तुपसर्गस्यापस्पान्।। गघा।मघा।वर्ष।वनेरा।ड़िवायुनौ।। आवर्ष
76 देन्यथश्चनुनौ।केम। आवापौः न्यअपमोत्रिपमा। घेमा। पम्मी। उपसर्गेतु। पगा। घी। इत्यादि।। खवघपलवपीगही २८
पतिनवानिनोवेषु। पनेपयन्ययासानिपासन्ने। गत्योघर्षे। स्वनपमानिर्ले। पण्डीविकेपी। आनेरोधोः नुनिवेशः
गनेनवर्षाव्रत्या। वृन्दान्पा। छ्रीनेदेशान्तपुनिवापाआन्चेनथ। वप्येकरणी। निपात्यनेकरणेवेन। वाश्चुमन्यन्
चर्षस्त्वानिवेस्पपो। श्वय वृष्टिस्वामी। वेस्पा वा। आपौःन्पय। उपसर्गी कान्यापजने। उपसर्गे निनिपात्यनेग

गर्भे त्राणकालावेन। उपसर्पी। उपसार्यान्या॥ ॥ग्रजपेसीगरे॥ नन पूर्व्वाज्ञार्जते ८ कर्वेसृप त्रिपान्यते। सगतेवेका
यमा। नजीर्य्यतान्यजर्यसाखुसंगतम॥ क्रतुलोणयेन॥ कवर्णान्ताच्छलन्तावृणपस्यात्। कायेमः। रायेम। वात्वम। क्षु
न्वम। हनस्वा। विष्मलोष्ट॥ धान्वी॥ वनोः कुधिणपतो ४। वनो ८ कुर्वस्यान। चितिणपानिव। पात्वम। नोग्यम॥ ॥ नका
दे ४॥ कवर्णादेर्वीनिरवगो ८ कुर्वेनस्यात्। गर्भ्यम। खनिवप्योरव॥ एनयोर्न्ने कुन्वी। व्रा। षमा। वाहजेनादि। वाक्य
श्र गेर्धिमा। पाण्पनिनोदाहरणी॥ वर्वर्गतौ। वेवे ८ कुर्वेनस्यात्। वंध्री। गनो। किं। वक्ष्मकायम॥ ॥पपावस्पके॥ ग्रावक्ष
कण्यपरे कुर्वेनस्यात्। लुपेर्वस्पमर कुन्वे॥ खवस्पपाव्यमा। मयूरव्यंसकादित्वान्समासः ४॥ यनपावत्रुवस
वर्ईरव। एबोप्ये कुन्वेनस्यात्। पाचम। पाव्यम। नोप्पी घवाव्यम। सवाग्वर्ज्यमा। सडुपवादिपि। सवेननपवप्य
न। पनिषु घोरव॥ कुर्वेनस्यात्। माप्यम। पूष्यम। ववोरापदसंज्ञासाम ४ ववः कुर्वेनस्यात्। ग्रादनहयाम

वाच्यम्॥ गच्छात्या यांतु वाच्यम्॥ प्रयो ..नियोज्यौ याच्यार्थे॥ शक्यार्थे पनौ। निपाय्यैनौ॥ प्रयो कुं यच्छंदप्रयोगे। प्र छ नियो
ज्यश्चात्र प्रस्तु प्रयोग्य स्थाने योग्य छ॥ भोज्यं भक्ष्ये॥ भोग्यमन्यत्॥ आवश्यके। उवर्णान्ताद् आवश्यके ऽर्थे ण्यपन्स्मात् भ्रमेनो
ऽपवादश्चात्र वश्यलाव्यम्। विप्रेण युद्विनामाव्यम्। लव्यमन्यत्॥ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च॥ पम्प्योत्पन्स्यात्
पत्नोऽपवादश्च आसाव्यम्। पाव्यम्। वाप्यं। नाप्यम्। लाप्यम्। नाप्यौ। आवाम्यम्॥ दंभेश्च॥ दम्भोऽपिनौ। निर्दैर्यान्लोपश्च २१
२१ भजअपपदनमीयद्वेतिके विना। भक्ष्यम्। भज्यम्। पद्यम्। त्रानाम्यम्। भाग्यम्। नाप्यौ। पाच्यम्। भ्रानाम्यौ। भ्राना वो
५७ नित्ये। गार्हपत्ययोनौ रक्षि णाय्यो आनित्ये त्वाना प्यौ निपात्यते। त्वानेयोऽन्यत्र॥ गणाय्यौ। समनौ॥ कुमनौ निश्च ९९॥
कात्म्यैवाच्ये। निःक्रिपो ऽमावुछ्योतौ नाप्रणाय्य ऽ प्रयो यो ऽन्यत्र। पाय्यसांनाय्य निकाय्य धाय्या मानहविर्निवा
समानिवेनाष्ठु॥ एतेमानाहि बुक्रमा त्रिपात्यन्ते। पाय्यम्। मानम्। पेयमन्यत्र। सांनाय्यं हविः। शमेन्येयमन्यत्र। निकाय्यो

हे

निवास४।निवेयो ऽन्यस२।दद्यात्यनिमिनिवा।प्यासामिवेनीञ्चक।वाप्पा।स्वान्त्विज३।येपमन्यन्।कनौ कुंडप
प्यसंवाप्यौ॥कुंडे२पायने स्वसोमघनिकुंड पाय्य२ क्रतु४ संवा प्य४ क्रतु२।अग्नौ परिवाप्यौ परवाप्यसमु
ह्या४।अग्नावेने वेत्याघयः४।अग्नौ किमापरिवेय२।उपवेयथ स्तवास्य२॥ चित्याग्निचित्येव।एतौ निपात्येते
॥चित्यो ऽग्निश्वग्नेरुवयनमग्निचित्या।ण्वुल्तृचौ॥ अमावस्या न्यतरस्याम्॥ अमोपपदा द्वसे४ काले१
धिकरणे ऽण्यत्स्या द्वा नव वद्वृम्मा वो वा नि पात्यते।अमावास ह्व मनो ऽस्या वेशा कर्त्ति वि प्यमावस्या।अमावा
स्या।पगन्मनयेति पाध्यासक।घनि कोविन्॥वद१स्युपि व्यय॥ वदेन्नुपसर्गे सुव त्र उपपदे क्यपस्यात्।व
का।घन।उपपदमितिसमासे ३।ब्रह्मणो ऽघन२नि ब्रह्मोघा कया।ब्रह्मवध्या कथा॥ भुवो भावे॥ अनुप
सर्गे सुप्युपपदे भुव२ क्यपस्याद्भावे।ब्रह्मणो भाव३।ब्रह्मभूयं गतः अनुपादितिकिम्।नव्यमा।अनुपसर्गे किम्।

घनघ्नम॥ हनस्त व॥ अनुपसर्गे सुप्युपपदे हन्तेर्भावे च प्रत्ययान्तानकारो वादेशश्च। वध्नाणो हननीवध्न
हस्मा। स्त्रीलिङ्गे लोकान्त॥ एनिस्सुस्त्वदस्मुणश्चसप्त। एन्यश्चपस्मान्त। कस्वस्यपिनिकृतिनुक॥ वानेकृत्स्त्रा
नस्यनुगागमश्चस्मान्त पितिक्वान्ति। हन्यश्चस्नुन्यथायासहेदङ्हलोश्च॥ शिम्यशद्र। हन्यश्चहनोयहली। नतुव
ङ। हश्चस्नुवायच्चिान्विजश्चन्त्रा। हन्यश्चजुष्पश्च। पुनश्चतुक्रिश्चघ्नघाघनस्यप्पेन्त्रोवाघाघोम्बवश्चपस्नुन्य:
३८ ॥यांशिदुहिगुहिभ्यो वा॥ गस्त्री। शीस्पी। दुर्वि। दोह्वी। गुह्वी। गोह्वी॥ न्वाङपूर्वाद्गेस्वसंज्ञायाम॥ त्रजेश्चप ३८
78 पिदोपावोनेतिवाक्यम। स्त्रा। घ्वेमामिनिरणनादिमयस्मनूपानेण श्चान्नदुपवाघाकृपिवृनेथ। न्नदुपचान्त। व
पस्मान्त कृपिवृता। विना। हता। हन्त्री। हृध्वी॥ क्रापिवृन्तोस्नु। कन्व्यमा। वन्येमा। न्नदुपघेतिनपर्तश्च। किम
कृत। कीत्रीमा। घाणोमजेर्पदिन। पाणिमगर्पानज्जुश्च। मनवपूर्घाव। ममवसम्पी॥ इवरवनश्च। वपस्मान्त

ई कानेत्याद्देश्च। न्नाकुत्स ३। स्वयम। दार्वाक्रिमिकामात्त्रनय्र २ लेपार्थी। तेनयेविभाजेत्याच्चेन॥ मृषो सीत्यापापादन्य ४
कपध्याननुसीत्तापी। मृत्य ३। भेत्तापीनु। भार्यानामकत्रिया। भार्यावधू ३॥ सीमृषो वा। सीमृत्य २ सीभार्यै ३ मृजेर्विभाषा॥ मृ
जे २ क्यपवास्यात्। पकेण्यत। मृष्ट ३ मार्ग्य ८॥ राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ८॥ एते क्यपन्ता निपात्यन्ते
राज्ञा सूयते राजसूय ४ क्रतु ८। सुवति स्वति निवा सूर्य ३। मृषा उद्यते मृषोद्यं नित्यं। नो वनेतुक्य ३ सुवर्णरूप्याभ्यामन्यत्र कु
प्यम। गोप्यमन्यत्र। कृष्टे स्वयमेव पच्यन्त इति कृष्टपच्यो व्रीहि ४। न व्यथते अव्यथ्य ३॥ भिद्योद्ध्यौ नदे॥ कर्तरि क्यबन्तौ
एतौ निपात्येते। कूलं भिनत्ति भिद्यो नद ३। वा उज्झति उद्ध्यो नद ३॥ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे॥ कार्ये पुष्यन्ति पुष्य नक्ष
त्रं सिद्ध्या पुष्यो नक्षत्रे। कार्यं साधयन्ति सिद्ध्यन्त्यस्मिन्निति वा सिद्ध्य ३ स एव नित्योऽधि॥ विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्क
हलिषु॥ पुनातेर्नयतेर्जयतेश्च क्यप् निपात्यते। विपूयो मुञ्ज ८ विनीय ८ कल्क ३। जित्यो हलि ३ एषु किम। पव्य। विनेय। जेय॥ प

था। २
न्यपिम्यायिदेरछन्दसि। आम्यायिदेऽक्षपस्पान्‌ कृन्दसि मा पापीवेनिकेविन। घनिगस्लम। अपिगस्लम। घनियास्ये
श्यपिगास्लम॥ पदास्वैनिवाह्यायीव॥ पक्षुगदेऽक्षपस्पान। घगस्येपदम। गस्लवऽ। अस्वेर। यामगक्षोसेनायाम
वासेन्यर्थेश। स्यानिर्द्दिशान्नान्यत्र। कृष्णगस्वऽनन्ना। सिनदन्यर्थेऽ॥ विनाभाकृदणोऽ॥ आम्यावपस्पाना कृन्दीवे
७२ यीमा। दृष्यमावर्च्यम॥ युग्पेवपत्रे॥ पत्रैवादनेयुगपि। अश्वादिवेन। योग्यमन्यन॥ ये मानिमर्ग धान्काले षु कृन्याल
॥ घेभिनस्त्रीचयागन्नवीगमनायीगम्पी। अनु ज्ञान स्वेन्वयाभ्येनवी। अव्ययनायी। नघेयी। धान्त्रेकालस्य यावे ७२
नव्यमा। व्यानायमाथेयम। मामान्यनऽधाधावप्यन्नलोटोवाषामामूदितिपुनऽकृन्याविघिथ॥ स्विपीक्तेन॥ घन
उर्द्ध्वासमूपविधेरमावानश्वर्हेकन्यनवरवा। स्त्रातुमर्हेऽस्रोनव्यऽ। घवनायऽमुमथ। जिज्ञानवाषामामूदितिक
रवोधिविश। मव्यगेयप्रववना। पोपस्यानीयगन्या ज्ञाव्यापान्यावा॥ एने कृन्यानाऽकर्त्तेरिवानिपात्यन्ते। भवतानि

व्यक्षभवामनेनवा॥ गा। यत्नानिगेयग्ठ। गेयीसामवठुनावा। इत्यादि॥ याकिलङ्विवाकन्याशावोकुशाक्यो। बोटव्योवहनीयोवाक्षः
ल्लिङ्गवोवामाभूदिनिकृत्योक्तिथ॥ शनिकृत्यक्तिमा॥ वुण्न्तवो॥ धानोर्वुणन्तवोस्तथ। कर्त्रनिकृदिनि कर्त्रयेर्थे। धुवोन
नाको॥ कर्त्रोनानिकर्त्री। कारकठावोठुमर्होवोढा। वृत्यपस्थादिनान्वी। कारिका। कृतेभ्योऽप। कर्त्री। स्त्रनुपसर्गाल्लिः
पविंदधानिपानिवेधुहजिवेनिसानिसाहिभ्यश्च॥ एभ्यो नुपसर्गेभ्यश्चशस्यात्। शकारश्चित्कार्यार्थः। लिंपथर्वि
दशाचानपठापानपठावेदपथउदेजयपठवेनपठसानिशसोत्रअसानयपठसाहयपठाश्च नुपसर्गोत्किम्। गांकुडोनेङ्गि
कुटिता। कोटकठा। विजइट्। विजिना। त्यक्त। पाक्तिमा। मोदा। दरिद्रानेनालोपश्च दार्शेङ्गिना। ल्पुलिन। दरिद्रापकथक्क
न्यल्पुटइत्यर्थ। नत्रवकुलोक्तिः दक्षाविन्कर्मण्यपि। ण्मुल्तु। पादाभ्यां ङ्किपनेपादहारकथगलेवोप्यनेगलेवोपकथ
हलदत्तादिल्लाभ्यामनेपदाहोक्षमेदक्तनदपिनिवेवगा। पकत्रा। कर्त्रैनान्यवा। घक्तमिनव्यम्। गमेत्रिङ्मावदत्युक्तेः। थ

सौऽङ्गमिथिना। पर्श्वङ्गिगास्तिनेन्यपि केविना। पवैनद्रनरवनुर्म्यथ। पिहास्तिना॥ विहास्तिना॥ विवर्त्रिंबिनेन्यपि केविना। विक्लपि
ना॥ नघातुल्लोपेन्यचरकप वगुणहान्निनिबेधाना। पापावकथ। पापविना। इत्यादि शेषम॥ नन्दियादिपवादिभ्यो ल्युणिन्य
सभानन्दादेर्युऋथयहादेर्णिणाथ। पवादेनव स्यात्। ननन थ। म्यासिउसिनेनववजिणथ। जनार्दनथ। मधुसूदनथ। रमाहा। स्यौ
नी॥ पचाजिनो। पचथ। देवेट्। देवथ। देवी। नोऽनन्रघुवट। लोपथ। पवाघवु। जोऽस्थ। पक्नो। विवेनि। लुङ्गनि केविन्। नो
८० त्रवथ। वतिनलिपनि प टानो वा। दिन्व मम्यासस्य। अभ्यासस्य कार्यमनवानि वक्त्व्यामिनि हलादिशेषाभाव थव ८०
नाचरथावजावल्लथ। पनापनथ वदावदथ। छेत्रे धेन्वेवाघनाघनथ। पाटेर्णि लुकाग्नुक्काभ्यासस्य। दादूपदैट्थ। प
केचरथावल्लथ पनथ वदथ। हनथ। पाटथ। बसर्पेकाविधाना। मिनि। हमथ ल्कि देथ। क्रमरवा। कपन्यपे ल्कि दा दानो हस्त्रथ
विक्लिः। वक्रासथ। पक्वोल्कि इक्कसो नाजिनिकेविना। ल्कि दथ। क्रमथ। नावेर्घानि विभाषा। कृदन्ने पचेयानेमुमागमो वास्या

नात्रिवनथनात्रिवनथनात्रिमटशनाम्पटथाइगुपघञावीकिनथकथा।पम्पटकस्मान।क्लिपथाब्रुवटाभूत्तुरुथा।इपकुप्रिपथ
मथाचनदइन।क्लिनथागिनेरवेन्येके।गिनथागिलपदेश्चगिलस्यपूर्वस्यपुन्वाव्यथानिमिंगिलथाश्चगिलस्यानिकि
गिलगिलथागिलगिलेव।निमिंगिलगिलथावास्मनूपविधिना।ण्वुल्प्रत्ययवावादि।जेपकथाजेप्ना।न्तरवोपसर्गी
उपसर्गेत्रपपदेत्र्याद्दनाकस्मान।णा।घर्वेनिणस्यापवादश्चमुग्लथाप्रजटपा।ग्राम्याचेटद्याटथाथापम्पटथास्मान्
यिना।त्रिवाक्यथाप्राग्नेनो।गुणोउन्यिवथाउक्लिवूथा।विषमथाउद्वपथाविपरपथा।उपसर्गानुवृत्तिर्नीचिनेके।पटप
जिवूथासेवायानाव्याद्युथाननुपसर्गो।ल्लिंपविन्दधानिपानिवेधुदेजिवेतिसानिसाद्विभ्यरवा।पम्पोननुपसर्गेभ्यः
यस्मान्नायिन्कार्यमा।लिंपथादिंदथा।चानपथापानपथावेदपथाउदेगपथावेनपथासाक्लिटसौत्रथसानपथासाह
पथाश्चनुपसर्गान्किम।पालिपथाणौनिलेपेवीव्यथानिलिपादेवाथा।गवादिछुविदेटसेज्ञायाम।गोविन्दथाश्च

विन्दशाददानिदयान्योर्ह्विना। आ। आङ्पाशीवास्यात्रा। शिन्वानरलुवीयेम। दघ८। ददव८। पक्षेणा८। अनुपसर्गादेवा। ञ
णीदय। प्रवथ। क्षुलिनिकर्यीनेम्याणा८। शनिना। घर्षक्षुला। दिम्प८कयन्वैम्योणा८स्पाहा। पक्षेत्रेवा। ध्राळ८। क्षुलथावाले:
वलक्षान्वनुपसर्गादेवा। प्रक्षुल८। ननोनेर्णी८अवना। णअस्मा। ध्यवा। स्नुसीरनवनीणावस वध्वलिहा। रिलप्तरवसरवा।
८२ अनुपसर्गादिदिनि। तृत्वम्पा। ष्पे:। आदत्ता। धषादेरवणक्षस्पात्रा। आदन्नन्वे:। दिस्पै। क्षुन्ति८कवावायो। अवरस्पाय ८२
घपश्वायक्ष। व्याप्यश्चा। स्वाद८स्ती। स्वाव८। म्पास्नुसीम्योर्णीवेनिकेविना। आ। स्नाव८। आन्याप८अवसापथ। अव
81 हानथलेह८। ल्लेषथ। रवाम८। डुन्योरनुपसर्गा। दाव:। नापशवेनिकोदेम्रा। दव:। नप८। अनुपसर्गा। किम। प्रदव:
घणप८। विम्पा। जाग्रह८। णो। वाव्यदस्यपा। जलवनेम्नाहद। प्वोनिजिग्यह८। अनुवस्वावाव्यद८। म्पावथनवदागे

कथा ग॰ हे के त्रे तिग्र हे थ्क कथ्म्या न । ग हे । ना कम्या न । ग ह । दा ना भ । शि ल्यि नि । च्छु न । कि त्रे सि । क त्रे सि वा नो । ष्यु स्या न । न्तु ति
खा नि रे त्रि म्प प वा । नत्रे क थ ख न क थ म्ब मित्र क म्र ने घि नु । पि व र के न्त्री पो व क्त व्य थ र न क थ । खि न्त्रा न्त्र त्रे का । ग ः स्व
क न्न ॥ गा य न थ स्य क न्स्या न यि । स्पि नि । गा च क थ ॥ व पु न्न ॥ गा प न थ । हि न्वा त्रा य नी ॥ ह ख ब्रा । हि का ल पो था । ड हा को
हा ड ख पु द स्पा न । ब्रा हो का ले व क त्रे नि । स्वी वु अ हा नि जि ह नि वा । हा य नो ब्रा हि थ । मा वे ज हा नि जि हा नि वा । हा य णो
व र्ण थ ॥ बु स ल्व थ स म मि डा ने वु न ॥ चा दे र्बु न स्पा न । सा बु का नि णि क त्रे नि । च व क ठ । स न क ट । ल व क ८ ॥ च्चा नि गो म
वा ॥ या नो वु न्स्या दा यि । बि जा व ना । हि नि गा व क ठ । गा व का ॥ च्चा या न के । च्चा यि बि वु न ख ने नि ह ने न म ने न न ण न्वे वा म्पी
पे न का । न्कि व ह्ल नौ व सै द्वा पा ॥ या नो थ क्वि ब ह ब्र स्पा द्दा । नि बि स्पे स हा पा म ॥ नि नु च त च लि छु स न क्ले बु व । प णा द र्वी
नी ह न्व न्य या नो ह ण न स्या न । म व ना ह्रु नि थ दे वा प ने दे या सु र्द्द व र न ट के ज्ञा न्के ः कि वा वा घा मा म्ह ह न ॥ त्र नु न । सि क

स्यः। क्विफलोपो। क्विति। अनुनासिकान्तस्योपधाया दीर्घः स्यात्। क्वौ फलादौ क्विति। इति दीर्घः प्रशान्। अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनु
नासिकलोपः प्राप्ते गमः क्विदीर्घश्च। क्विपि परे यनिटां वनतितनोत्यादीनां दीर्घानुनासिकलोपो ऽस्य थ पीनि ३। व
न्त्रेश्चन न्त्रिथ तान्त्रि ३। अमन ३ क्विविलोपश्चास्यान्यतरस्याम्। प्रनोतेः क्विवपरे चाकमो न्नादेशो नस्य लोपश्च वा
स्यात्। सानि ३। संनि ३। सनि ३॥ कर्मण्युपपदे॥ कर्मण्युपपदे धातोरण् प्रत्ययः स्यात्। उपपदसमासः ३। कुम्भकारो
८२ निकुम्भकारश्च घटं ह ३ कोनीनि घटाकारश्च। इत्येषपरपदनामादौ वनमिवानानि॥ क्षावामश्च॥ एष्वष्टकर्मी ८२
ण्युपपदे ण्याश्चान्। कायवाद ३। आतोऽनुक। ऽस्वर्गी क्रामयातन्नुवायश्च। चान्यमायथ॥ आतोऽनुपसर्गे कः ३। आह्वे
ऽनुपसर्गे कर्मण्युपपदे कः स्यात् नाण। आतो लोप इटि च। गोदः। धनदः। पार्ष्णित्र। अनुपसर्गे किम्। गोसंदायः। सुपि स्थः
सुप्युपपदे तिष्ठतेः कः स्यात्। समस्थः। वनस्थः॥ द्वीपान्नगो भूम्पप द्वि त्रि कुञ्जे कुर्वी ध्वीगुमीजि पुञ्जि पन मनवा दि

दिव्यग्निन्यस्य २। एन्यपत्रस्यस्यसस्यजस्थान।। द्विस २। त्रिस्त २। सुपानियोगविनागादन्यस्मादादिनात्। धार्मं
पिवनानि द्विपश्च पादपश। भावेऽपि कार्याणि षनिपहली। स्वास्त्रूनासुन्त्यानि स्वाम्बूत्वीवर्त्रेनोऽनन्तुद्विसकर्मकेषुक
र्मीनुहृत्रिरन्यत्रसुप २।। तुंदयो कपोऽपमिन्कजापनुदो २।। स्वाभ्यो कस्यानां तुंदयोकपोऽकर्मणोनुपपदयोश नु
दपनिमृजोऽलम २। योकापनुदश्ससुखस्याऽद्वी।। मूलविभुजादिश्च।। मूलविभुज २। कुमुद २। स्वाहूनिगण २।। स्वस
य २।। कर्मणि पपूर्वी स्थामास्यो क २ स्यान्तोपसर्गार्थपिनत।। सर्वेषद २। पाथिषज २। सामिस्थ २। गोसिस्व २।। गा
पोष्टक।। कर्मण्युपसर्गोस्थामास्यां लकस्यात्वक २। सामग २। सामगा।। पिबते २ सुरासी घोनिनिवामम।। सु
रापा।। सीधुपा।। त्वन्यत्र ञानपा।। पिबतश्च कि पा।। सुरापा।। उपसर्गेत्तु सामसगाप २।। हनेरनुघमनेऽव।। हन्ते
वस्यानतो ऽपणोयेऽहन २। ऽन्केपेनु। मानहन २।। यत्किलोगलीकुरायश्चितोमनयटघटीवनुसुयहन २।। य

क्रियहइत्यादिसूत्रग्रहोपि। वयमिव। वयासिघोत्येकर्मणि। इत्योऽवस्थान्। उघमना। घमेनत्रा। केववहनश्कुमान॥
॥ त्रा। डिना छोत्ये॥ फलान्पा हनतिनछोल॥ फलाहनथनाछोत्येकिम। मानहानशा। त्रर्हथत्रस्मादत्रा। पुनाहि॥
। पूनाहीं। सर्वकर्णयोनमिनपोश। हलदन्त्रोनिङेनलुका। षेवेनमोहस्त्रा। कर्णजपश। सूवकश॥ त्राविकरणो।
नेश। स्वेशेनेस्वशयश॥ पार्श्वादोव। पार्श्वाभ्यीयेनेपार्श्वशयश। उदनयैशयश। उत्रानश्येने। उत्रानशयश। गि
८३ नौशेने। गिरिशश॥ वेलश॥ त्राविकरणोवनेलस्थान्। क्रुत्रवना॥ मित्रासेनाप्तपेभुव॥ पव्यापिवनेलश्यपि ८३
८३ नौवनानिमित्रानवहस्यादि। पुनोयनोयेभुमवैथा। पभुमर्वलकस्थान। पुनश्वनश। त्रयनः मनथत्रग्रेस
नश॥ कनोहदुना छोत्यानुलोम्येभु। कर्मणि जनपनस्थान। हेत्वाधर्ये। त्रनश्सकामिकारिकुंमपात्रक्रुया
कर्णी। ध्वनव्यपस्य॥ कादेपरनश्पनस्यविसर्गस्यसस्यानसमासे। नव्यपसः। कापवादश। पदास्कनोविघा।

स्याद् कर्त्र्थावन कत्रथा। दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिबलिभक्तिकर्त्तृचित्रक्षेत्र
संख्याजंघाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुष्षु॥ एषु कर्मसूपपदेषु हेत्वादौ टः। दिवाकरः। भास्करो निनिपातनात्सलोपाभाक
र इत्यादि। किंयत्तद्बहुषु स्वटा। किंकरा यत्करेत्यादि॥ कर्मणि भृतौ। कर्मशब्द उपपदे कृञः टः स्याद्भृतौ। कर्मकरो भृतकः। क
र्मकारोऽन्यः॥ नशब्दश्लोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु॥ एषु कृञः टो न हेत्वादौ। शब्दकार इत्यादि॥ स्तम्बशकृतोरिन्॥
एतयोः कृञ इन् स्यात्। स्तम्बकरिर्व्रीहिः। शकृत्करिर्वत्सः॥ हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ॥ एतयोरुपपदयोः
इन् स्यात्। दृतिहरिः पशुः। नाथहरिः॥ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च॥ एतौ निपात्येते॥ चात्कुक्षिम्भरिश्च उदरम्भ
रिनापि। देवानां प्रीतिरिति वापि वा नापि॥ आयाहि आत्मलपरिहि इति केविना॥ एजेः खश्॥ कर्मणि उपपदे एजे
र्खश् स्यात्॥ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्॥ अरुषो द्विषतोऽजन्तस्य च मुमागमः स्यात्॥ खिदन्ते उत्तरपदे परतश्च। नन्वव्यय

स्या।शिन्वा नृशवो दि।श्रेग मे ज यथ।वान युनी निल यर्द्द्ष्व न वेट नुद्दस स्तानि म्य ४ख ध।वान मज थ।खिम्यन व्य यस्य।।ख्वि
द्वेठ वन पद्पन पूर्घ प...फ म्यख्स्यान।ननो मुम।युनिं व पथ।निलं नुद्द श।यर्द्द जद्द थ।।नाशि कास्न नयो ष्मी वेटथ।स्न
नेषे ले ना।सिंका पी ष्मा या नो ४ ख्व ध स्यान।नाशि कं व पथ नाशि कें व मथ वेट स्नि न्वा स्न नैव पी।।नाता मुष्मा रव।।प
न यो ४पन यो ष्मो वि दो: ख्व ध स्यान।नाडिं व म:।नाडिं व पथ मुलिं व मथ मुलिं व पथ वान।घटिं व म:।घटिं व पथ स्व ८४
८४ 84 निं व म:।ख वांघ पथ।वानं व मथ।वानं व पथ।मुंज कूलाश्यपु न्ये मुल्वा यानि के विना मुंजेव पस्यादि।।उदि कूले नु जिव
हो।३।नृ शी म्पां नुजिव हा म्पी कूले क मो ता ख्व ग स्यान।कूल मुंजुज थ।कूल मुद्द थ।।वहा न्ने लि हथ।व हि लिहथ।म्र र्ची
लि हथ।मा हुं लि हो ४पीनि के विना वि पिस्ता र्घ या नु कच्चा न्न गुण थ।।परिमा णे प व थ।।परि मा णे मस्या दे पवे ४ख ध स्या दे
न।यस्यं पवास्या सी।।मितन नख्व ध।।पन पो ४पवे ४ख्व ध स्यान।मिते पवी।।नखि पव थ।विघ्नु यो स्नु द थ।वि चुं नुद्द थ।सिमो

गान्तस्यलोपः॥ अनुन्तु दः॥ असूर्यललाटयोर्दृशितपोः॥ एनयोः कर्मणोः क्रमाद्दृशितपोः खश्स्यात्॥ असूर्यम्पि
श्यम् अर्थसमासश्चदृशिना नञ्समीवैवाद्॥ सूर्यं न पश्यन्तीत्यसूर्यंपश्याराजदाराः॥ ललाटन्तपः सूर्यः॥ उग्रंपश्ये
रम्मदपाणिंधमाश्च॥ एते निपात्याः॥ उग्रंपश्यः॥ इरयामाद्यतिरिरंमदः॥ पाणौध्मायते पाणिंधमः॥ स्तनिंधमः॥ क
रंधमः॥ अन्यपि केचिन्॥ प्रियवशेवदः खच्॥ एनयोर्वदः खच्स्यात्॥ प्रियंवदः॥ वशंवदः॥ गमेः सुप्युपिवाच्यः॥ भुजङ्गमः॥ वि
हयसोविहः॥ विहङ्गमः॥ खच्च डिद्वा वाच्यः॥ विहङ्गः॥ भुजङ्गः॥ द्विषत्परयोस्तापेः॥ एनयोरुपपदयोस्तापेः खच्स्यात्॥ णिलोपः
॥ खचि ह्रस्वः॥ खचि परे णावुपधाया ह्रस्वः॥ द्विषन्तं परं वा तापयति॥ द्विषन्तपः॥ द्विषच्छब्दस्य नित्ये द्विषन्तका तो के ह्रस्विपा न द्विष
न्तापः॥ वाचियमो व्रते॥ वाचंयम आस्ते॥ वाचंयमपुरंदरौ च॥ पुमर्थं मनोरवधिमिकिपान्यो॥ वाचियमो व्रतः॥ पूः
सर्वयोर्दारिसहोः॥ पुरं दारयति सर्वं सहतेऽवस्मात्॥ पुरन्दरः॥ सर्वंसहः॥ भगवद्योः॥ नगेरवथ॥ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः

णष्टु कपष्ठ्वव स्यात्॥ मषीकष इत्यादि॥ मेवार्त्रे मयेष्टु ह्रमटाए ष्टु ह्रमष्ठ्वव स्यात्॥ मेघी कज इत्यादि॥ त्र मपादेव॥ य्रमपी
कात्थ॥ ऊेमषिपमड्ड ष्व॥ एष्टु ह्रो ह्यास्यात्॥ वामवधु॥ ऊेमकारेथ॥ ऊेमीकारथ॥ इत्यादि॥ मपादेव॥ मत्रुके हृत्वाय॥
ना॥ स्वाशिने ष्टुवठकरणाभावयोः॥ स्वाशिनेष्टु पिमवके ष्ठ्ववु स्यात्॥ कारणाभावे वार्थी स्वाशिनो मवत्यनेन स्वाशिने मव
ड्दनश॥ स्वाशिने मेवाव त्रै नासं ज्ञापी मृह्व ह्ज्जियादिसहिन पिदमथ॥ एम्पष्टुपिरववु स्यात्॥ श्रि॥ विश्वे मनथअनयेन ८५
७५ रीसामावैपनिविना॥ घनेजपथ॥ क्षुँघना॥ यत्रुसहु॥ यत्रुन पथश्च दिदमथ॥ गमष्व॥ गमः ष्वव स्यात्॥ स्त्रि॥ प्रुनेगमथष्ठ्वन
75 नीनाविहूरापारमर्यानमेष्टु ऽथ॥ एष्टु गमे ऽथ्यास्या॥ ऽत्वसामथ्यादिलोपः॥ स्त्रत्रगइत्यादि॥ प्रवेत्रपत्रयोश्च॥ मघेनम
पक्कर्णीभ उयमो ह्रो पष्व॥ उरसागरुलि ठकाधत्रुनेगमाः पालिके विनु॥ ष्टु ह्रुतोपाधिकारणे॥ ष्टुत्वेन गपिं गम्पत्रे ऽन्नष्टुत
पुगष्टु गप॥ निरारत्रे॥ कोरदेषः॥ त्रत्वन्नादेणि दष्पा मगथवि हौत्रुनेग पुरुपतगाप्तवगा दया व्येवीनेयाः॥ वृत्ति

शीप्ति ५

पिहनथकर्मणि हन्वेर्ड्भ्यसानोः शालिनोः शत्रुवध्यात्रशत्रुहथः। स्त्रियेम्लेशतनमस्तो४। एतयोतुपपूर्वाद्वन्वेर्ड्भ्यसान्नाम्लेशापह
नमोऽपहथः। लक्षणेगाया। पन्योस्लोक॥ एतयोर्हन्तेर्लकस्मात्। लक्षणेघोम्ये। जायाघ्नोना। पतिघ्नीस्त्री॥ अमनुष्यकर्तृके क
र्म॥ कर्मणि हन्तेर्लकस्मात्। अमनुष्यकर्तृकेः पी। पित्तघ्नघृतं। मनुष्यतुश्वाखुघातःशूद्रः। वाहल्याश्रोनघातोहस्ती॥ पाणि
घताल ढोकर्मणि॥ एतौ निपात्यौ शिल्पिनि। नाजस्त्र॥ राजोहनिनाजघ४॥ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च
र्य्यर्थेष्वच्चोकर्मण्युत्तः॥ एषु अर्थेच अव्ययेषु कर्मसु कारणे ख्युन्स्यात्। अनाढ्यमाढ्यं कुर्वन्त्यनेनेति। आढ्यी करणीयसु
भगीकरणमस्थूलेकरणी। प्रियंकरणीयम्बोकिम्। आढ्यी कुर्वन्त्यनेन। अनिषेधलामध्यान्ल्युडपि नानख्यच खुट
ख्युनोऽनूपमे गाद्वि। अनन्वस्य अपत्येवुमोभावोनुः कर्मेतिष्ठु वः। विष्णुभृतुकौ॥ आघादिषु अर्थेष्वव्ययेषु तुवश्च
कर्वीषेभ्युवद्धकस्प ए नेष्वर। अनाढ्यभाघोनवानि। आधीनाचे भ्युव। आघोभावुवः। ह्रापणि मदादिषु ठ्या॥ नि

कन्विनो॥ ना इकः। समानानां पोऽस्व। सहशः॥ सहकात्वन्या इयाश्चन्याऽहकः॥ अोः पक्षस्व। नाइत्रैशसहजःशास्त्रन्याइत्रश।
॥ सक्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदछिदजिनीनाराप्रुपसर्गे क्विप्। एष्वश्रुष्वुपपदेऽउपसर्गे सत्यसत्यपि क्विप्स्यात्। उप
सर्गोक्रिरवनो चन्मश्रसुप्पक्को घाविदिय्य हणीनाति। वदश्चुपि वषश्वसुपिस्य इत्या दीर्घलोपः। श्रुविदा उपनिषन्। श्रीस्पृ
पिवजित्। त्रयस्थामाम्यानियनेणोवा व्यथश्च यण। क्षत्रामणी। शमगो विवि। मुमादिवायो वमनेऽविः स्यात्। सुवमाकः। छ
दसमहः॥ सहेर्ज्विः स्यात्। घाग्वत्। छे दसि। लोकेपानिकेवि। अन्येषामपि इश्यन्त इति विष्यत्रे नेवमथ पनि आह। पू
र्वेपदस्य दीर्घश्च तुनाजाद्। वहश्च॥ प्रषवाह। पत्रौ ब्रनेषश्वावाहा। वहरि। विणनेनेवमशपरिव्राट्। चनसिवहः शक्विवा। च
नसोऽश्च॥ संप्रसारणी स्यनो वहन्नोम्यनस्वान्। ऊनस नश्च नक्रमगमो विः स्यात् वेदसि। विङ्नोरनुनासिकस्यात् स्यात्
विटिवनिवाश्च ङ्गाः॥ सनोतेरनः पूर्वपदस्यात्वे मित्रानमस्यसनोतेः षत्वस्यात्। नजुमात्रस्यागोपाः॥ कूपर्णी॥ ३॥

दधिक्राधातृयेगाः॥ अह्नोनन्ते॥ हन्तप्रियनिनिहृत्वी अहोविणस्तान्॥ अनन्तेसुपिसस्मान्॥ अन्तेतुम्नन्ताद॥ ऊहस्क
पञ्चस्व॥ ऊहःसुपिकपस्मात्॥ वस्वान्तादेशः॥ कामदुघा॥ दिवेस्वेनवहून्कसीसुराडगोष्विन्॥ एष्याःख्विस्यान्ते॥ स्रल
लोककार्यापिसमुदायानिपान्ते॥ ख्विन्विधौपनेष्विनाएनेवहृत्वीनिरेवनवाशःइन्द्रः॥ उन्मानि ऊन्केषीएनेयीमनिऊन्
याशः॥ पुनोदयोऽदएनैपुरोडाश्च वपजनहम्यवयाशः॥ यानोमनियक्षनिप्रवनिपाविवस्व॥ सुपिश्चादेवस्त्राद्वाद
नेसुशाक्षिपक्षिदसि॥ सु सु ददामा निसुदामा॥ सुमास्नेनोल्वमासुपीवा॥ वनिप्रयुनपावा॥ सूनिदावा॥ विवु॥ सोमपाः
अन्येभ्योऽपिदृश्यन्ते॥ अनादेन्ते म्नोःध्यनेसुनीथासामधि॥ नेस्नायिहनि॥ वशादेशकृतनदन्तस्यान्॥ सुशर्मा॥ म्नोर्वानिकः
सुगन्मा॥ क्वनिपु॥ ज्ञानेनिन्वा॥ वनिपा॥ विश्वमोनिम्नान्वी॥ विज्ञावा॥ ऊमा॥ अववावा॥ वनोरवाम्नवावन्॥ विव॥ रोहाने ह॥ अ
धिराहान्नितुपपदेपि॥ सुत्वा॥ यीवा॥ पीवा॥ दृश्याक्के प्रयोगानप्रयोगानुसारार्थी॥ किम॥ उपपदेसन्यसनिवषा

नात्किमस्मात्समर्थवाउत्वात्सन् । पर्जन्यवत् । बाहुवत् । परात्वसाप्यातिनेतात्वस्यात् । निमित्ते सति । रुद्राप्या । वृद्धौ श्यामुडिन्यूद । येस
घू ॰ ॰ स्वा । यासे ॰ घो उपधा । पाइन्वीना । अमा । फिवाणि । याम्विमित्वशी । अयाराी ॰ गा । शस कूनि नि । उतु व्यवा । शनृव का । थरा ।
गा । स्वर्धिनुविनु विसृपि का । हिक्ष्यदिम्पस्वे स्मुना । स्वविं ॰ । सा पिश । यनन्त्रिवनिव पिनापिङ् गेतुसा । यनु श्रवन्तु ॰ । सर्वथा
नुन्व ॰ त्वणा ॥ इसमनव णाक्किपपेमुपनेखादर्गस्व ॰ स्यात् । कृद्दि ॰ । कृमा । कृवमानतु कृन्नास्वनुनायि कस्पार्कि फलो ॰ कुनि
मोनो वा नो ॰ । प्रथान् । प्रतात् ॥ क्षान्वनसि क्ष्वाविमवामुपघाया । श्व । एजान्तुपधायावकान्तस्यदुरस्यात् । को । फला । दोवक्रुनि
न्यूरानुवोन्नूदअनुवौ ॥ नू ॰ अनुवौ । उवकृ । जनानवनीदिजनो ॰ । जनावो । मूर्ध । नाक्लोपथा । रका । दुवरपो ॰ छ्री लोपस्यात् । को
फला । दोवक्रुनि । मूक्ता । मूर्धबुद्धी । मूश्रवुनौ । प्रुत ॰ । को चो । स्त्रादेशो । दार्वधनि के विनु । वीनुना । गमट को ॥ गमट कोपनेस्वनुनायि
कलोपस्यात् । क्षव्यानितुक्ता । क्षेगगनायममनननोव वाम्य ॰ सेय न । पनि मत्रा । यीननान्तुवगम्यादीनां व्येयमूथन्मयेपू ॰ ८१

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये॥ अजात्यर्थे सुपि धातोर्णिनिः स्यात्। ताच्छील्ये। उष्णभोजी॥ सुप्तु क्विबादि नियमार्थी॥ मनः॥
सुपि॥ मन्यतेर्णिनिः स्यात्। अताच्छील्येऽपि। दर्शनीयमानी॥ आत्ममाने खश्च॥ स्वमनने कर्मकस्यात्। चान्ममाने वा णिनिः।
णिन्वाक्ष्यम्। आत्मानं पण्डितं मन्यते। पण्डितंमन्यः। पण्डितमानी॥ खित्यनव्ययस्य॥ कालिंमन्या॥ इच एकाचोऽम्प्रत्यय
वत्॥ इजन्तादेकाचोऽम् स्यात् स चाम्वत् खिदन्ते परे। गां मन्यः। स्त्रीं मन्यः। स्त्रियं मन्यः। श्रियं मन्यः। भुवं म
न्यः। नरं मन्यः॥ भूते॥ पर्यन्तमधिक्रियते॥ करणे यजः॥ करणे उपपदे यजेर्णिनिः स्यात् भूते। सोमेनेष्टवान् सोमया
जी॥ कर्मणि हनः॥ पितृव्यघाती॥ निन्दायामेव। चौरं हतवान्॥ ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्॥ एषु हन्तेः क्विप् स्यात्। भूते
भ्रूणहा। ब्रह्महा। वृत्रहा। नलोपश्च। नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृतीति नलोपस्यासिद्धत्वाद्ध्रस्वे तुक्। तस्य स्थानिव(द्भा)
वात्। हन्तेरेव। क्विबेव। भूत एवेति नियमार्थं सूत्रम्॥ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः॥ एषु कृञः क्विप् स्यात्। भूते। सुकर्म

नि २

इत्यादि। उपपदान्तरेऽपि। यान्त्रकृत्। सोमे सुञः ४। सोमसुत्। चेत्र वत्र षियो। नियमः ४। अग्नौ चेः ४। अग्निचित्। नियमः ४
श्यावनत्॥ दृशेः क्वनिप्। कर्मणि। दृष्टा ४ कैव वस्यात्। पारदृश्वा॥ राजनि युधिकृञः ४॥ राजनि कर्मणि युधि कृञः ४ क्वनिप्
स्यात्। भूते। चवा। कर्माविवक्षापर्यो युधि ४। राजानं योधितवान्। राजयुध्वा। राजकृत्वा। सहे च॥ सहयुध्वा। सहकृत्वा। सप्त
म्यां जनेर्डः ४। अवुजमानन्नुन्नुप लानिस्तनिउम लुक्। मनसिजः। वकुलोके ४ सनोऽजः॥ पञ्चम्यामजातौ॥ जातिवर्जे पञ्च
म्यां जनेर्डः ४ स्यात्। भूते। पञ्चजः ४। अजातौ किम्। अश्वाज्जातः ४। उपसर्गे च संज्ञायाम्। प्रजा। अन्येष्वपि दृश्यते। अन्येष्वपि
पपदेषु जनेर्डः दृश्यते। अजः ४। द्विजः ४। सुयजोर्ङ्वनिप्। स्वा। प्पोङ्वनिप् स्यात्। भूते। सुत्वा। यज्वा। जीर्यतेरतृन्॥ जरन्। क्व
चन्नित्या। इतोऽनि ष्ठामसंज्ञा ४॥ निष्ठा॥ यातोऽन्नि ष्ठा स्यात्। भूते। नमो रेफत्वाऽनिष्ठाव कर्मणोः क्तः ४ कर्मणि क्ता
नि केवल नुः ४ कर्त्तरि। उक्ता विशेषाः। आनेमपा। न्नौ सुनोतेः। यावि श्रुतः। वित्तुषिर्विदितवान्। निष्ठायामन्यः यो पप

यो भाव कर्मणोः। ननोः स्यत्र क्रियार्थे विष्स्यान्। क्रियोपदार्थात्। दार्थान् क्रियायां निष्ठान कारस्य नश्स्यान्। जीणश्च। जीणवा
नाभाव कर्मणोष्ठ क्तिन इस्कामो मया॥ ष्युकश्च क्ति। सिम एकाच् ठ [वर्णो] कां यस्य क्ति न श्च स्यान्। सिनश्च। सिनवान्। सूनः
सूनवान्। क्तुनश्च। कुर्णोर्पुवप्राचोवाप्यथनेनेकावच्चान्ते। ऊर्णुनश्च। वृनश्च। मदाम्यो निष्ठानोनः पूर्वस्य दश्च। रेफदचा
च्योपनस्य निष्ठानस्य नश्स्यात्। पूर्वेष्कारस्य च। रहाभ्यां निष्ठा। चित्तश्च। अयोगादेः। नोवानोर्यः एवनश्च। प्राणासीयोगा
दाश्चात्। ग्रानोत्रिष्ठानस्य नश्स्यान्। गणश्च। ग्लानश्च। ज्यादिभ्यश्च। एकविंशति ल्वादिभ्यो निष्ठानस्य नस्यान्। लूनः
। घ्राघ्रहीघ्रा। ग्रानश्च। कुचो हिर्विधय॥ हूनश्च। पूनश्च। पूत्रो विनाशे। पूनायवाश्च। पूत पन्यत्। सिनोतेर्ग्रासे कर्मकर्त्री
कस्य। सिनोग्रासश्च स्वयमेव॥ उदित्वत॥ उदितो वा नोऽन्त्ये निष्ठानस्य णत्वं स्यात्। भुजो। भग्नश्च उल्लका। ब्राह्मनश्च। व्याद
पउदित स्वपूङ् सूङ्। उङ्। टङ्। चीङ्। मीङ्। नीङ्। लीङ्। ब्रीङ्। नवैते उदित स्पुश्च। सूनश्च। सूनवान्। दूनश्च उदित्म्य पावान्

रयो:
८१ नेद्राउत्रा नः॥ श्यायश्च स्पर्शे निष्ठायाम्। श्यायतः स्पर्शात्सा निष्ठायाम्। श्यानः। वेति केचित्। श्यानः॥ द्रवमूर्त्तिस्पर्श
योश्च सथ द्रवमूर्त्तौ काठिन्ये स्पर्शे वा शीतेऽर्थे श्यः सम्प्रसारणं स्यात्। निष्ठायाम्। अस्पर्शे। हलः संप्रसारणात् दीर्घः। शीनं घृ
तं। अस्पर्शे किम्। शीतं जलम्। द्रवमूर्त्तिस्पर्शयोरिति किम्। संश्यानो वृश्चिकः शीतेन। संकुचित इत्यर्थः॥ प्रतेश्च। प्रति
पूर्वस्य श्यः सम्प्रसारणं स्यात्। निष्ठायाम्। अकाठिन्ये स्पर्शे वा। प्रतिशीनः॥ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य॥ अभ्यवपूर्व ॥४॥
स्य श्यायतेर्निष्ठायां वा सम्प्रसारणम्। अभिश्यानः। अभिशीनः। अवश्यानः। अवशीनो वृश्चिकः कथमभ्यवेन्दु
केनेहासमवश्यानः॥ अञ्चोऽनपादाने॥ अञ्चेर्निष्ठातस्य नः स्यात्। नत्वपादाने। समक्तः। अनपादाने किम्।
उदक्तमुदकं कूपात्॥ दिवोऽविजिगीषायाम्॥ एतौ वेत्येव विकल्पेन क्त्वान्। पश्यविभाषा। यस्य फलविद्विषा
५ जयार्थस्य दिवस्तनतो निष्ठायामनिट्स्यात्। दिवो निष्ठातस्य नः स्यात् अविजिगीषायाम्। द्यूनः। विजिगी ५

ध्यायोनु। पूनम। ब्रश्चू। यहिष्या। स्फो। विनिमल्लोपश्च नन्वी। नस्या। सिद्धन्वात्कुन्वेवन्नाप्ता। निष्पादे यश्च नन्तस्य नपृत्स
योधिविघुसिद्धो वक्त्यश्च। इति फलो मा वा न्नषन्वी। वृक्कश्च। निर्वाणोऽवाते॥ अथ ये निपात्यन्ते नन्तु वाते वा। नि
र्वाणोऽग्निश्च। वाते तु निर्वाणो वातश्च॥ युजष्कश्च। युग्यानि ष्यानकारस्य कश्च स्या। द। युक्ष्कश्च॥ पवो वश्च। पवार्श्वे
ष्यानकारस्य वश्च स्यात्। पद्मश्च। जयामश्च। जायश्च पनस्य निष्यानकारस्य मश्च स्यात्। क्षामश्च। क्षाम वा ना। कृष्णो
ऽन्यत्र स्याम॥ षपूर्वाक्त्मायते। निष्यानकारस्य वा मश्च स्यात्॥ स्फायः पूर्वस्या॥ अपूर्वस्य स्फाश्च सीप्रसारणे। स्फा
निष्पाणाम्। अस्त्राम्यथ मन्वा पार्व पक्वे पष्वश्च स्य स्य सीप्रसारणी। अन्न स्पार्शे योगा नावा। अन्नामावश्च। अस्त्रानश्च
वान्तिकम। ध्यानश्च। अनुपसर्गात्फुल्लक्ष्य विकस्या। ल्लाघा। एते निष्यान्तानिपात्यन्ते न वेन्स्यादे। एप वेस्मुश्च। निफ
ला। फुल्लश्च। गोवामयउ। क्रयत्रनुश्च पनि क्रयाख। उल्ला घो। ऽनाग। अनुपसर्गात्किं। च्यादि निख॥ श्याकाने नो। नि

घायाः॥ल्मस्यात्। निव। नकामा॥ रो किनि परेवन फलोनन ज स्यात्। च पुल्त्वश्च प्रकी। विनश्च। त्र कुयिनश्च प्रलाघिनश्च।
गन्फुल्लमे फुल्लयोर्तुपसीख्या ने। नुदविदोन्नवा बाफो। प्योऽन्यन रस्यात्। ए प्योनि घानकारस्यनोवास्यात्। तुत्रः
तुत्रथ विदविवारणो विन्नश्च। विन्नश्च उन्नी कोदने। ख्विदा नोनि पापास्वयने वा। हिन्स्वनिघापीः ल्मस्यात्। ठन्न क्ष
90 न्नश्चत्राणश्च त्राणश्च घ्राणश्च घ्रातश्च। क्षीणः क्षीनश्च विन्नक्षुदि दिन्नः। विघने विन्नश्च। नप्याख्या पूर्मूर्छिमदाम्। र
प्योनिघा नस्यनो नस्यात्। प्यानश्च ख्यातः। पूर्त्रेयनाल्ल पश्च मू र्ख मत्तश्च॥ विन्नो भोगप्रत्यय योश्च विन्दनोऽत्रे घ्रा
त्रप्यनिपातोऽध्ययम्। भोग्यप्रत्ययोर्वा च। विन्नेत्येवा विन्नश्च पुत्र वश्च चनयोः किम्। विन्नश्च। मिन्नोदकली। अणामाव
मर्थे। पनन्नुपार्नी। त्राय मध्येय्य वडानि। मानमन्यनः॥ रण्नि घायाम्। निरश्रुकुवानि घायोरस्यात्। निःकुलि
नश्च। वसनिकुवादिः॥ चाम्योनिघा यानिय्यमिरस्यात्। उजिनश्च ज्ञुघिनक्ष न्नक्षेश्च पूजायाम्। पूजार्थाद्यै क्वानि

क्षयोर्न्निषेधमिदस्यात्। श्वेविनश्चगनोनुस्वकश्चलुनो। विमोहने। लुनः क्तानि षयोनिदुस्यान्नुगाश्चो। लुनिन
गाच्येन्नु। लुवश्च। क्लिशः क्तानि षयोनिश्च।। क्लिशः क्तानि षयोनिद्वास्यात्।। क्लिगिनश्च। क्लिषश्च। वमञ्जपर्वी
रवसान्निषेधायाश्चनिकेविनाचमिनश्चाबान्वश्च। जपश्च। जेपिनश्च। विरवश्च। विरवसिनश्च। श्वारवश्वश्च। श्वार। स्वासि
नश्चपूनश्च।। पूनः क्ताया। ओस्विदिदीमादेः क्विदेनिषयोनिद्वास्यात्। पूङश्च क्त्वाव।। पूङः क्तानिषेधावमनटाके
नस्यात्। पविनश्च। पूनश्च निषेधायी। ञिस्विदिदिमिदेः क्तिदिदनश्च।। एप्यरसटनिषेधाकिनस्यात्। रापिनश्च। श्वादिक
र्मणिनिषेधावक्तव्या। श्वादिकर्मणि क्तकेवैकिव। श्वादिकर्मणियक्तः प्रकर्वैविस्यात्। वाद्गावकर्मणोश्च।।
विभाषाभावादिकर्मणोः। भावेश्वादिकर्मणि वस्ता। निनोनिषेधायामिदुस्यात्। प्रस्वेदिनस्वेदनश्च प्रस्वेदितेनन।
मदिनमान्क्षेदितमा वर्जितं। पत्नेस्विन्नेनेत्यादि। मजस्विदिनिनापीञनमार्थान्मषेनसटनिषाकिन्नस्यात्। म

बिनिथश्च निक्निपाकिमृत्र पमृबिनैवाब्बी। ३दु पयाज्ञावादिकमिणानन्यनरस्वाम्॥ ३ कानीपघारमावादिकमिणोष्टस्ते टनिषा
किन्नस्वा॥ घोनिनी घुनिनेनन ष्वेघोनिनश्च घुनिनथश्चा दीनामिष्टिय। नेष्युविनमानिषापसेटि। सटिनिषायीपरनो
ण ल्वीपथस्वान॥ माविनथ॥ माविनवान्। ख्वीदिनशनिने टू। गूनथ॥ दीष्वथ। गुहू। गूढस्थ। वनु ३ दीनो वेनिक्विविकल्पिने इन्वा
९१ न्निषायीनेट्। चनथननथयनथ। सानिवेङ्क्या दि डिभावे चा ष्वेप्सिता नीनपानेनेनि पारनादिट्। पानिनथ। स्वनेका स्वाद ६१
ट्। इनिद्रिनथ। ज्याविविषानिगुणथ। जागनिनथ। चादिकेमे पिनि षायाम्। शाकिन निट् वेनि। योनागाथ। यत्रक्षयाकि
त्र्यविनुयिवस्व नाभावेनवन्येव। यक्नमनेन॥ नुयस्वानघान्निलग्न ल्लिष्ठा विरघफादिवा॥ निमथमनस्वमो। विस्यस्व
स्वानायास्रमृशेषु॥ मीयादि ष्वष्वसुनुघा इयोः सोका त्रानिपान्यन्नी। पौणमनायासथ। कपायमेदथ। स्वन्यत्र कुनिने
स्वन्निनमृ। घनिनी। जागिनम। ल्लाछिनमृ। विनेमिनम। पाणिनी। वादिनम॥ इषियसविज्ञान्या॥ प्रनो निषापामाविनये

अनिटोस्य । अदृढः । विदृढः ॥ दृढः स्थूलबलयोः ॥ स्थूले बलवति चार्थे निपात्यते । दृहेर्दृहिर्नोऽन्यत्र । प्रभौ परिवृढः । परिदृहि
नोऽन्यत्र ॥ कृच्छ्रगहनयोः कषः । कष्टो निष्ठायामिडन्यत्र । कृच्छ्रगहनयोः । कषितोऽन्यत्र । कषितं वनम् । कषितमन्यत् । घु
षेर्विशब्दने । घुषेर्निष्ठायामिडन्यत्र । घुष्टा रज्जुः । अविशब्दने किम् । घुषितं वाक्यम् । अर्देः संनिविभ्यः । संनिविपूर्वा
दर्देर्निष्ठायामिडन्यत्र । समर्णः । न्यर्णः । व्यर्णः । अर्दितोऽन्यत्र । अभेश्चाविदूर्ये ॥ अभिपूर्वादर्देर्निष्ठायामि
डन्यत्र । सामीप्ये । अभ्यर्णम् । अभ्यर्दितमन्यत् ॥ ण्यन्ते चाध्ययने वृत्तम् । ण्यन्ताद्वृत्तेर्निपात्यते । यथा । अध्ययनेऽर्थे । वृत्त
श्छन्दः । वर्तितमन्यत् ॥ २२ शृतं पाके ॥ श्रायतेः श्रपयतेश्च शृतभावो निपात्यते निष्ठायाम् । शृतं हविः । अपाकेऽन्यत्
श्राणा यवागूः ॥ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः ॥ एते निपात्यन्ते विकल्पेन निपात्यन्ते । पक्षे दमितः शमितः
पूरितः । दासितः । स्पाशितः । छादितः । ज्ञापितः ॥ रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ॥ एभ्यो निष्ठायामिड्वा स्यात् । रुष्टः । रुषितः ।

न्त्रःसमिनःनूर्णीशःत्पनिनथःसंवुत्तःश्रीवुजिनथःस्वन्नौःश्वनिनथः। हबेर्लौमसु। श्चेर्न्निघ्नायामिरवास्यान॥
लोमस्वर्थी। हृदी। हृबिनी॥ विस्मिनघ्ननिघ्नानयोश्व। हृस्तशःस्वबिनोवामेत्रथविस्मिनःघ्ननिहृनोवन्पर्थेःअपविन
९२ स्वा। वायनेर्न्निपानोवा। अपविनथःअपवायिनथः। प्यायःपी॥ प्यायनेःपीनावःस्पान्न। निघ्नायामृ। पीनेमुरवम्। स्व ६९
र्गा। दन्पत्रवा। प्पानःपीनथःस्वदथःसोपसर्गस्यना। घ्नप्पानथः। त्राःपूर्वे प्पीचूयसोःस्पाद्देवा। श्रापानोःचुःश्रापा
नमूवथः॥ ह्लादोनिघ्नायाम। ह्लादःकस्वःस्पान्निघ्नायाम। घ्नहृन्नथ धानिस्पन्निमास्पामिनिकोन॥ पवामिकानोःस्त्रा
देशःउस्प। ह्लानादोकिन्निपशेदिनःसिनःमिन्वेनःस्यिनःश॥ गा। छोनन्पननस्याम्॥ शानःगौनःश। छ्यानःक्लिनथ
स्पनेर्न्निपमिन्वे ब्रने। सीयिनेव्रनम॥ दधानेर्हिःश॥ दधानेर्हिथःस्पान्न। नादोकिनिपशे। हिनथदोदघ्नोश। नुसिकस्पघ्न
दन्पस्पदःस्पानू। नादोकिनि। त्रादेशस्पनात्रन्वेःस्वानिदोर्घन्वेदोषथदोत्रन्वेनिघ्नायानन्वे। यात्रन्वेभस्त्रनावयनस्पानी

त्वेवर्त्तीः स्त्रथ । घोः किम् । दानथ । अव उपसर्गात्त्थ । अजन्तादुपसर्गात्परस्य दाः स्थाने स्याद्घोः त । सख्यात्तादो कि नि परे । प्रत्तं
अवत्तं अवदत्तं विदत्तं वद्दत्तं वादि कर्मणि । सुदत्तं अनुदत्तं वा निदत्तं मिति वक्तव्यं । दत्ति ॥ इगन्तस्योपसर्गस्य दीर्घ
स्याद् । दाः द्दितो नकारे परे । नीत्तम् । सूत्तम् । वृत्ता स्यन्तात् घेदा चात्त । गीत्त । पीत्त । उत्स न्यात्वी । जात्त । स्यात् । आत्तम् ॥ अ
रोऽर्गाविर्ल्पाप्रिकिति । अदो जग्धि श्यादल्यपि तादौ किति । श्कान्द । वच्चमा । फाफनि सर्व्वेणि । जग्धः । अग्यादि कर्माणि
कः कत्वो निवा । प्रकृतः कटः सधप्रकृतः कट इत्रेतानि प्रयोप्यापान्यर्थौ । ण्यदर्थो भाव कर्मणोः । न को ऽन्यत्र निष्ठा यीपर
नथक्रियोः दा वृष्यान् । पक्वो ऽपि सथनात्को ऽयं देन्यपोः । क्रिया निष्ठा यी दर्व्वी वा स्यान् । यो को ये देने वा र्थे । ज्ञो पाप्तुर्म
वौक्तिनापूर्व्वा । ओणाद्यिन पस्त्वा क्तिओ वा । भावे दावो वनि कावि न । प्रक्तिनो प्र ज्ञीणी नेनानि नदी भ्रीस्तान् इः कोयले ॥
श्राम्यां स्यात् इः समस्य भुष्यात् । कोयलेगम्भो क्तिः स्त्रातः शारोत्र जु । नदी स्त्रथ स्पुपानि कथा । गत्यर्था कर्मक श्लिषशीङ्स्थास

वस्तुतः तत्र हेतुर्यैर्निष्पाद्यत्व॥ एतत्कर्त्रीति कस्मात्। नावकर्मणो ख्यातेर्गिरा त्रानत्व गीर्गीरत्व ग्लानत्व सत्वलक्ष्मा मारि
क्षो हनिस्थ गो भ्रमा विशापितो त्वनिथवेकुं नमा धिष्ठितः। शिवमुपासित्वत्व निदिग्ध मुपोषितत्वनाम मनुजातो भ्युत्वग
93 तुडमानूदोगो विनष्टवि रवमनुजाणि। नत्र अपके घ्ना घ्नागीगा नेत्याद्दिः। अनेन कर्मकत्वेः पितपस्त्वा स्यानकर्मक ८२
वानाप्यप्युक्ति थाको विकरणे घ्नोव्यगान्यत्वन्यवसानार्थित्व रव॥ निष्ठलाथीअन्यथीजोऊ नाया ह्वावि कालणे कथ्या
नापथापाश्रीवाप्युकुन्दस्याचितमि दमुः। इदं जानेनापि देश्युक्ते नेदं नत्रस्सेन्पूर्वुगीष्यादि दिजवथ युक्ते मेवा मक्षादि।
मपायाकालेण युक्तेथपनादन्यादि कस्मात्। मीनरक्त। मीनेवानोवर्त्र मानेकथ्यात्। प्रन्धिष्ठा। न्दिवत्रस्नि दन्या।
रध्यथा। मनि वुद्धि पूजार्थेर्थेभ्यरव॥ एतैः पञ्चो वर्त्रमाने कस्मात्। मामपनथ दष्टवुद्धथा विलिवथ पूजिनत्वा त्वत्रि
नत्वान्वा नकुकमापि। गीलितो रजितत्व आत्रक्षा वाकुष्ट दयुत्वन्यापि। मन्त्रोनूषिनदन्यो व सुत्रत्थापिनष्ट्रष्टः। दन्या। घा ८

पत्रे माने ज्ञान ब्या ४। नपुंसके ना वेक्कथ ४। ज्ञानोऽश्च कस्याज्ञावेर्थे सवन्कौवे। हसितं। जल्पितम्। शयितं छात्रस्य। लिट् ४
कानक्कौ। लिट् ४ कानजादेशो वास्यात्। छन्दसि। प्रयोगवशाल्लोकेपि निक्कौ विना। तुनावात्मनेपदस्मात्। छिन्वाहि। विक्कापः
। क्वसुख्व। लिट् ४ क्वसुरादेशो वास्यात्। कानक्कौ। वमक्षानौ। जगतो विवीन्यत्र ४ कानउवासणार्थे थनेन क्वसौ वपिनगुलः
गजागवान्। पेचानो श्वानणार्थे थनेपोक्वन्सो गुणाथ जगागधीना। वस्वेजाघसाम्। क्वनादिन्वानामेकाचीमाद्वन्त्रानाव
घसेश्च क्वन्सोनित्यं स्यात्। नान्येषां। आदिवान्। आनिवान्। ददिवान्। दनिजावेयशिनिनिम्याळोपिन्वेनश्चा ४ त्वन्यामावा
वेट। ददिजिवान्। पेजिवान्। पपीकिमाव मूवान्। वसोऽश्च सिपसारणम्। वुगागमश्च। वभूवुषश्च। वभूवुषा। वसुस्र
ष्विनिदश्च। वभूवन्। वकारान्ते क्विनि ह्वोश्युटाविनिकेविरा। दुधूवान्। दिदिवान्। दिदिवुषश्च। विविवान्। विविक्वान
विना। आगमहनविदविशदृशां दा। पक्षाव सोनित्यं स्यात्। जग्मिवान्। जगन्वान्। जघ्निवान्। जघन्वान्। नोदादिके

वो ८

विदविरा।।विविदिवान्।विविद्वान्।विविशिवान्।विविश्वान्।द्योरवेमि वाब्धी।ददृशिवान्।ददृश्वान्।।दास्वान्साकान मी
श्वीश्व।।एते छन्दस्य त्रानिपात्यन्ते।।उपेयिवाननाश्वाननूचानाश्च।।एते निपात्यन्ते।नात्रोपसर्गस्तंत्रं।समीयिवान्
९५ ईयिवान्।गायत्र्यः कानविगुणा वनिकवित्।ऊर्जायाणुथज्ञागायाणथ।लटश्शतृशानचावप्रथमासमाना वि
करणे।।लटश्स्थाने यान्तृशानौ प्रथमायां परे कार्येनानस्य।।त्राद्दि।पचन्तं वैवेचं पश्यं।पचन्तं वैवेणकनम्।
नङानाविन्यान्मनेपदसंज्ञा।कर्त्रीगेफले यानवाच्याने मुक।।यानेपदे चाप्यागस्य मुगागमश्स्यान्।पवमाने वैवे ६४
पश्य।पवमानेनवैवेणकृत।पुनर्लटुक्तेश्चप्रथमासमानार्थे करणे।पुमनद्विगथा।माय्याकोये।।मापवन्।
मापवमानथमापवन्विन्यर्थशसीवाचनेव।हिपवन्।हिपवमान्।।लक्षणहेत्वोश्क्रियायाश।।क्रियापालकयो
हेतौवार्थेचानोजिरश्शानशानोप्त्रश।शयानाभुञ्जते।अधीयनवसति।कृन्पचश्पापमानम्।।इदासश।।आसश्पस्या
१०

श्वानस्येस्यान्।श्वोऽस्यपरस्येम्यादेवा।श्वासीनक्षविदेश्यातु र्यस्तुथवत्रेऽस्यपरस्यशातु र्यस्तुनादेशो वास्यात्।विदन्नादि द्वान
विदुषा।।नेमन्।।नेशन्नागानवोसनसीनो सथ।नटयसद्वा।।लिटःसर्मसेत्ता।कादेयोस्वश।य्य वस्यिनदविकल्पेनाद्यथमेर्
योदिषुनियमन्यत्र वा।करिष्यत्री।करिष्यमाणी।हकरिष्यन्।अत्र कीयिष्यन्वसादि।वृधमेका र्थेन्वेकारिष्यति।क
रिष्यन्।।पूङ्ञ्‌ओऽश्शानङ्।श्वाम्यीशानङ्ग्रत्यपश्स्यात्।पवमानअपयजमानथा।ता।कोल्पात्रमेवबनध्वकिषुवान्
या।रक्षुगम्येषुचानोस्वानशस्यात्।योगीमुनान थकववेविश्वाणाथशत्रुनि ब्रान्था।इङ्धायो।ऽश्वत्रक्षाक्षिणो।श्वा
श्चीरान्स्यात्।अत्र कक्षिणि कर्त्रनि।स्ववीयन्।चानयन्।द्विषोऽमित्रे।।द्विषन्।।अत्र हेऽप्रयीसायामृ।अर्हन्।।श्वा
कश्नक्षीलद्धमिनल्पातु कानिषु।इनश्पर्तीकिपमनिव्याप्ययेवृत्यपास्त्रेनक्षीलान्‌स्तुहेयाथन्नाधामोस्वन प्र
लाययश्स्यानक्षालादौ।कर्त्रीकयन्।अत्र लिङ्ग्नानिनाजस्भूयपाऽनोस्मदुवपप्रप रत्तुवधुसहवरद्रष्टुवा।।पस्यह

ष्णुच् स्यात्तच्छीलादौ। अलंकरिष्णुः। वनिष्णुरित्यादि। नाळालिके ष्णुचासनुपन्यायोनातेनालंकर्त्रेति न। णेश्छन्दसि। णच
न्तादिष्णुच् स्यात्। छन्दसि। लोकेऽपीति केचित्। कारयिष्णुः। भुवश्च।। भविष्णुः। वार्त्तेऽनुक्तेऽपि। भ्राजिष्णुः। ग्लाजिस्थश्च
क्स्नुः। एभ्यः क्स्नुः स्यात्तच्छीलादि। भुवो ग्स्नुः हुवश्च। ग्लास्नुः। क्ङिति च। गुणः। जिष्णुः। स्थास्नुः। भूष्णुः। कथं किति नीत्यत्र गका
९५ रप्रश्लेषात्। भूष्णुः। त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः।। एभ्यः क्नुः स्यादुक्तेऽर्थे। त्रस्नुः इत्यादि। ग्लाक्षिपवपनिमज्जश्च स्नु
रिति केचित्। ग्लास्नुः। क्षेप्नुः। वप्नुः। निमङ्क्षुः। चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच्। चलनार्थाच्छब्दार्थाद्युच् स्यात्। उक्ते ८५
ऽर्थे। चलनः। कम्पनः। शब्दनः। रवणः। अकर्मकात्किम्। पठिता विद्याम्। अनुदात्तेतश्च हलादेः। हलादेरनुदात्तेतो धा
तोर्युच् स्यात्। वर्तनः। लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशॄभ्य उकञ्।। एभ्य उकञ् स्यादुक्तेऽर्थे। लाषुकः। पातुकः। स्थायु
कः। भावुकः। घातुकः। इत्यादि। जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन्। एभ्यः षाकन् स्यादुक्तेऽर्थे। जल्पाकः। जल्पा

११ ११

की॥ वना कस्मादिति स्यहित्वटहितपनिहयानित्नानि शास्त्रान्मस्त्रानुव्रा। एष्मन्त्रालुव्रस्मादुक्तेर्थीस्यहपानुश। गहग्रहणे। गृ
हपालुश पनपालुश। एतेत्र पश्वुनाहावहन्त्राश। हयालुश। निपूर्वी शानित्रि। निशालुश नपूर्वी शानिशो नात्र नानिपास्मनानि
पालुश यशालुश। यानिवालुश। शयालुश। दापटसिसरत्तदोनुश। एष्मोनुश स्मादुक्तेर्थी दानुः। वानुश। सेनुश। शदनुश्च
नुश। सघस्प दष्कमनव्रा। एष्मावष्कमनवस्मात्। स्नमनरथ घम्मनरथस्त्र मनरथा। मैत्रभासमपिदोघुनवु। एष्मोनुनवस्मात्। मैत्रेष्टक
मिकर्त्रेति षिन्वानुक्त्वी। मेगुनरथ। मासुनरथ। मेदुनश। विदिदिदिदिहिंद्रक्तुनवा। एष्मष्कुनवस्मात्। विव्रे नव्रे महणी विठनश। छि
द्यमेदष्कर्मकर्तृविति। मिदुरश। छिदुरश। दणेनरश। जिमत्रिभिः पूर्वकारपस्मादुक्तेर्थी। पिन्वानुक्त। इत्वरश। नश्वरश। जित्वरः
स्त्वरश। गत्वरश्चाश्चर्यानिपात्यनेगत्वरा। जागुरूकश। जागर्तेरूकः स्मात्। जागरूकश॥ यजजपदंशां यङः॥ एष्मोर्यत्रेय
दूकश्च स्मात्। यावयस्फूकश यायजूकश। दंदशूकश। यायजूकश। नैरवावायावदूकश। नमिकंपिस्म्यजसकमहिंसदीपो रश॥ प

योनश्स्यान। नम्रश्केव्रथस्मेरथ गसुदोन्कणेनम पुब्रिथम्र नस्रमासिननामिल्यथेश कम्रश्छिव्रथदाप्रश्रासनातीसि
मिऋउथसनन्ना दातीसिमिन्जिन्याविउटस्यान। निस्पुटप्वातीसिनि क्रापेस्पय हर्णेग्वातेमुश। निगुट। विंदुथ। हुक्रुथपनै
96 निपान्यो। वेदनौयालो। विन्दुथप पण तालटहकुथ माबायीवासृक्रिम्न गनिनामिगामिस्पटकिकिफिनौवाम्यो। नोव
लिङ्कश्राघ्वा। दादविथवक्रिटसम्प्रिट। गजिटनिमिथ गम्पिथसहिविवदिनजियनिम्यायङन्नेम्पटक्रिकिनौवाव्यो। सा ९६
नहिथ वावालिट। वावदिटपापनिथस्वपिन्नबोन्नीगिङ। ग्वाम्र्यानगिङम्पादुक्केःथी। स्वप्नकानृप्नकानृभुजो। चूबो
पानिकविन्ना घ्ण्णका। यूत्वेघोनातुथग्वाम्पामातुस्यान। यनातुथवेरातुट। मियउक्कुकन्कको। दीतुश। मीलुकटक्रुक
नपिवाप्यान। मीतुकथस्पयामासपियकयोवननुशप्योवनवृस्यान। स्याववथ। हुखवनशपिरवनट। ग्रमदोष्ठपानिके
विना घरवयङ। याने्र्यङन्ना। घरवस्यान। ग्वनौलोपथनस्पदहान्वेनिन्नाविङपङ्वैर्णनिमिन्नग्वानो। पिनायायावनथ

१२ १२

श्यानगासवुर्बिघुनोजिपूनुयाकस्तुवथ। क्षिप। पष्पथछालादो क्षिपस्पान्। विन्नाह्। माथवूथ क्षिघुन। कुकी। यूथगवेनह्
धिस्व। न्क्षयाकस्तुन्। चन्येम्योधपि द्रपन्त्र। चन्येम्यो। पिक्षिप द्रपनोन छालादो। क्षिपस्पान् विनाह्। माथमिन्। क्षिन्। क्षि
थविघर्ईपनस्तुकटघुनुसाणीदार्बी। स्प्रिप्रसानणीव। वन्त्रनयावाक। पृछ्ननिपाह्। न्त्रायान:स्वोनानि न्त्रायानस्तूथ
कटघवनो। कटघूथ। गवनानिजू। न्यप्रनोस्याथ घुनिगामि नुरुनीनीद्वबु। चानना दिघुन्। गछनिजगन्। नुहोनेह्
धिस्वा। नुहान्पनया। जुहुथ्यायने:सीप्रसानणीव। चाथहृपये। न्नस्पक्रस्वद्विन्वेव। दार्घनोनिदद्रा। स्तुडुपनि ब्रगीदा
धिस्वनिक्षेविन्। घवनिस्वृथ द्रवनिडूथ। पनिव्रगञि। पनिन्नाह्। घगियह्णान्। पिवंक्रयनानि मिन्नहूथवयनानिकुथाया
प्यायने:श्यापाथरन्याहि। स्तुवटसीतोनन्यो। थस्तुवथक्षिपुस्पान्सीनापायान्नोव। प्विन्नपूथचनिकाघमणीपानन्वनेस्वा
निघनिस्पूथ। विप्रसीन्योस्वसीनापी। पष्पथपना क्षुवो कु:स्पान्। नतुसीनापाया। विघु:प्रस्तुउथस्तुथ। मिन क्षादिस्वा। मिनक्षूथ

गीत्तु ३स्वयंभूथ नीदा ग्रसुयुयुजस्वु तुदमि प्रिवमिहपनदेशान दीक्तणे ॥ दादेश्मनस्मान । कनतोर्ध्वी । दान्यनेनेनिगात्रम
नेत्रम । गग्रम्रपोत्री । योत्क्रमन्स्रोत्रमानोवी । प्रेत्रमशासेकमापड्गी पत्री देव्या । नञ्गी । त्रत्रिलूमूसूवानिसा हिवानिप्यपंइत्रण ।
९७ कनणेइत्रणप्या न । त्रविमिल्या दिपुवथ्र्सकायामान्त्रस्या न्कनणेइत्र उस्पान । नाम्नि । पविन्नेदर्भ थउणा इ पोदकुली । उणा ६७
इयथ्धन्यया वत्रेपानेसीत्रा पीव वकुलंस्पुशनेवकविधिहिना । थ्केविम्बयोगा । उन्नीपत्रोमि नाम्पु वानुनूपा । कोघन्यपा
सननथपनमा । कापोद्विघा इतुर्वेचमेनकाग्रमुणाहिमु । कूवापा । ञमिम्वदिमा । पयूम्पउण । कातुंशवापुशपापुश ञ
मुश । मा पुश । स्वा दुशमा घुश । त्रा पुथ गमेजेगोथ ंला नुदिम्योडे । ञौथनोश । मिननिगामि या व्यविधाम्रञुरिष्यमुन ।
सेनुथ श्रीनुथ । कोप्पाइस्यादि । त्रविन्हृम्नृतेवियंपइथ त्रविथनरा । श्रंञीश । लञ्वेर्युद्दा । ञम्भीश । सीम्यानो । ह्मायनेर्द्दा । सीम्बा
नो । म्बीवाऽग्रपु श्री । मूलनिविम्पीकन । फोत्रथ ञत्रथवेम्रत्रश । गीऽप्मीऽञनिनन्निनश्वा । गीऽपत्रश । पीऽपत्रथ । गनर्यनिश
१२ १२

नन्दपन्वथाम्बुदन्जिस्यद्गिगिदिहिदजिम्यञाप्य थ क्वबाप्य थ दन्नाप्य थ स्वहपाप्य थ नाप्य थ जपाप्य थ ष्ठनिहनिष्ठुनि
गादिमादिक्रदिम्योणादि तुवा। पञ्चोण्यन्ते भः नुवस्यात्। मः क्वबान्त ष्ठ्यादि थ ष्ठनयितु थ ष्टुबयितु थ पोबायितु थ
गदयितु थ मदयितु थ कदयितु थ कृगृघृ गागम्य थ ष्ठन। कार्लिचि विथश्च विकृनां तिप्तुकेर्गुणाथ नागं विः
क्ष्मुना स्पष्ट वागुक्ताः स्तु तुमुन्। ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्॥ क्रियार्थायां क्रियायामुपपदे चार्थे भविष्यति
तुमुन्ण्वुलौ स्तः। मात्रन्वाद्व्ययी। कष्टुं व्रजति। कष्टे दर्शको याति। भुनश्च वृत्तु लुके या पने नात्र वासत्रूपन्या
पौनर्जाद्यपहृति। समानकर्तृकेषु तुमुन्। इच्छार्थेषु क्रियार्थोपपदार्थेषु मनन्त। इच्छार्थेषु उपपदकर्तृकेषु उपपदेषु तुर्वं
नोस्तु तुमुन्स्यात्। इच्छति भोक्तुम्। वाञ्छति। वीक्षनिवा। इच्छन्नकोनिष्पार्थे विवृ योगान्ते। वाकश्च का। ग्लावत्रमल
भक्रमाद्दीध्मार्थेभुव तुमुन्नाप मृ पपदेषु तोष्टुमुन्स्यात्। यको निभोक्तुम्। एवं ष्टम्बानामीमार्थेनयनिविध
सहा

नेबानोक्तं।कालसमयवेलासुतुमुना।पत्तुघातोस्तुमुन्स्यात्।कालश्चसमयोवेलावानोक्तं।भावववनारव।क्रियार्थीयी
क्रियायीभविष्यतिच्चनाद्यस्वसुः।उपायया।नि।पाकायव्रजति।पद्रुजविग्रस्यशो।वृत्र।पृष्यायघञ्स्यात्।भावर्थे
५४ विकासुत्वयोपवाघजादेनपवाद्दश्चपघेर्स्मोपाहृश्चागशवेशश्चस्पर्शः।नस्थिनो।सर्वेस्थिनेकर्त्रीनिघञ्स्यात्।स
रः।भाविपक्षपवलेत्तुव।।उपसर्गस्यघञ्यमनुष्यवहुलम्।त्वनीसारथ।विसारः।प्रसारः।भावे।।पान्वर्थेवाव्ये वा
नोघञ्स्यात्।पाकश्चरकः।कालेऽव्वरपदेद्देदस्यवघाद्दे दीर्घःस्यात्।नीकारश्चश्वनूकारः।रकश्चकिम।प्रकारश्चश्व क
र्त्रीनिवकानेकसंज्ञायाम्।।चालोर्घञ्स्यात्कर्मादेवाव्यो।सिद्धापी।भास्यानिसघासश्चवादसंज्ञायामपि।कस्वपुद्दायो
द्वश्चरानजसोकर्त्रेनिणिल्लुक्।दानाथजानाश।पचना।रवर्णान्ताद्नस्यात्घानादो।घसोपवाद्दश्चवय।जयथद्वर्णेनपू।।
द्दकानान्त्रादुवर्णान्ताद्वघञ्प्स्यात्।भावाद्दो।कत्थगतरश्चत्ववटः।इऽस्व।घञ्स्यात्घञस्याद्भावोघो।नाव।स्वप्यायद १२

भुव ने

उपे स्याद्वी परेयस्माम्रउ पाघ्रायथैं ग्रचमेवाकैंराद्दो।। विमूर्घान्नभ्रूस्त्रश्चग्नमग्ना: ध्नुगोणिर्यानुयादे।पटस्पाविस्त्रा
यद्देतु। वाभ्रस्पाविस्त्रैरैश्चबन्नपाध्व।न्वे र:स्पान्।यनिग्नापिव।उपसर्गेरश्वात्रेरश्याद्देत्रपस्पान्।मावादो।घ्रघस:
धातोकिम। घासथ। समुदोर्ज्रश्पयुभ्रु।समुन्नूर्घारजने न पुस्पान्।माावाद्दो।पशुविभये चनायामिन्तुन्केवाम
वोन्।समज्रश्पयुसेघथ।उद ज्रश्पथुवेरणमाम्रान्यक्समाज्थउदाज्थनोपावोपदेयानिनदृह्विथयमथ।ग्रा
वमाद्स्तुन्वावामथ।कामश्वामश।व्रमादेस्कन्त्रामः।स्वपथ।वामथ।वमथ।विस्यामथ।विस्तमथ।विस्यामो।रपयद्ध
रिं।नाायिकायोहिन्मोविल्वलोग्राचानग्र।हनरवबघथ।हन्तेर्नुपसर्गोव्रावेभ्रपस्पान्।हन्तेर्वधादेशाव
वघ।घ्रमोपी।घ्रश्वान।थ।नििमीलिपीरवलवोनान्वनिनेघथ।निमयथ।मयथ।विलयथ।लयथ।कर्मव्यनि
हारेणवृह्नियाम्।।क्रियाव्यतिहानेगेम्प्रवानाणिवस्पान्।मावाघेसवस्त्रिया।। णवथ्ष्व्रियपीवन्।। ष्व्रियपीविहिनाप

नत्वान्तस्यार्थेऽत्र त्रस्यात्॥ न द्विनत्वान्नय्वास्यामिन्मे घाप्रे। नकर्मव्यनिहारे। कर्मव्यतिहारेऽर्थे भन्यपेपेनेवप्पा
रा स्वादिहृद्विशाटिहाणिनिङा पुः॥ व्यावहारायत्र निविशोभावे रणुः॥ यमिव्या योगम्यायांमा वेङ्गुनस्मात्।
११ स्त्राणिनुणश। इङुनत्वान्नत्वार्थेऽत्र णस्यात्। स्वादिहृद्विशरनण्यपन्ये॥ समिनाविलीवद्वेनो। उपसर्गात्तवलब्रेमा। ८
उपसर्गोल्लसेर्नुमस्यात्। वन्निघमिवा। पलीमठा स्वानिङुलेनठा। स्फुलनिस्फुलन्यौ दीनौ। च्चेनयोरेव स्वान्वेस्यात्
घमिस्फारश स्फालश। निवासविनिशानां पसमावाने स्वादेरवकश पञ्चवर्थे पुविनोर्वे गेत्रस्यात्रानानात्वादे ८
च्वस्यात् नकायोर्निवासथञ्जनिनिकायश। कायठा यतीनानीरूरणगामयति निकायश। घमिवमावकरणयोः
भावेऽर्थे करणार्थे च घमि रञ्जेर्नलोपश्चस्यात्। रागश। स्वनयोश कि सत्जन्यस्मिन्निनिगश स्यदापवे। निपानोदपी
दगोस्यदश। स्वन्यत्रस्यदठा। स्ववादेर्घोभय स्याहिमस्य याठा। पत्नेनिपात्यन्ते। स्वावादश। स्ववलोकदश। पृषठा। ईपनी
२५

उष्मा।ऊष्मनी।पयस्वयथ८।ङ्कितश्क्कि८।उइतस्यवातोर्भावादौ।क्कि८स्यात्।केभी निन्ती।क्किपन्नपयात्रा।त्रि
मेमस्यान्निर्दृन्नेःर्थी।करणेननिर्दृन्नीकृत्रिमम्।पक्किमम्।द्वितोंथुच्॥टुउन्ूयस्मनतोःथुच्स्यात्
भावादौ।वेपथु८।श्वयथु८।यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्।यस्मोनङस्यान्नावादौ।तृष्णा।यज्ञ८।
याच्ञा।यत्न८।क्ष्णो८शृष्ट।विश्न८।प्रश्नेचाऽऽपकान्नसंप्रसारणं।रक्ष्णु८।स्वपोनन्।स्वपानावादोनन्
स्यात्।स्वप्न८।उपसर्गेघोः८किः८।प्रादावुपपदेघुसंज्ञकात्कि८स्यात्।भावादौ।अतोजोपः८।अन्तर्द्धि८
व्यादिश्च।वि८।कर्मण्यधिकरणे च।कर्मण्युपपदेऽधिकरणेऽर्थे घोः८ कि८स्यात्।उदकंधीयतेऽस्मि
न्निति।उदधि८।पयोनिधि८।स्त्रियां क्तिन्।धातोर्भावादौ क्तिन्स्यात्।नदन्तरवस्त्रीलिङ्ग८।कृतिः८तु

द्धिःश्रम्भ्यतिःह्लादःइति योगविभागान्नक्तिन्निष्कःस्वःश्रघ्रूद्वित्रिःत्रूर्वित्रिःफुल्लत्रिःवायतेःक्तिनि नित्यं नि
100 मानःश्चपविनिःकीडूयतो क्तिन्।श्रतोलोपःतस्ययलोपकर्त्तव्ये स्थानिवत्वाभावाघलोपश्च
कीडूतिः।चान्निः।द्दान्निः।तिनुवेतिनेट्।दीप्तिः।निनुवेति।ण्निषेधाय हादानामिति वक्तव्य
त्वान्नेट्।निगरणान्तःनिक्तविति।निपाविन्निःउपस्निहितिः।ग्लाधंघाहान्वरिस्यो निःग्लानिः १०८
घ्रानिःहानिः।ज्वरत्वरःजूर्णिःतूर्णिः।ऋल्वादिभ्यःक्तिन्निष्ठावन्नेयःकीर्णिःगीर्णिः
लूनिःधूनिःसंपदादेःक्तिप्सावा।संपन्।विपन्।घनिपनापक्षेपन्निः।इत्यादि।आकृतिगणोऽयं।
भूनिःज्ञूनिस्मानिर्हतिःकीर्त्तियस्वापनेनिपात्याःश्रवतु निः।मव।मूनिःजूत्तिःघोष्विङ्वासानिःहि

हिसिवा।हितिथ क्तन।कीर्त्तिश्च त्रजयजोर्मीविक्षप।अम्पीमिावेक्ष पुस्पा तस्त्रियाम।वघा।इप्पा।भ्रजिकार्त
घासत्रूपविघिनातप जेक्कि न।भावेकिम।कमीड्रोन।।सीगायीसमजनिमदनिपदमननविदपुस्रशाउ॰म्हात्रि
णश्चा।एम्पश्च्य पुस्पा।मीशापी।स्त्रियाम।त्रजश्च्यपि वी।मा।वो।नेतिवाच्यम।समजन्नितस्पीसमश्चा।।निषघा।नि
मत्पा।मन्पा।।विघा।सुत्पा।त्रयइ्क्लिनिशप्पा।।मृत्पा।कुमथशवू।कुमोमा।वा।सैरास्पात्।क्षघ्र।स्त्रियाम।।शि
चा।ज्ञावेयक्।निडादेशश्चा।क्रिया।हित्पा।।पोगा।विभागा।क्लिन्नपि।कनिश्च।इक्षा।इ्बेश्चसेनिया।नोयम।पनिवय
।पनिसयी।म्छाया।।ग्रदाघा।दयश्च्वा।जाग र्वेयकारोवा।।गागयी।जागरा।।ग्रास्पा।वर्षीशनिकोवित्।ग्रश्च्यन्ययार
घन्पया।ग्रक्षो।नेश्चमा।वा।दौस्त्रिर्याग्रश्चप्रन्ययश्च्सात्।।नक्लिन।।विकाजी।ग्रदाटा।लोलूया।केडूया।कीडूसिपि।गु

१०१

रोश्च हलश्च। हलन्ताद्गुरुमतो धातोरः स्यात् स्त्रियां भावादौ न क्तिन् ईहा। ऊहा। गुरोः किम्। भक्तिः। हलः किम्। नानिः
निधायी सेटः निवासमा। नेनेहनः। त्राणिश्चराद्विश्चप्रचायश्चिश्च। षिद्भिदादिभ्योऽङ्। षितो भिदादिभ्यश्च ङः स्या
त् स्त्रियां भावादौ। जॄष् जरा। त्रपा। क्षमूष् क्षमा। क्षमः स्वप्स्य ज्ञात्रिथ भिदा। छिदा। क्षिपा। १।१
गुहा। गोधा। कारा। हारा। धारा। लेखा रेखा। कृपा। पीडा। भूषा। इत्यादि। चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च। ए
भ्यो धातुभ्योऽङ् स्यात् स्त्रियां भावादौ। वक्ष्यमाणयुचोऽपवादः। चिन्ता। पूजा। कथा। कुम्बा। चर्चा। आतश्चोपसर्गे।
आदन्तादुपपदे उपसर्गे स्योऽङ् स्यात् स्त्रियां भावादौ न क्तिन्। उपदा। प्रदा। श्रद्धा। अन्तर्द्धा। ण्यासश्रन्थो युच्। ण्यन्तान्तर्
सर्गेभ्यो धातुभ्यो युच् स्यात् स्त्रियां भावादौ। कारणा। आसना। श्रन्थना। घट्टिवन्दिविदिभ्यश्च। घट्टना। वन्दना। वेदना।

२ २

इच्छेयनि छायीन। अन्वेषणा। पर्येषा। पर्येषणा। परीः। हि ४। इषणा। ग्रेथनेन्यपि केचित्। योगाख्यायां ण्वुल्। वहुलं
। चानो ण्वुल् स्यात्। छिपीमा वादे। नोगाख्यायाम्। प्रच्छर्दिका। विमर्चिका। वहुलोक्तेः ४। शिवो ह्निथ वान्वर्थे नि
र्देशो ण्वुल्वा ४। आसिका। शायिका। इकश्तिपौ वा तुनिर्देशो। पावि धनन्दि ४। आहि ४। नवनि ४। सृनि ४। वान्वर्थे नि
र्देशो गुरोनिश। इव्यानिथ वर्णानिर्देशो वर्णोकार ४। अकारनथनादि कटनिपर ४। मन्त्रवर्णाद्यन्त्यैवा। मन्त्रवर्थी यथा। इ
र्यनाद्विप्य ४। याजि। अ्वानिथ इक छप्यादिप्य थ। द्रुबि ४। ननिश्चकि निश्। विभाषाख्यान प्रश्नयोनिञ्च। परिप्र
श्नेन्वाख्यानेव गम्यमानेयानोरिञ् स्यात्। छिपीमा वादे। वानन्ण्वुल्। वोके पैभा द्याप्रमन्येहपि। कीर्त्ति कारं कीर्त्ति
पीकर्ता। कर्ति वा। अकार्षीः। सर्वो कानि मा। कानि कामा। क्रियो। कन्यो। कनि वा। अकार्षमा इन्याधि। आक्रोशे न

मनिधानम्युपपदे धातोरनिटस्यानाम्॥ आक्रोशे स्त्रियामावादो न क्तिनादिष्ठयजीवनिमेश गमूयान्त्राम्बपाणिथ
ण्पुद्‍॥ धातोर्ण्वुटस्या जीवानदन्त्रखनपुंसके ह्यानम्॥ मानो। प्रमाणी। प्रयापणी प्रयापनम्॥ प्रकोपणम्॥ प्रकोपनी
वैषणम्॥ प्रेषनम्॥ प्रणिशनी। प्रवपनम्॥ करणाधिकरणयोश्च॥ करणेऽधिकरणे वार्थे धातोर्ण्वुटस्यात्॥
इध्मव्रश्चनः॥ राजन्॥ गोदोहनी॥ स्थाली॥ जयनी॥ ण्वुटि परे घ्यञ् जेधी भावो वास्यात्॥ प्रवयनम्॥ प्राजनी॥ दन्तिज्ञा
नम्॥ सिद्धपन्दयोर्निक्कोपिनोनिर्दिष्या दक्लिन्यपि॥ कोपः॥ दशनः॥ चिवुणिवोर्ल्युघुपधाद्दीर्घो वास्यात्॥ षीव
नी॥ सीवनम्॥ ष्ठेवनी॥ सेवनी॥ कुटादित्वान्न गुणः॥ स्फुरणम्॥ स्फुरनम्॥ कृन्त ण्पुटो वकुली॥ नाम्नोऽकृतो क्ष्माल
यः॥ राजा॥ क्वादनेवासः॥ पुंसि सिद्धायां वथ प्रायेण पुल्लिङ्गे करणेऽधिकरणे वा धातोः॥ कचिद् घटस्यात्॥ मेत्रायी

लिलोपः॥ क्त्वादेर्घञ्युपसर्गस्य॥ द्विवमनुपसर्गहीनस्य क्त्वादेर्ङीस्वः स्यान्॥ द्विपतो उत्तरः क्त्वादयः अच्छादीनि किम्॥
समुपक्षादः॥ समुपाविक्षादः॥ व्याकुर्घञ्नस्मिन्नत्राकरः॥ गोचरसंचरवहव्रजव्यजक्रमापणनिगमाश्च॥
एते निपात्याः॥ गावश्चरन्त्यस्मिन्निति गोचरः॥ संचरन्ति तेन संचरः इत्यादि॥ अवेतॄस्त्रोर्घञ्॥ अवतारः॥ अव
स्तारः॥ खनो घश्च॥ अस्मात् घञ् स्यात्॥ वा ह्रस्वः करणाधिकरणयोः पुंसि॥ आखानः॥ आखनः॥ डडरेकेक
वकावाच्याः॥ उक्ते ऽर्थे॥ आखः॥ आखरः॥ आखनिकः॥ आखनः॥ आखनिकवकः॥ ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्॥
ईषदादिषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषूपपदेषु धातोः खल् स्यात्॥ तयोरेव निकर्मणि भावे वार्थे॥ कृच्छ्रे दुःकरः कटो भव
ता॥ अकृच्छ्रे ईषत्करः सुकरो वा॥ निमिमीलियां॥ खलचोः॥ आत्वमावात्॥ ईषन्निमयः॥ दुःप्रमयः॥ सुविलयः॥ उपसर्गा

खलर्थप्रत्ययोऽर्थः। जप्त्रलीमतः। दुःखलीमतः। सुखलीमथा। कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः॥ ईषदादिषूपपदेषु कर्तृपूर्वाद्भु
वः कर्मपूर्वात्कृञः खल्प्रत्ययः स्यात्। कर्तृकर्मणोश्च्व्यर्थयोरिति वाच्यम्। ख्विल्वान्तुम। कृच्छ्रे। दुराढ्येन भूयते। दुराढ्य
भवं भवता। अकृच्छ्रे। ईषदाढ्यं भवम्। ईषदाढ्यंकरः। दुराढ्यंकरः। स्वाढ्यंकरः। स्वैचो भवता। आतो युच्॥ ईष
दादिषु आदन्तात् युच् स्यात्। खलोऽपवादः। ईषत्पानः सोमो भवता। दुष्पानः। सुपानः। ईषद्दानः दनिजानेवैति केचित्। शा 103
103 सियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो युज्वाच्यः। ईषच्छासनः। दुःशासनः। सुशासनः। ईषद्योधनः। दुर्योधनः। सुयोधनः। ईषद्दर्शनः।
सुदर्शनः। सुधर्षणः। ईषन्मर्षणः। दुर्मर्षणः॥ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः॥ अलंखल्वोरुपपद
योर्धातोः क्त्वा वा स्यात्। दो दद्घोः॥ अलं दत्वा। अलं दानेन। घुमास्थे ईत्वे। पीत्वा खलु। पानेन खलु। समानक

ऽकृपोः पूर्वकाले ॥ एककर्तृकयोर्धात्वोः पूर्वकाले क्त्वि नासौ नोः क्त्वास्यात् ॥ अनुदात्तोपदेशो निमलोपः ॥ वि
र्क्लुन्त्वा ॥ सौ नि ॥ हित्वमनेत्वमा ॥ नत्वा ॥ क्षुत्वा ॥ दगनि ॥ खनन्यादेः ॥ खुकः ॥ कित्वानि ॥ निन्यामि ॥ इमावः ॥ पूर्वविज्ञनि
लघना ॥ स्मृत्वा ॥ सूत्वा ॥ क्लिस्कंदस्पन्दोः ॥ एतयोर्लोपो नस्यात् ॥ क्लिपने ॥ स्कीत्वा ॥ स्पीत्वा ॥ उदित्वा ॥ नः ॥ स्कान्दित्वा
नन्कासेट् ॥ क्त्वा कित्नस्यात् ॥ यपित्वा ॥ लक्लिम् ॥ हित्वा ॥ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदः क्त्वा ॥ एभ्यःसेट्क्त्वा
कित्स्यात् ॥ मृडित्वा ॥ इत्यादि ॥ क्लिशः क्त्वो नि वेट् ॥ क्लिशित्वा ॥ क्लिष्ट्वा ॥ उदित्वा ॥ उषित्वा ॥ रुदविदमि ॥ कित्वी ॥ रु
दित्वा ॥ विदित्वा ॥ मुषित्वा ॥ गृहीत्वा ॥ नोपधात्थफान्ताद्वा ॥ नकारोपधात्थफान्ताद् नपनः सेट् क्त्वा कित्स्या द्वा ॥
श्रथित्वा ॥ योथित्वा ॥ गुफित्वा ॥ गुंफित्वा ॥ नोपधात्किम ॥ कोथित्वा ॥ रेफित्वा ॥ वंचिलुंचृतश्च ॥ एभ्यः सेट्क्त्वा

किद्यास्मात्। ववित्वा। वेवित्वा। स्तुवित्वा। स्तुवित्वा। अनित्वा। अर्वित्वा। न्युजिमुनिह्नये ४। काश्यपस्या। एष्व
सेट् क्त्वा किंस्मात्। मृषित्वा। मृषित्वा। नर्जित्वा। मर्षित्वा। कृशित्वा। काशित्वा। नलोप्युपधादिति वा किंत्वम्। घु
104 नित्वा। घोनित्वा। लिखित्वा। लेखित्वा। वुपधात्किम। वर्तित्वा। रलश्च किम्। सेवित्वा। हलादेश्च किम्। एजित्वा। १०४
सेकिमामुक्त्वा। वसति क्षुधोरिट् क्षुधित्वा। श्रवित्वा। गतौ तुश्च क्त्वा। लुमित्वा। लोमित्वा। विभो। हनेतु। लुब्धा
म। ब्रस्वोश्च क्के श्रम्यापि परस्य क्त्वा ३ पिनर्मीस्यात्। जनीत्वा। जनित्वा। ब्रश्चित्वा। कमश्च क्के। कमउपधा या
वादाश्च स्मात्। क्लादौ क्त्वि परो क्रीत्वा। केन्त्वा। कलि किम्। कमित्वा। पूर्णस्वेनि वेटा। पवित्वा। पूत्वा। जान्त न
शीविभाषा। जकारान्तानां नशे स्वत्वा। घ्नपो वा किंस्मात्। मक्त्वा। मक्त्वा। पक्त्वा। नक्त्वा। नष्ट्वा। नंष्ट्वा। क्लादे

वातृपम। नेडश्रै। गित्वा। गनमसनेट्स्यात्वी। खात्वा। खनित्वा। घनिस्यतात्वी। दित्वा। मित्वा। छित्वा। दयातेर्हिंश। दित्वा।
ऽहातेरखक्ति। स्यपाहिश्च स्यान्ता। क्ति। हित्वा। हाऽस्तु। हात्वा। स्त्र ते जम्बिश्च जग्ध्वा। समासेनञ्पूर्वे नक्त्वोल्य
प्राग्वनञ्पूर्वे समासेमासे नित्क्वाल्यवादेशश्च स्यान्त। नुक। प्रकर्षेण कृत्वा। प्रकृत्य। स्त्र नमिकिम। स्त्र हत्वा
पित्वात्तु कारसिद्धिः। पन्वेत्तु किंचकर्तृवावोप कादेशस्यासिद्धस्यान्त। कोस्पीदम्प। स्त्र वयऽपदार्योदिन्वे
देशस्यासिद्धत्वात्तपत्वी। स्त्रधान्या। प्रेन्य। सूत्रोक्तानील्यपिपरेवा। नुनासिकलोपश्च स्यान्त। व्यवस्थित विकल्प
त्वात्तावननितिनोन्या। घनिटाम। प्रवत्यास्त्रागत्या। स्त्रागम्या। प्रणत्या। प्रणम्य। प्रहत्या। विहत्य। स्त्रमेल्यपि
भावोनेतिकेविना। ऽद्दधा। स्त्र दोजम्बिल्यपिपाकिनि। प्रजग्ध्या। स्त्र नरोगत्वान्वागेव जग्ध्वा। सिद्धःपिल्यवुक्तेरा

पवेहित्वा।स्वा।म्वाल्सडेल्वदार्वि१।अमुउनु ऊटविचयोल्सापि।नस्सुनिति।नल्पपि।ल्पपिपरेघुमास्येनान्द
नस्मान।लिवायाघ्रराय।घ्रखन्या।घ्रस्वाय।मिना।दिमिनोल्येनीन्मार्वी।प्रमाय।निमाय।उपदाय।दि
पापालाय नेदृ।विलाय।।दिलीय।।लिलोपदृ।उन्नार्य।विवार्य।ल्पापिलघुपूर्धान।लघुपूर्धान्मरस्यो।
नमादेशदृस्मान।ल्पपि।विगणय्य।श्चापोवा।श्वाप२पनस्यणेनयादेयोवास्मान।श्चापय्य।श्चाप्य।।ञियः
ञियोल्पपिदीर्घन्त्वेवास्मान।वेल्येके।प्रजीय।उपजीय।मपनेनिदन्पतनस्यामामेऽऽ१कानोन्नादेशदृस्मान्
वा।ल्पपि।श्वपमिन्य।अपमाय।ल्पपिवा।वेन्नोल्पपिसंप्रसारणीस्मान।प्रवाय।प्वरवा।घाइन्पेतस्पनया।प्रश्ना
या।प्परवा।वेन्नोल्पपिप्राग्वन।उपन्माय।विमाबापनेदृपनेर्व्येओवासंप्रसारणीस्मान।ल्पपि।नुकेवा।विन्ना

६

धनन्वा हलइति दीर्घः ४ । पनिवाप्य । परिव्याय । समो वेन्यो के । संवीय । संव्याय । नञ्कोले ९ पिञ्चा के विना म्ना
स्पीव्या ह्वायत्वपि ति । नेवेर्स्म ल्पहसन्ति । प्रामी ञ्झेणमुलयावो ९ पूर्वे काले णमुल् स्यान्न यो न ४
पुन्मेन्कोरव । नित्यवीप्सयो ४ स्मारं स्मारं नमति । यिवी । स्मृत्वा स्मृत्वा वा । पायं पायं । भोजं भोजं । विपु
लोद्राघे हमिनि विदार्घे ४ गामं गामं । गमं गमं । विनाभो विणमुलो नित्यं तुम्वा । लंभं लंभं । लाभं लाभं । प्र
दौत्रु । प्रलंभं प्रलंभं । णपन्न आयुक्त जागरमा जागरमा । जागारं जागारं इत्यादि ज्ञेयं । कर्मण्यप्याक्रोशे कृ
मस्थमुञ् । कर्मण्युपपदे कृञ् स्तम्भमुञ् स्यात् । चाक्रोशे गम्ये । चोरंकारमाक्रोशति । चोरशब्दात् सीत्याक्रो
शनीयार्थे ४ स्वादुमि णमुलं स्वाद्वर्थे पुक्त णमुल स्यात् । २० ककर्त्तृकयो ४ पूर्वकाले स्वादुंकारं भुंक्ते ।

मोनत्वमविकाराद्यी।स्वादूंकृत्वा भुंक्ते।स्वादुंकारं भुंक्ते।संपन्नंकारं।लवणंकारं।वा सरूपेण क्त्वापि।स्वा-
दूकृत्वा।अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत्।१।एषूपपदेषु कृञो णमुल्स्यात्।सिद्धोऽप्रयोगो यस्य
१०६ तथा सति।कृञो व्यर्थत्वोपयोगान्न हि इत्यर्थः।अन्यथाकारम्।एवंकारं कथंकारम्।भुंक्ते इत्थं भुंक्ते
इत्यर्थः।सिद्धे किम्।अन्यथा कृत्वा शिरो भुंक्ते।क्वापि।एवं कृत्वा।यावति विंदजीवोः।४।यावत्युपप- १६
दे आभ्यां णमुल्।विंदलाभे।यावद्वेदं भुंक्ते।यावज्जीवमधीते।निमूलसमूलयोः कषः।५।एतयोः क-
र्मणोः कषेर्णमुल्स्यात्।कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः।६।कषादिषु मध्ये यस्मात् णमुलुक्तः स एवा-
नुप्रयोक्तव्यः।चानुसिद्धेर्विधिसिद्धेऽपि नियमार्थमुक्तं।निमूलकाषं कषति।समूलकाषं कषति।समूलके

७

कलनीत्यर्थः ॥ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ॥ एषु कर्मसु पिषेर्णमुल्स्यात् ॥ शुष्कपेषं पिनष्टि ॥ शुष्कं
पिनष्टीत्यर्थः ॥ इत्यादि ॥ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ॥ एषु कर्मसु क्रमेण हन्त्यादेर्णमुल्स्या
त् ॥ समूलघातं हन्ति ॥ अकृतकारं करोति ॥ जीवग्राहं गृह्णाति ॥ जीवं गृह्णातीत्यर्थः ॥ करणे हनः ॥
करणे उपपदे हन्तेर्णमुल्स्यात् ॥ पादघातं हन्ति ॥ पादेन हन्तीत्यर्थः ॥ स्नेहने पिषः ॥ स्नेहने
पनं तस्मिन्करणे पिषेर्णमुल्स्यात् ॥ तैलपेषं पिनष्टि ॥ तैलेन पिनष्टीत्यर्थः ॥ हस्ते वर्त्तिग्रहोः ॥
हस्तार्थे करणे आभ्यां णमुल्स्यात् ॥ हस्तवर्त्तं वर्त्तयति ॥ करवर्त्तं ॥ हस्तग्राहं गृह्णाति ॥ करग्राहं ॥ क
रेण गृह्णातीत्यर्थः ॥ स्वे पुषः ॥ स्ववाचिनि करणे पुषेर्णमुल्स्यात् ॥ स्वपोषं पुष्णाति ॥ स्वेन पुष्णा

णोऽनर्थकः पर्यायाणां विशेषणानां वा ग्रहणमिष्यते। धनपोषं गोपोषं। इत्यादौ न द्विशेषणानां स्वप
र्यायविशेषणयोश्च पर्यायस्यैव राजादौ मत्स्यादौ न द्विशेषणयोश्च। उपमाने कर्मणि च॥ येन कर्म कर्त्री
वा उपमीयते तेन वोपपदे णमुल् स्यात्। घृतनिधायं निहितः। घृतमिव निहित इत्यर्थः। अजकनाशं नष्टः
अजक इव नष्ट इत्यर्थः। उपदेशस्तृतीयायाम्। तृतीयान्तेनोपपदादुपदेशेर्णमुल् स्यात्। मूलकोप १७
देशं मूलकेनोपदेशं भुंक्ते। तृतीयाप्रभृतीनि वा समासः॥ अपादाने परीप्सायाम्॥ त्वरायां गम्य
मानायामपादानोपपदाद्धातोर्णमुल् स्यात्। कषादिष्विव्यामावाधच्चाविच्यनुप्रयोगो न। शय्योत्था
यं धावति शय्याया उत्थाय धावतीत्यर्थः। द्वितीयायां वा। द्वितीयायामुपपदे च

नाणि मुलस्यान्।। त्ववायी। महिम्यादेशुध्यन्त्रोपलाईदि त्वाप्तुच्यन्त्रत्स्यर्थअग्रव्यये पथा।। निर्वेनाख्यनेव
कृमस्स्काण मुलो।। ग्र अये ३ पपदेकम एनो स्वथग्वापियस्यो। वैदपियस्यनावैरकयेने। उत्रैरकत्यठवै
कारिश्रापिर्यबूलो। नावैरकत्यनावैरकारोपिर्यबूतो। इत्याद्यर्थकतोऽस्मा ४।। दृश्यावमेतदुक्तम्।। इ
तिकदत्तघक्रिया।। वैदिकशद्देष्वप्येवघाक्रिया।। यए वैदिकास्त एव लौकिकाश्च इति न्याया
त्।। कवित्प्रयोगवशादन्यथात्वं प्रकल्प्यान्तस्थादानमपरेऽत्र व्यादमध्यस्य एङ्प्रकृतस्माददितिपरे
ननु वकारयकारपरेऽत्र निरुपपद्यन्तोऽत्र बरैसुरानोऽत्र रवसूनतैनैरपादैकिम्।। यएतेरवैयैनिग्व
परेकिमानेऽत्र वदरायस्मापी।त्र व्यादवघादवकमुतवनायमवैन्धवस्युप्सुवा। एष्वसप्तस्तुव्यापारप

निपङ्प्रकल्पावसुमिन्नोऽत्रव्यानः। मित्रमहोऽत्रवघानः। मासिवासोऽत्रवकमुथनेनोऽत्रव्रताशयानता
१०८ नोऽत्रयं मनिश्चनेनोऽत्रवन्नुथ। कुमिकासोऽत्रवस्यवर्तयमुक्षुनशाउनश्चाद्य घङन्नोऽनिमर प्रकल्याप
शुषिाउनोऽत्रत्रविन्नी। आओऽनुनायिकरछन्दसि। आऽनुनासिकारेशो विप्रकल्पा। त्र त्रश्रीत्र
पश। नद्याःपतिपुत्रपद्मपार परदपयस्योजेषु। जष्टीविसर्गस्य सश्च्यानः। वौहुलीकेद्दसि। पन्याद्दै १०८
परा। बाव स्यनिश्चा दिवस्पुत्रः। इत्यादिस्य छेदसि बहुली। स्य इत्यस्य सो लोपश्च्यानः। बहुलम। पज
स्यवाजी। बहुलेकिम्। यत्रस्या। निपतेनात्र यस्मयाहो निछन्दसि। भाजायामुपदसीहो। त्रयोमयम।
नवाहानीविकल्पेनेषडुवजीनत्रुपुष्पेमानत्रुवेविषुव पयपास्वर्गोलोकश्चासुवर्गोवा। त्रीवकी। त्रियीव

९ ९

वकौ। वरेण्पी वरेणि यौ। छन्दस्युभयथा। नूसुधियोर्दीर्णस्मा नोर्दि पङ्कवौ वा। वने पुा विन्त्री वर्न्नीवि

भुवै वा। सुधि यो न क्व वमग्नेश्च। सुव्यो वा। अवाक्से नसु कौ। अकारा क्के सोरसुगा गमश्चस्या न। छन्दसि। क

लणा शठ वहुलं छन्दसि। स्वतोमिस ऐस वहुलं स्यान। छन्दसि। पत्नी। दवेनिक्ष मंत्रे घ्वा अदेना। मन

स्वाङि निटानस्मि न्परेश्वान्मनश हस्यादेलीं पक्ष्मान भीवेष्णु। मा ना देवेभ्यश्च। अन्यत्रा पिलोपश्च लन्म

समशायनतासु पौस्नु लुक। पूर्वसवर्णौ छेया ड घा या जा लथ सुपामे नेश्चा देघाश्च सुश्च। कजवश्च सुपीथ्या

पीयानहनि। घा प्रे गम स्वसुश्च वाईैयमिनाव मेणाति घा पे सुक। नङिसिवुष्योनिटि। क्रोपोनामतो। मन्या

हनि। घे। पे पूर्वसवर्णश्च सर्वा यात्र मस्वायोर्दनिघापे। अवकाल सर्वनिवाना। वा लपाना। घाहन नक्ष्वतनि। वृ

त्वा । त्वं न । त्वा न । त्वस्मे इन्द्रा । दृढस्य नी नमुष्मे वाङ्वीयवर्ष । वयी पूर्वामिति निपाते जय ठसे । पूर्वे वयात्स्यालव

रुक्षी दसन्वान् । यत्नुणच नुणेति निपाते यानामा पृथिव्याम । नामोदृति निपाते । ओंग्नन्व नुस्वापदआमसि । त्व नु धुन

इति निपाते घा । सा चुया । साघिति निपाते यान । वर्मलायनेन । वसन्त्रति निपाते । त्वा ला मुया मा सुपामवत्रि धु

निदक्षिणा पाञ्च दक्षिणाठ । दक्षिणायामिति निपाते । निडी निडेन बनीव पूपायन जनु । नन्द्रना । निपाते १·८

इ या नूडि याव । द्रकारस्व । उर्बिया । दर्बिया । उत्तुणा । दात्तुणेति निपाते । इयावा युञ्जे विया युञ्जे विणेति निपाते

ऋजाव । वस्मा । वया । नौ । वनमिति निपाते । इकारशब्दा । तयाव स्वेवा । स्वघवा हा । पवाहुनेति निपाते । स्व

ध्न्या । स्वप्ने नेति निपाते । नावद्या नावाशति निपाते । अस्मसुपोदश्च पादपूरणे । एवा ददत्वश्च पादपूरणे । स्व

११

१०

भावमानिश्चमीश्यामि घुवयोश्च। नपापमेयनाम्पशा। किंन्नोद्दुहुहर्षसोऽन्नमोमश। मिमाद्देयस्या मयमनस्या
वेयन्तन्त्रीअवबाजमिनिषा। नेद्याभा। बान्। द्वीस्थाने। बाल्स्यानु। बारयद्याहा। बारयद्यमिनिषान्ने। यक्रंबेन
मितिवा। पतमियमीमान्वबोघछजया। न्वैनीषियामेषानस्पतानजोन्मेयमवद्दुववुनस्पतानगमप
नाना। गमयनेनिषाघे। लपा। नपा। ननथनाश्वा। एनेवनस्या देर्ष्क्षिप्पुक्षनपूरव्लो नर्मौर्वलक्षननप्राह
वानना। ननन्तुहुनना। यदिथना। ग्रणुन्। यत्रा। तुदुना। इनिषाश्रा। इद वो। मसि। मसश हेम्बनइका। क्ष्स्यान्
तुस्वादायपामसि। दापयावशनिषाप्ने स्नान्वा। इयश्वा। एतेनिपात्पाश्च स्नीन्वीमला। दिवा। स्नात्वे नि
षा। प्ने। पा। केंदसिशापनपि। हुस्नश्चसायवृ। प्वपितस्पान्। हो। केंदसि। हयहोर्नस्केंद नि। षमापा। ह

कत्मर्थे ४।१ आमनार। जहोतेर्नित्यर्थे ३। अन्यत्र बहुलम्। भावादिविकरणानीच्छन्दसि बहुले अन्यत्र स्वा
त्। भेदश्चित्रिनि नि ह नि घ्राध्मेपुनति। म्रियन इत्यर्थे ४। बहुलोक्ति ४। अध्यै विधि व्यानि वा ना धांसु दि
इष्यश्च हणालिंग नशाणीकाल हल्लव न्वरकत्वे गोव व्यत्ययामिच्छति। शाखेच्छदेवीमोः पिवा ११
ख्यानि। बहुलकेन। उपग्रहः ४। परस्मैपदात्मनेपदे न रः ४। वषम पुत्तुषादि ४। लिङ्गा। सिद्ध्यन्ता। अत्र
शा लिङ। वातोरङ्। प्रत्ययः ४। स्यात्। छन्दसि। पा सुदि हिको ह्याता तो ३ यः ४। स्य योगे योग मेमा। दक्ष उम
वो वो मा दिदयत्वकोपि तु ल्पमा। दशोयीच्छेदस्पु नयथा। वान्ववि का नो क ४। सर्वाः पि प्रत्यय थमा र्वे चा
तु का द्विधातुकसी इत्यस्यात्। छन्दसि। वर्द्धयन्तु वर्द्धयात्विल्यर्थे। आर्द्धधातुकत्वान्निलोपः ४। विसर्गे वे र। सु

११ ११

चिते। लिङर्थे लेट्। लिङर्थे दित्या दोषा। नो लेट्प्रत्ययः स्मात। छन्दसि उवले जेट्। वानोऽमि ब्रह्मयावद्रु
ऽस्या। लेटि। इतस्व लोपः पत्र स्मे परस्मै लेट च्रिडा मितो लोपो स्मात्। पतस्मै पदेषु चेदाडाटो। लेटस्त्रे ट्स्र
टपनावात्मो ग्रहः। नाव पितो। ओनि ता। नारि पत। मन्दिषत। पक्रे पता। निविघुत। उदाचैत्या वयानि। मतउत्रम
स्याल टउत्र मम स कारस्य वा लोपः स्मात्र पके करवाचथस न्वैवात्रा। नापलटा पकारस्य पस्मात्। मेत्रये ने। विवि
नाम स्यो दट प्रच्चैन। मीत्रयाते॥ ॥वेनोऽन्यत्र। स्त्रानरतबर्यविना लेटा। पकारस्य पस्मात्। पयूनामी सेग स्याते।
पनटवामा। एतोऽन्यत्र। किमपि त्रयेनोऽउपसर्वा धा रे कयाश्व। यणवे चे स्त्रायि कापाविलेट स्मात्। स्त्रह मेवप सूत
मामानि जि स्याप्रिस्यो नतरके पतामा। कृपृह जुहिस्य रक्षे दसि। पस्य श्ल नडवात्स्यात। कैदसिग्र करता स्त्रदनं

१२ नुरुन्ता।सुर।सु।पक्ष।हम्पस्कंदसि।एम्योहर्द्दिम्याकंदसि।सुचीकवी।शणुची।गिर४।अन्येषामपिदृश्यतइति
दीर्घः।घृणि।ऊत्तुणस्फुषि।अपाद्।वि।वाछंदसि।हि।पिहास्याकृन्दसि।अडित।श्वा।पित्वना।डितो।दीर्घश्चस्यान
रा।[illegible]।प[illegible]।सुयोधि।पित्वा।नाव।प्राणी।दि।या।हगामनऊनः।किकिणा।लिङ्।आदृत्वा।हनणो।वा।ऊमादरव
च।मान्त्रश्वदसि।नाव।लिङ्व।द्विन्या।दि।पपि४।किन्वी।मछट।हनाम।गुणवाधा।येमा।वहुलीछन्दसानुनो।
गुरि४।ऊम्यि४।ऊ।[illegible]।नुमर्थमसे।नससेनससेअसेक।मकसन[illegible]।घोकच्येनृ।सवो।सच्येन।व
नूश्वन४।धातारे।नेघम्या।स्पृ४।[illegible]।नुमनो।छे।दृने।नाग।स्वाना।वामवोऽस्मे।[illegible]।न।जीवसे
[illegible]त्वकमना।[illegible]।पसे।[illegible]।[illegible]न।चवरव्या।कव्या।कव्या।अरुवव्या।सच्या।सव्येन।पिवका।मादव्या।नवे
१२

१२

धानेयेऽध्यमुवेनालवेता। कर्त्रे दो। कर्तुमित्यर्थः॥ प्रायारोहिष्मोव्यथिष्मो एते निपात्याः॥ प्रया-

तुं रोढुमव्यथितुमित्यर्थः॥ दृशे विख्ये च। निपात्यो। द्रष्टुं विख्यातुमित्यर्थः॥ ईश्वरे तोसुनकसु-

नौ॥ ईश्वरे उपपदे धातोस्तोसुन्कसुनौ स्तः॥ तुमर्थे। ईश्वरो विचलितोः॥ ईश्वरो विलिखः॥ कृत्यार्थे तवैकेन्-

केन्यत्वनः॥ धातोरेते स्युः॥ कृत्यानामर्थे। भावकर्मणोः॥ नवै। अन्वेतवै। केन। अवगाहे। कृष्णादि-

नःपः॥ वनकाः। अन्वेम। सृपितृदोः कसुन्। आ... ईकसुन् स्यात्। भावलक्षणे तुमर्थे। पुरा क्रूरस्य वि-

सृपो विसृपः। पुरा गन्त्यश्रा... ॥ कृत्यसनन्त्वा ण्वुल्। अन्तोलोपः॥ तस्य स्वरे ... निस्या निन्वा भावीन

१२ ...मिमि पूर्वे सुधान्नेष्मा ... निर्ऽकान्तस्य आदान्तता। विकार्यिङ्॥ ... किनि कृत्ने ... लीके

१२

चउ।द [illegible] मसिकमाईलिवन्मुपवालोपठ।कालोक [illegible] ति लोपक्षरप वा।लोपक्ष्याम्का।तिवन्वानाम

[illegible] नागम्बिष्टम्गिश्च स्यादिद्धयोगमनुसृत्य व्याख्यास्यी॥ ४॥ इति वैदिकाध्याय [illegible]॥ ४॥

[illegible] सर्वेश [illegible] शब्दा नश्च मन्त्रेष्णुशासि [illegible] वालव्युमन्त्रषे [illegible] नि श्मि क्रियो काय थामति [illegible]

[illegible] श्रुतेति पीवा मवेड्ढ काशिकान्विसद्ध [illegible] मोवक्ष्या सव कोरधिया विरम॥ १॥ अथ निमु [illegible] १२

[illegible] भावदे [illegible] कद्म [illegible] ननायो॥ विहुलस्वान्मदाय ४ मवकिन्नमिवलक्ष्मा ४ सेवलेयम्य दा

[illegible] जिनी॥ मीमांसायुगला [illegible] स्मा [illegible] नुकथा [illegible] संदाय [illegible]

[illegible] मनसीत [illegible] वनामा।शष्टाधानांविध्यमसा हु [illegible] वामिना [illegible] क्रम [illegible]

१२

१२